" दीप हैं जलते रहेंगे, हम प्रलय की आँधियों से अन्त तक लड़ते रहेंगे।"

पूर्वोत्तर भारत शिलचर (असम) से प्रकाशित लोकप्रिय हिन्दी दैनिक

प्रेरणा भारती

प्रेरणा भारती NEWS NETWORK

www.preranabharati.com Email: preranabharati@gmail.com

हरिदर्शन HARIDARSHAN

हमारे यहाँ धार्मिक पुस्तक के साथ पूजा-पाठ, हवन-पूजन की सामग्री उचित मूल्य पर प्राप्त करें

मेहरपुर, शिलचर, असम-788015
मो.नं. 9435213512,

Postal Registration No.RN-SC-36/2023-25 (RNI No.) ASSHIN/2016/69550 अंक - 143 वर्ष -11 ज्येष्ठ पूर्णिमा 2082 रविवार (31 मई 2026) मूल्य-5 रुपये, पृष्ठ-6, preranabharati@gmail.com

असम में यूसीसी लागू होने की राह साफ, सामाजिक और कानूनी व्यवस्था में बड़े बदलाव की संभावना

गुवाहाटी, ३० मई, (हि.स.)। असम विधानसभा द्वारा समान नागरिक संहिता (यूसीसी) असम विधेयक-२०२६ पारित किए जाने के बाद राज्य में इसके लागू होने को लेकर व्यापक चर्चा शुरू हो गई है। संवैधानिक स्वीकृति मिलने के बाद यह कानून राज्य की नागरिक व्यवस्था, पारिवारिक कानूनों और प्रशासनिक ढांचे में महत्वपूर्ण बदलाव ला सकता है।प्रस्तावित कानून को असम में पिछले कई दशकों के सबसे महत्वपूर्ण नागरिक कानून सुधारों में से एक माना जा रहा है। सरकार और इसके समर्थकों का कहना है कि यूसीसी से लैंगिक न्याय को बढावा मिलेगा, कानूनी पारदर्शिता बढेगी और विवाह,

तलाक तथा पारिवारिक मामलों के लिए एक समान नागरिक ढांचा स्थापित होगा।विधेयक का सबसे बडा प्रभाव महिलाओं के अधिकारों और कानूनी सुरक्षा पर पडने की संभावना जताई जा रही है। सरकार का तर्क है कि एकपत्नी प्रथा लागू होने तथा विवाह और तलाक के अनिवार्य पंजीकरण से वैवाहिक विवाद, परित्याग, उत्तराधिकार और भरण-पोषण जैसे मामलों में महिलाओं को अधिक कानूनी सुरक्षा मिलेगी। इसके अलावा आधिकारिक दस्तावेजीकरण से अपंजीकृत विवाहों और उनसे जुडे. शोषण की घटनाओं में कमी आने की उम्मीद है।

विधेयक में लिव-इन संबंधों के अनिवार्य पंजीकरण का भी प्रावधान किया गया है। समर्थकों का कहना है कि इससे ऐसे संबंधों में रहने वाली महिलाओं और बच्चों के अधिकारों की बेहतर सुरक्षा सुनिश्चित होगी। हालांकि आलोचकों ने इसे निजता के अधिकार और व्यक्तिगत संबंधों में सरकारी हस्तक्षेप से जोडते हुए चिंता व्यक्त की है।कानून लागू होने के बाद राज्य सरकार को विवाह, तलाक और लिव-इन संबंधों के पंजीकरण के लिए जिला और ग्रामीण स्तर पर विशेष पंजीकरण प्रणाली विकसित करनी होगी। इसके साथ ही डिजिटल डेटाबेस, सत्यापन तंत्र और शिकायत निवारण व्यवस्था स्थापित करने की आवश्यकता पडेगी। विशेषज्ञों का मानना है कि इससे प्रशासनिक कार्यप्रणाली में व्यापक बदलाव देखने को मिल सकते हैं।यूसीसी विधेयक समान नागरिक कानून और सांस्कृतिक विविधता के संरक्षण के बीच संतुलन को लेकर नई कानूनी और संवैधानिक बहस को जन्म दे सकता है। हालांकि राज्य सरकार ने अनुसूचित जनजातियों और आदिवासी समुदायों को कानून के दायरे से बाहर रखा है, फिर भी पारंपरिक कानूनों और छूट की सीमा को लेकर चर्चा जारी रहने की संभावना जताई जा रही है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि असम का यह कदम देशभर में समान नागरिक संहिता को लेकर चल रही बहस को नई दिशा दे सकता है। आगामी चुनावों के मद्देनजर यह मुद्दा राजनीतिक और वैचारिक विमर्श

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

नशामुक्त शिलचर के दावों के बीच शहर के कई हिस्सों में जारी मादक पदार्थों का सेवन, उठे कई सवाल

प्रेरणा ब्यूरो शिलचर, ३० मई। केंद्र और राज्य सरकार द्वारा 'नशामुक्त भारत' तथा 'नशामुक्त शिलचर' अभियान को सफल बनाने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। इसके बावजूद शहर के कुछ संवेदनशील क्षेत्रों में मादक पदार्थों के सेवन और अवैध कारोबार की गतिविधियां थमने का नाम नहीं ले रही हैं। विशेष रूप से शिलचर सदर थाना के पीछे स्थित दीवार के आसपास, फाटक बाजार तथा आसपास के बाजार परिसर की इमारतों की छतों पर शाम ढलते ही खुलेआम नशा किए जाने की तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आ रहे हैं।

स्थानीय लोगों का कहना है कि पुलिस समय-समय पर छापेमारी कर नशीले पदार्थ बरामद करती है और आरोपियों को गिरफ्तार भी करती है, लेकिन कुछ समय बाद वही गतिविधियां फिर शुरू हो जाती हैं। आरोप है कि मादक पदार्थों की अवैध बिक्री और सेवन का सीधा

संबंध चोरी, छिनताई तथा अन्य आपराधिक घटनाओं से भी जुडा हुआ है।जानकारी के अनुसार, पुलिस द्वारा पकडे.गए कई नशा-आश्रित व्यक्तियों को नशामुक्ति एवं पुनर्वास केंद्रों में भेजा जाता है। हालांकि, स्थानीय नागरिकों का दावा है कि उपचार के बाद भी कई लोग दोबारा नशे की गिरफ्त में आ जाते हैं और अपराध की दुनिया में लौट जाते हैं। इससे पुनर्वास केंद्रों की प्रभावशीलता और उपचार के बाद समाज में पुनर्स्थापन की व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न खडे. हो रहे हैं।सामाजिक संगठनों, जागरूक नागरिकों और व्यापारिक समुदाय का मानना है कि केवल नशामुक्ति केंद्रों की संख्या बढाने से समस्या का समाधान नहीं होगा। उनका कहना है कि नशे के खिलाफ अभियान को प्रभावी बनाने के लिए मादक पदार्थों की आपूर्ति श्रृंखला को पूरी तरह तोडना, नियमित रात्रि गश्त बढाना, संवेदनशील क्षेत्रों में निगरानी मजबूत करना तथा पुनर्वास केंद्रों की कार्यप्रणाली का समय-समय पर मूल्यांकन करना आवश्यक है।शहर के नागरिकों ने प्रशासन से मांग की है कि नशे के बढते खतरे पर अंकुश लगाने के लिए कठोर और दीर्घकालिक रणनीति अपनाई जाए, ताकि युवाओं को नशे की गिरफ्त से बचाया जा सके और शिलचर को वास्तव में नशामुक्त बनाया जा सके।

डिब्रूगढ. में अफ्रीकन स्वाइन फीवर का पता चला; एडमिनिस्ट्रेशन ने इन्फेक्टेड और सर्विलांस जोन घोषित किए

डिब्रूगढ: (अर्णव शर्मा) ३० मई : लाहोवाल डेवलपमेंट ब्लॉक के रोमाई कोडीइबुम गांव में एक सुअर फार्म में अफ्रीकन स्वाइन फीवर (ASF) का पता चलने के बाद डिब्रूगढ. डिस्ट्रिक्ट एडमिनिस्ट्रेशन ने हाई अलर्ट जारी कर दिया है। डिस्ट्रिक्ट एनिमल हस्बैंड्री और वेटेरिनरी डिपार्टमेंट की रिपोर्ट के आधार पर इस बीमारी के फैलने की पुष्टि हुई, जिसके बाद अधिकारियों ने बीमारी को और फैलने से रोकने के लिए तुरंत रोकथाम के उपाय लागू किए।एडिशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट-कम-उएज, डिस्ट्रिक्ट डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी, डिब्रूगढ, जयंत चरण, खअड द्वारा जारी एक ऑफिशियल ऑर्डर के अनुसार, रोमाई कोडीइबुम में श्रीमल ज्योति दत्ता के फार्म एरिया को इस बीमारी के फैलने का सेंटर माना गया है।जानवरों में फैलने वाली और छूत की बीमारियों की रोकथाम और कंट्रोल एक्ट, २००९ के नियमों के मुताबिक, एपिसेंटर के १ किलोमीटर के दायरे में आने वाले सभी गांवों और इलाकों को ङ्गइन्फेक्टेड जोनङ्घ घोषित किया गया है, जबकि १० किलोमीटर के दायरे में आने वाले इलाकों को ङ्गसर्विलांस जोनङ्घ बनाया गया है।जिला प्रशासन ने इन्फेक्टेड जोन में तुरंत कई पाबंदियां लगा दी हैं। इनमें शामिल हैं: जिंदा सूअर, सूअर का चारा, सूअर का मांस और सूअर के मांस से बने प्रोडक्ट्स के इन्फेक्टेड जोन में आने-जाने पर पूरी तरह रोक; प्रभावित इलाके से सूअरों के ट्रांसपोर्टेशन पर रोक; जानवरों के बाजार, मेले, एग्जीबिशन और सूअरों से जुडे.जमावडे.पर रोक; इन्फेक्टेड या संदिग्ध सूअरों को पब्लिक जगहों, बाजारों या एग्जीबिशन में लाने पर रोक; बीमारी को रोकने के लिए, अगर जानवरों के डॉक्टर जरूरी समझें, तो इन्फेक्टेड सूअरों को मरवाना जरूरी है; बायोसिक्योरिटी नियमों के हिसाब से लाशों को गहराई में दबाकर सख्त डिस्पोजल

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

हाइलाकांदी कांग्रेस में गुटीय कलह खुलकर सामने आई, पर्यवेक्षक अमीनुल हक लस्कर का विरोध

प्रीतम दास, हाइलाकांदी, ३० मई: विधानसभा चुनाव समाप्त होने के बाद भी हाइलाकांदी जिला कांग्रेस में आंतरिक मतभेद और गुटीय संघर्ष थमता नजर नहीं आ रहा है। शनिवार को जिला कांग्रेस कार्यालय में आयोजित चुनावी समीक्षा बैठक के दौरान पाटी कार्यकर्ताओं और नेताओं के बीच असंतोष खुलकर सामने आ गया, जिससे बैठक का माहौल तनावपूर्ण हो गया।जानकारी के अनुसार, हाइलाकांदी विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस की चुनावी हार के कारणों की समीक्षा के लिए असम प्रदेश कांग्रेस कमेटी (एपीसीसी) द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षक

तथा सोनाई के विधायक हाइलाकांदी कांग्रेस भवन पहुंचे थे। उनके साथ एपीसीसी सचिव भी मौजूद थे। बैठक में चुनावी परिणाम, संगठनात्मक कमजोरियों और भविष्य की रणनीति पर चर्चा की जा रही थी।इसी दौरान कुछ कार्यकर्ताओं ने अमीनुल हक लस्कर पर भाजपा के पक्ष में कार्य करने का आरोप लगाते हुए विरोध जताया। विरोध कर रहे कार्यकर्ताओं का कहना था कि पाटी हितों के विपरीत मानी जा रही कुछ गतिविधियों को लेकर लंबे समय से संगठन के भीतर असंतोष बना हुआ है। देखते ही देखते माहौल गर्म हो गया और

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

निर्वाचन निधि घोटाले में पदोवनत सर्किल आफिसर से सीएम विजिलेंस की पूछताछ

गुवाहाटी, ३० मई, (हि.स.)। लोकसभा चुनाव २०२४ के लिए आवंटित सरकारी धन के कथित गबन के मामले में पदोवनत सर्किल आफिसर संगीता बरठाकुर से मुख्यमंत्री के विशेष सतर्कता प्रकोष्ठ (सीएम विजिलेंस) ने शनिवार को पूछताछ की।आरोप है कि कामपुर में चक्र अधिकारी के रूप में कार्यरत रहने के दौरान संगीता बरठाकुर ने चुनावी कार्यों के लिए जारी सरकारी धन का दुरुपयोग किया था। यह राशि वर्ष २०२४ के लोकसभा चुनाव के आयोजन हेतु उपलब्ध कराई गई थी।मामले को लेकर वर्ष २०२५ में एक पीडति ने कामपुर थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई थी। इसके

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

नदी कटाव रोकने के लिए सक्रिय हुए धोलाई विधायक अमिय कांति दास

प्रे.सं. ३० मई : धोलाई, प्रतिनिधि। मानसून के आगमन से पूर्व धोलाई विधानसभा क्षेत्र में संभावित बाढ. एवं नदी कटाव की समस्या से निपटने के लिए नव निर्वाचित विधायक अमिय कांति दास ने सक्रिय पहल शुरू कर दी है। क्षेत्र की प्रमुख रुकनी और सोनाई नदियों के कटाव प्रभावित इलाकों का दौरा कर उन्होंने तत्काल आवश्यक सुरक्षात्मक उपाय करने के निर्देश दिए हैं।जानकारी के अनुसार, रुकनी नदी में वर्तमान में आठ तथा सोनाई नदी में तीन स्थानों पर कटाव की समस्या गंभीर रूप धारण कर चुकी है। स्थायी सुरक्षा व्यवस्था अभी तक विकसित नहीं हो पाई है, लेकिन आगामी बरसात में अचानक आने वाली बाढ. और जलस्तर वृद्धि से आसपास के गांवों को नुकसान से बचाने के लिए अस्थायी प्रतिरोधात्मक उपाय किए जा रहे हैं।पिछले दो दिनों के दौरान विधायक अमिय कांति दास ने बाढ.नियंत्रण विभाग तथा लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) के अधिकारियों के साथ कटाव प्रभावित क्षेत्रों का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के बाद उन्होंने कहा कि समस्या के स्थायी समाधान के लिए शीघ्र ही राज्य के मुख्यमंत्री से चर्चा की जाएगी तथा आवश्यक परियोजनाओं को सरकारी स्तर पर स्वीकृति दिलाने का प्रयास किया जाएगा।इस संबंध में बाढ.नियंत्रण विभाग के सहायक अभियंता बदरुल हक लस्कर ने बताया कि रुकनी और सोनाई नदियों के कटाव को रोकने के लिए फिलहाल आवश्यक तात्कालिक कदम उठाए जा रहे हैं। हालांकि, समस्या के स्थायी समाधान हेतु व्यापक एवं दीर्घकालिक परियोजनाओं का क्रियान्वयन अत्यंत आवश्यक है।निरीक्षण के दौरान स्थानीय भाजपा नेता भूषण पाल, लोक निर्माण विभाग के अभियंता पीयूष कांति नाथ, सुभाष काबुई सहित भाजपा के अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे। वहीं, क्षेत्र के निवासियों ने भी प्रशासन और राज्य सरकार से शीघ्र एवं प्रभावी कदम उठाने की मांग की है, ताकि आगामी बरसात में जन-धन की हानि को रोका जा सके।

तिनसुकिया में कंजर्वेशनिस्ट देवजीत मोरान को किंग कोबरा ने काटा; हालत स्थिर

तिनसुकिया:(अर्णव शर्मा) ३० मई : असम के तिनसुकिया जिले में एक रेस्क्यू ऑपरेशन के दौरान जाने-माने वाइल्डलाइफ.कंजर्वेशनिस्ट और स्नेक रेस्क्यूअर देवजीत मोरान को किंग कोबरा ने काट लिया। उन्हें तुरंत एक मेडिकल फैसिलिटी में ले जाया गया, जहाँ डॉक्टरों ने कन्फर्म किया कि उनकी हालत अभी स्थिर है।रिपोर्ट्स के मुताबिक, देवजीत मोरान बहुत जहरीले रेप्टाइल को सुरक्षित रूप से बचाने और दूसरी जगह ले जाने की कोशिश कर रहे थे, तभी यह घटना हुई। खबर है कि ऑपरेशन के दौरान किंग कोबरा ने हमला कर दिया, जिससे स्थानीय लोगों और वाइल्डलाइफ.कंजर्वेशन कम्युनिटी के सदस्यों में चिंता फैल गई।काटने के बाद, देवजीत मोरान को तुरंत मेडिकल मदद दी गई और उन्हें ऑब्जर्वेशन में रखा गया। हॉस्पिटल अधिकारियों ने कहा कि इलाज पर उन पर अच्छा असर हुआ और उनकी हालत स्थिर है। उन्हें असम में वाइल्डलाइफ. कंजर्वेशन में उनके डेडिकेटेड कामों, खासकर साँपों और दूसरे जंगली जानवरों को बचाने और उनके रिहैबिलिटेशन के लिए जाना जाता है। उनके काम ने इंसान-वाइल्डलाइफ. के साथ रहने को बढावा देने और बायोडायवर्सिटी की सुरक्षा के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने में अहम भूमिका निभाई है।इस घटना ने वाइल्डलाइफ.रेस्क्यू करने वालों और कंजर्वेशनिस्ट के सामने आने वाले खतरों को सामने लाया है, जो जानवरों और समुदायों दोनों की सुरक्षा के लिए फ्रंटलाइन पर काम करते हैं।

शिलचर प्रेस क्लब में पत्रकार राजू दास पर हुए जानलेवा हमले की कडी निंदा, दोषियों को सजा देने की मांग

प्रे.सं. शिलचर, ३० मई। वरिष्ठ पत्रकार राजू दास पर गत गुरुवार को हुए नृशंस एवं जानलेवा हमले की कडी निंदा करते हुए शनिवार दोपहर शिलचर प्रेस क्लब में एक आपात बैठक आयोजित की गई। बैठक में पत्रकारों ने घटना

को प्रेस की स्वतंत्रता पर हमला बताते हुए दोषियों की तत्काल गिरफ्तारी और कडी सजा की मांग की।शिलचर प्रेस क्लब के सामान्य सचिव शंकर दे की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में पत्रकार चयन भट्टाचार्य, मकसूदुल चौधुरी, 'बराक वाणी' के संपादक निखिल दास, अरूप नंदी, अजीत दास, राजीव शुक्ला, छायाकार पत्रकार विश्वजीत आचार्य, सुब्रत दास सहित अनेक पत्रकार उपस्थित रहे।बैठक को संबोधित करते हुए शंकर दे ने कहा कि पत्रकार राजू दास पर हुआ प्राणघातक हमला किसी भी सभ्य समाज के लिए चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि इस घटना में शामिल सभी आरोपियों को शीघ्र गिरफ्तार कर उनके विरुद्ध कठोर एवं उदाहरणात्मक कार्रवाई की जानी चाहिए, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।पत्रकार चयन भट्टाचार्य ने कहा कि सत्य और निष्पक्ष समाचारों के प्रकाशन के कारण पत्रकारों को अक्सर जोखिम का सामना करना पडता है, लेकिन किसी समाचार संस्थान के कार्यालय में घुसकर इस प्रकार का हमला अत्यंत गंभीर और अभूतपूर्व है। उन्होंने मामले की निष्पक्ष एवं त्वरित जांच की मांग की।मकसूदुल चौधुरी ने कहा कि पत्रकारों पर हमला एक अस्वस्थ सामाजिक व्यवस्था का संकेत है। उन्होंने

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

मंगोलिया के लिए भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेषों के साथ भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे असम के राज्यपाल

गुवाहाटी, २९ मई (हि.स.)। असम के राज्यपाल लक्ष्मण प्रसाद आचार्य मंगोलिया में आयोजित होने वाले पवित्र प्रदर्शनी कार्यक्रम के लिए भगवान बुद्ध के दो प्रमुख शिष्यों अरहंत सारिपुत्र और अरहंत मौद्गल्यायन के पवित्र अवशेषों को लेकर जाने वाले भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे। यह कार्यक्रम सांस्कृतिक मंत्रालय के तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है।मध्य प्रदेश के सांची विहार चैत्य में संरक्षित इन पवित्र अवशेषों को ९ जून तक मंगोलिया में रखा

जाएगा। इस आध्यात्मिक और सांस्कृतिक यात्रा का उद्देश्य भारत और मंगोलिया के बीच सदियों पुराने सभ्यतागत और बौद्ध संबंधों को और अधिक मजबूत करना है।यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल सांची स्तूप से जुडे. ये पवित्र अवशेष दुनियाभर के बौद्ध अनुयायियों के लिए अत्यंत श्रद्धा का विषय हैं। यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विशेष पहल पर की गई है, ताकि भारत और मंगोलिया के बीच सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक संबंधों को और प्रगाढ. किया जा सके। मंगोलिया को बौद्ध जगत में भारत का आध्यात्मिक पडोसी माना जाता है।राज्यपाल आचार्य शनिवार को पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ पवित्र अवशेषों को लेकर प्रतिनिधिमंडल के साथ रवाना होंगे। मंगोलिया में आयोजित प्रदर्शनी के दौरान बडी संख्या में श्रद्धालु, भिक्षु, विद्वान और आध्यात्मिक अनुयायी इन पवित्र अवशेषों के दर्शन कर श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।इस आयोजन को भारत और मंगोलिया के बीच साझा बौद्ध विरासत और गहरी मित्रता के प्रतीक के रूप में देखा जा रहा है। राज्यपाल आचार्य के ३ जून को भारत लौटने की संभावना है।

संस्कार केन्द्र संचालिकाओं का अभ्यास वर्ग संपन्न, संगठन सशक्तिकरण पर दिया गया बल

प्रे.सं. अगरतला, ३० मई। विश्व हिन्दू परिषद, त्रिपुरा प्रांत के मातृशक्ति एवं दुर्गावाहिनी विभाग द्वारा संस्कार केन्द्र संचालित करने वाली बहनों के लिए आयोजित अभ्यास वर्ग सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। वर्ग का उद्देश्य संस्कार केन्द्रों के माध्यम से समाज में सांस्कृतिक, नैतिक एवं राष्ट्रभावना से युक्त मूल्यों के प्रसार हेतु कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान करना था।अभ्यास वर्ग में मुख्य वक्ता के रूप में विश्व हिन्दू परिषद के क्षेत्र संगठन मंत्री डॉ. दिनेश तिवारी उपस्थित रहे। उन्होंने अपने मार्गदर्शन में कहा कि संस्कार केन्द्र समाज निर्माण की

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

बराक घाटी में हाईकोर्ट की स्थायी पीठ की मांग को लेकर जनहस्ताक्षर अभियान शुरू

उधारबंद, ३० मई (नीहार कांति राय,):बराक घाटी में किसी भी उपयुक्त स्थान पर गुवाहाटी हाईकोर्ट की स्थायी पीठ स्थापित करने की लंबे समय से चली आ रही मांग को लेकर शनिवार से व्यापक जनजागरण एवं जनहस्ताक्षर अभियान का शुभारंभ किया गया। अभियान की शुरुआत श्री श्री कांचा कांती माता मंदिर परिसर से हुई।इस अवसर पर कांचा कांती विद्या मंदिर में

आयोजित एक सभा में विभिन्न क्षेत्रों के गणमान्य व्यक्ति, अधिवक्ता, शिक्षाविद, जनप्रतिनिधि तथा छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। विद्यालय की शिक्षिकाओं ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

प्रारंभिक वक्तव्य में विद्यालय के निदेशक हरिहर चक्रवती ने कहा कि बराक घाटी के वरिष्ठ नागरिकों, महिलाओं और आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को न्याय प्राप्त करने के लिए गुवाहाटी जाना पडता है, जिससे उन्हें भारी आर्थिक और मानसिक कठिनाइयों का सामना करना पडता है। उन्होंने कहा कि शिलचर अथवा बराक घाटी में हाईकोर्ट की स्थायी पीठ स्थापित होने से आम लोगों को न्याय सुलभ हो सकेगा।हाईकोर्ट स्थायी पीठ स्थापना संघर्ष समिति के अध्यक्ष धुवज्योति साहा ने कहा कि यह आंदोलन कई दशकों पुराना है। उन्होंने बताया कि प्रारंभ में कछार, हैलाकांदी और करीमगंज के अधिवक्ताओं ने संयुक्त रूप से इस मांग को लेकर आंदोलन शुरू किया था।

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

शहीद नायक इंद्र बहादुर सुब्बा को श्रद्धांजलि, सीआरपीएफ ने गांव पहुंचकर किया स्मरण

प्रे.सं. लखीपुर, ३० मई। देश की रक्षा करते हुए सर्वोच्च बलिदान देने वाले शहीद नायक/जीडी इंद्र बहादुर सुब्बा की शहादत दिवस पर शनिवार को सीआरपीएफ गुप केन्द्र

सिलचर द्वारा उनके पैतृक गांव फुलेरटोल (लखीपुर) में श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अधिकारियों, परिजनों, रिश्तेदारों तथा स्थानीय लोगों ने शहीद को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।ज्ञातव्य है कि ३० मई १९८९ को सीआरपीएफ की ३८वीं बटालियन की एक टुकडी पंजाब के तरनतारन जिले के महमूदपुर गांव में गश्त ड्यूटी पर तैनात थी। इसी दौरान आतंकवादियों ने घात लगाकर जवानों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। बल की टुकडी ने साहसपूर्वक जवाबी कार्रवाई की और आतंकवादियों के साथ भीषण मुठभेड.हुई। इस मुठभेड. में नायक/जीडी इंद्र बहादुर सुब्बा गंभीर रूप से घायल हो गए और मातृभूमि की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। शहादत दिवस के अवसर पर सीआरपीएफ गुप केन्द्र सिलचर के उप महानिरीक्षक उदय प्रताप सिंह के नेतृत्व में अधिकारियों एवं जवानों का एक दल शहीद के गांव पहुंचा। कार्यक्रम में सहायक कमांडेंट बियोंडी सिंह हिजाम सहित अन्य कार्मिक उपस्थित रहे। सभी ने शहीद के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

!! नकारात्मक विचारों का आना तय है, परन्तु यह आप पर निर्भर करता है कि आप उन्हे कितना महत्व देते हैं। !!

सम्पादकीय.....

अमेरिका-ईरान गतिरोध: अब जिद नहीं, समाधान की जरूरत

आज जब अमेरिका और ईरान के बीच संभावित समझौते की चर्चाएं बार-बार सामने आ रही हैं, तब भी दोनों देशों के बीच अविश्वास की खाई इतनी गहरी है कि समाधान की कोई ठोस उम्मीद दिखाई नहीं देती। पिछले कई सप्ताहों से कभी वाशिंगटन वार्ता में प्रगति के दावे करता है तो कभी तेहरान अपने रुख में लचीलापन दिखाने के संकेत देता है, लेकिन वास्तविकता यह है कि बातचीत अब तक किसी निर्णायक नतीजे तक नहीं पहुंच सकी है।

स्थिति की गंभीरता इस तथ्य से समझी जा सकती है कि दोनों पक्ष संवाद के साथ-साथ एक-दूसरे को लगातार चेतावनियां और धमकियां भी दे रहे हैं। यह स्पष्ट संकेत है कि कूटनीतिक प्रयासों के बावजूद भरोसे का वातावरण तैयार नहीं हो पाया है। ऐसे में मध्यस्थ देशों की भूमिका भी सीमित होकर केवल संदेशवाहक की रह गई है।

सबसे बडी चिंता यह है कि पश्चिम एशिया का संकट अब केवल क्षेत्रीय मुद्दा नहीं रह गया है। होर्मुज जलडमरूमध्य में तनाव के कारण वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति प्रभावित हुई है। विश्व के तेल और गैस व्यापार का बडा हिस्सा इसी मार्ग से होकर गुजरता है। इसके बाधित होने से ऊर्जा कीमतों में अस्थिरता बढ़ी है, जिसका असर विकसित और विकासशीलदोनों प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं पर पड.रहा है। भारत जैसे ऊर्जा आयातक देशों के लिए यह स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक है।

समझौते में सबसे बडी बाधा ईरान का परमाणु कार्यक्रम और होर्मुज क्षेत्र को लेकर उसका कठोर रुख बना हुआ है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय लंबे समय से यह चाहता है कि ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम को पूरी पारदर्शिता के साथ संचालित करे और परमाणु हथियारों की दिशा में बढ़ने की आशंकाओं को समाप्त करे। दूसरी ओर, अमेरिका और उसके सहयोगियों को भी यह सुनिश्चित करना होगा कि सुरक्षा चिंताओं के समाधान के लिए केवल दबाव और सैन्य कार्रवाई का रास्ता ही न अपनाया जाए।

होर्मुज जलडमरूमध्य किसी एक देश की निजी संपत्ति नहीं, बल्कि वैश्विक समुद्री व्यापार का महत्वपूर्ण मार्ग है। इसके संचालन में अंतरराष्ट्रीय नियमों और समुद्री कानूनों का सम्मान अनिवार्य है। इसी प्रकार, अमेरिका को भी यह समझना होगा कि केवल प्रतिबंधों और शक्ति प्रदर्शन से स्थायी समाधान नहीं निकाला जा सकता।

आज आवश्यकता इस बात की है कि दोनों देश अपनी-अपनी जिद से ऊपर उठें और व्यावहारिक समाधान की दिशा में आगे बढें। ईरान को अपने परमाणु कार्यक्रम को लेकर विश्व समुदाय की चिंताओं का समाधान करना होगा, वहीं अमेरिका को सुरक्षा और संप्रभुता के संबंध में ईरान की आशंकाओं को दूर करने के लिए ठोस आश्वासन देने होंगे।

पश्चिम एशिया का यह गतिरोध अब केवल दो देशों के बीच का विवाद नहीं रह गया है। इसका असर विश्व अर्थव्यवस्था, ऊर्जा सुरक्षा और करोडों लोगों की आजीविका पर पड.रहा है। महंगाई, आर्थिक अनिश्चितता और बढती गरीबी के बीच दुनिया एक और लंबे संकट का बोझ उठाने की स्थिति में नहीं है। इसलिए समय की मांग है कि अमेरिका और ईरान दोनों टकराव की राजनीति छोडक़र संवाद, समझौते और स्थायी शांति का मार्ग अपनाएं। यही वैश्विक हित में होगा और यही वर्तमान संकट से बाहर निकलने का सबसे विवेकपूर्ण रास्ता है।

नीट पेपर लीक पर धीरेंद्र शास्त्री बोले- काश नेताओं के वोट लीक हो जाएं, चुनाव तो लीक नहीं होते

खजुराहो. (एजें) ३० मई : बागेश्वर धाम प्रमुख पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने बद्रीनाथ धाम में नीट परीक्षा पेपर लीक मामले पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया दी है. उन्होंने सरकार से अपील करते हुए कहा कि यदि गलती सिस्टम की है, तो अगली बार छात्रों की फीस माफ होनी चाहिए. पंडित शास्त्री २७ से ३१ मई तक बद्रीनाथ धाम में 'श्री सत्यनारायण भगवान की कथा सुना रहे हैं.कथा के दौरान उन्होंने बताया कि उन्हें नीट पेपर लीक की खबर मिली. उन्होंने कहा, 'कुछ बच्चों ने बहुत मेहनत की. एक-दो बच्चे-बच्चियां यहां मुझसे मिलने आए. उनका मन हीन देखकर मैंने पूछा तो उन्होंने बताया कि पेपर तो दिया, लेकिन वह लीक हो गया. पंडित शास्त्री ने इस पर अपनी नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा, चुनाव लीक नहीं होते... काश नेताओं की वोटें लीक हो जाएं. उन्होंने छात्रों को ढांढस बंधाते हुए कहा कि वे रोएं नहीं.उन्होंने भारत सरकार से प्रार्थना करते हुए कहा कि जो बच्चे उधार लेकर पेपर की फीस भरते हैं, उनके लिए एक बार की फीस देना भी कठिन होता है. उन्होंने कहा कि किसान, मजदूर माता-पिता अपने बच्चों में भविष्य का सपना देखते हैं कि उनका बेटा या बेटी डॉक्टर बनेगा. वे अपना पेट काटकर फीस भरते हैं, और जब पेपर लीक हो जाता है, तो उनके दिल पर बहुत चोट लगती है. पंडित शास्त्री ने जोर दिया कि पेपर लीक का प्रभाव केवल एक बच्चे पर नहीं, बल्कि पूरे परिवार, माता-पिता और उनकी आय पर पडता है.

उन्होंने सुझाव दिया, नियम यह होना चाहिए कि गलती विद्यार्थियों की नहीं, बल्कि सिस्टम की है, तो सिस्टम को यह दंड मिलना चाहिए कि अगली बार की फीस माफ होनी चाहिए. उन्होंने आगे कहा कि जब गलती सिस्टम की है, तो विद्यार्थी क्यों भुगतें? सिस्टम को भुगतना चाहिए, ताकि उन्हें अपनी गलती का एहसास हो. उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यदि ऐसा होता है, तो भारत को बदलते देर नहीं लगेगी.

'उदन्त मार्त्तण्ड' से लेकर आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस तक हिंदी पत्रकारिता

- संजीव शर्मा -

हिंदी पत्रकारिता की दो शताब्दियों की यात्रा केवल समाचारों के प्रसार की कहानी नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज, संस्कृति, राजनीति और तकनीकी विकास का जीवंत दस्तावेज भी है। १८२६ में 'उदन्त मार्तण्ड' के प्रकाशन से लेकर आज के कृत्रिम बुद्धिमत्ता (अख) आधारित मीडिया युग तक, हिंदी पत्रकारिता ने अनेक उतार-चढाव, संघर्ष, प्रयोग और नवाचार देखे हैं। यह यात्रा परंपरा और आधुनिकता के संगम की ऐसी गाथा है, जिसने न केवल पत्रकारिता को समृद्ध किया बल्कि जनमानस को भी जागरूक और सशक्त बनाया।

कोलकाता के कोलूटोला इलाके की अमरतल्ला गली से कानपुर निवासी वकील, पंडित युगल किशोर शुक्ल ने ३० मई १८२६ को साप्ताहिक पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' पहला अंक प्रकाशित किया। 'उदन्त मार्त्तण्ड' न केवल भारत का पहला हिन्दी समाचार पत्र था, बल्कि यह भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में एक साहसिक भाषाई और सांस्कृतिक प्रयोग भी था। इसका पूरा श्रेय पंडित युगल किशोर शुक्ल को जाता है। उस दौर में जब अंग्रेजी, बांग्ला और फारसी का बोलबाला था, इसने देवनागरी लिपि में छपाई कर हिन्दी भाषियों को अपनी पहचान और आवाज दी। पंडित युगल किशोर शुक्ल ने जब 'उदन्त मार्त्तण्ड' का पहला अंक प्रकाशित किया होगा, तब शायद उन्हें भी इस बात का आभास नहीं रहा होगा कि वे एक ऐसी मशाल जला रहे हैं जो आने वाली दो सदियों तक भारत की सामाजिक और राजनीतिक चेतना को आलोकित करेगी। अल्पायु में ही 'उदन्त मार्तण्ड' ने भविष्य के राष्ट्रवादी समाचार पत्रों के लिए एक ढाँचा तैयार किया। इसने भारतीय मानस में सांस्कृतिक और राजनीतिक चेतना जगाने का कार्य किया, जो आगे चलकर स्वतंत्रता आंदोलन का आधार बनी। इसे मध्यदेशीय भाषा का पत्र कहा गया, जिसने उत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रों के बीच संवाद का एक सेतु बनाने का प्रयास किया, भले ही उस समय कलकत्ता में हिन्दी भाषियों की संख्या कम थी।

यह पत्र केवल समाचारों का माध्यम नहीं था, बल्कि इसने सामाजिक बुराइयों पर कडा प्रहार किया और समाज में जागरूकता लाने का काम किया। इसने तत्कालीन भारतीय समाज के सरोकारों को केंद्र में रखा। अपनी संक्षिप्त प्रकाशन अवधि में ही इसने ईस्ट इंडिया कंपनी की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई। सरकारी सहायता और डाक सुविधाओं के अभाव के बावजूद, इसने एक 'क्रांतिकारी अखबार' के रूप में अपनी पहचान बनाई। 'उदन्त मार्तण्ड' भाषाई बाधाओं और संसाधनों की कमी के कारण केवल ७९ अंक तक ही प्रकाशित हो पाया, लेकिन इसने हिंदी में सोचने और लिखने की नींव रख दी। १८२७ में अंतिम अंक में श्री शुक्ल ने लिखा था कि 'आज दिवस लौं उग चुक्यौ मार्तड उदन्त, अस्ताचल को जात है दिनकर दिन अब अंत।' अल्पायु में ही 'उदन्त मार्तण्ड' ने भविष्य के राष्ट्रवादी समाचार पत्रों के लिए एक ढाँचा तैयार किया। इसने भारतीय मानस में सांस्कृतिक और राजनीतिक चेतना जगाने का कार्य किया, जो आगे चलकर स्वतंत्रता आंदोलन का आधार बनी। इसे मध्यदेशीय भाषा का पत्र कहा गया, जिसने उत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रों के बीच संवाद का एक सेतु बनाने का प्रयास किया, भले ही उस समय कलकत्ता में हिन्दी भाषियों की संख्या कम थी। यही कारण है कि ३० मई को हिन्दी पत्रकारिता दिवस के रूप में मनाकर पूरा देश इस पत्र के ऐतिहासिक साहस और योगदान को याद करता है।

हिंदी पत्रकारिता ने २०० वर्षों में साम्राज्यवाद से लडाई लडी, स्वतंत्रता दिलाई, लोकतंत्र का चौथा स्तंभ बनी, डिजिटल उछाल लिया और अब एआई की चुनौती का सामना कर रही है। यह यात्रा सिर्फ अखबारों की नहीं, बल्कि भारत की सामाजिक राजनीतिक चेतना की कहानी है। रोचक किस्सों, गुमनाम नायकों, बलिदानों और तकनीकी क्रांतियों से भरी यह विकास यात्रा हमें पत्रकारिता के तमाम पहलुओं और बदलावों से रूबरू कराती है।

इन परिवर्तनों को आसानी से समझाने के लिए हम हिंदी पत्रकारिता की इस मैराथन यात्रा को निम्नलिखित भागों में विभक्त कर आसानी से सकते हैं।

उद्भव और प्रारंभिक संघर्ष (१८२६-१८७३):

जैसा कि हम सभी भली-भाँति जानते हैं कि हिंदी पत्रकारिता का जन्म बंगाल में हुआ, जहाँ अंग्रेजी, बंगाली और फारसी पहले से सक्रिय थी। पहले हिंदी समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' के लिए पंडित युगल किशोर शुक्ल ने १६ फरवरी १८२६ को लाइसेंस लिया और इसी साल ३० मई को पहला अंक प्रकाशित हुआ। फिर १८२९ में राजा राममोहन रॉय ने हिंदी, अंग्रेजी, बंगाली और फारसी में 'बेंगदूत' निकाला। यह अखबार भी मात्र १२ अंक तक ही प्रकाशित हो पाया। लेकिन यह साप्ताहिक पत्र सती प्रथा का विरोध जैसे सुधारों का माध्यम भी बना। १८५४ में कोलकाता से ही श्याम सुन्दर सेन के संपादन में समाचार 'सुधावर्षन' प्रकाशित हुआ। बनारस से 'बनारस अखबार' ने हिंदी पट्टी में समाचार पत्रों का प्रवेश कराया। राजा शिव प्रसाद के सितारे-हिंद ने उर्दू-हिंदुस्तानी शैली अपनाई। इस युग में दर्जनों प्रयोग हुए जैसे सुधाकर, प्रजा हितैषी, ज्ञानदीप आदि लेकिन अधिकांश छोटे और अल्पकालिक थे। चूँकि उस समय देश में साक्षरता मात्र ३-४ फीसदी थी और सुविधाओं का भी अभाव था फिर भी ये पत्र गाँवों तक पहुँचे। इस दौरान कई सकारात्मक बातें भी हुई जैसे कि भाषा संस्कृत से हिंदी और भारी से सरल की ओर बढी। अखबारों प्रकाशन की छोटी आयु के बाद भी प्रकाशकों में ब्रिटिश सेंसरशिप, आर्थिक दबाव, मुद्रण तकनीक की कमी के बाद भी प्रकाशन का हौंसला बढता गया। मोटेतौर पर इस दौर की पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य सूचना देना कम और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति जागृति के साथ धार्मिक-सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करना अधिक था।

साहित्य और सुधार का दौर (१८७३-१९००):

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने १८७३ में हरिश्चंद्र मैगजीन (बाद में हरिश्चंद्र चंद्रिका) शुरू किया। इससे पहले १८६७ में उनका 'कवि वचन सुधा' आ चुका था। एक तरह से भारतेंदु युग ने हिंदी पत्रकारिता को नई दिशा दी। इसी दौरान भारत मित्र, हिंदी प्रदीप, उचित वक्ता आदि समाचार पत्र निकले। इसी दौर में भाषा शुद्ध हुई और खडी बोली का विकास भी हुआ। इस दौर में विधवा विवाह, बाल विवाह विरोध, शिक्षा प्रसार, जाति प्रथा जैसे मुद्दों के जरिये पत्रकारिता सिर्फ खबर नहीं, सामाजिक क्रांति का हथियार बन गयी। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने जहाँ 'सरस्वती' के माध्यम से साहित्यिक पत्रकारिता को मजबूत किया। वहाँ, भारतेंदु ने साहित्यकारों को पत्रकारिता से जोडक़र मुंशी प्रेमचंद जैसे स्तंभ लेखक पत्रकारिता को दिए। इस दौर में पत्रकारिता केवल समाचार नहीं थी, बल्कि यह ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ एक सांस्कृतिक विरोध था। 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल' के मंत्र ने हिंदी को जन-जन की भाषा बनाया। इस दौर भारत में स्वतंत्रता आंदोलन की नींव पड.रही थी और पत्रकारिता इस आंदोलन का महत्वपूर्ण हथियार बन रही थी।

विद्रोह का दौर (१९००-१९४७):

यह पत्रकारिता का स्वर्णिम दौर था जिससे समाचार पत्रों को समाज और देश की जनता की आवाज बनने का अवसर दिया। हम कह सकते हैं कि २०वीं सदी में हिंदी पत्रकारिता राष्ट्रीय चेतना का स्वर बनी। इस दौर में क्रांति की अलख जगाने वाले प्रमुख समाचार पत्रों की बात करें तो १९१३ में कानपुर से गणेश शंकर विद्यार्थी ने 'प्रताप' का प्रकाशन आरंभ किया और यही १६ पृष्ठों का यह साप्ताहिक क्रांतिकारियों का हथियार बन गया। प्रताप का संपादन करते हुए विद्यार्थी जी ने सीधेतौर पर लिखा था कि 'हम जो कुछ लिखते हैं, सत्य के लिए लिखते हैं।' इस बात से भी हम सभी बखूबी परिचित हैं कि प्रताप के क्रांतिकारी शब्द अंग्रेजों को बुरी तरह चुभते थे और यही कारण था कि ब्रिटिश सरकार ने उन्हें बार-बार जेल भेजा। प्रताप की जगाई स्वराज की अलख को 'अभ्युदय', 'मतवाला' और 'आज' जैसे समाचार पत्रों ने लहर बना दिया। इस लहर को आगे बढाने में वंदे मातरम, स्वदेश, तरुण भारत ने भी सक्रिय भूमिका निभाई। गांधी जी द्वारा चलाये गए असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा एवं भारत छोडो आंदोलन को देशव्यापी बनाने में हिंदी प्रेस की प्रभावी भूमिका थी। इसी दौर में गांधी का 'नवजीवन' और 'हरिजन' जनता की आवाज बने और महात्मा गांधी के संदेश को गाँव-गाँव पहुँचाने का माध्यम भी। इन अखबारों की धमक से घबराकर अंग्रेज सरकार ने दमन चक्र शुरू किया और तमाम हिंदी पत्र बंद कर दिए गए, प्रेस जब्त हुए तथा संपादक जेल भेजे गए। पत्रकारिता उस समय कोई व्यवसाय नहीं, बल्कि राष्ट्र-सेवा का संकल्प थी। इस समय के पत्रकार केवल लेखक नहीं थे, बल्कि स्वतंत्रता सेनानी भी थे। उन्होंने जेल यात्राएं की, आर्थिक कठिनाइयों का सामना किया, लेकिन अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। इस दौर में लेखन शैली में भी बदलाव आया। भाषा सरल और जनसुलभ हुई, ताकि अधिक से अधिक लोग जुड.सकें। संपादकीय लेखों का प्रभाव इतना गहरा था कि वे जनमत निर्माण का मुख्य स्रोत बन गए।

विस्तार, नियंत्रण और चुनौतियों का दौर (१९४७-१९९०):

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हिंदी पत्रकारिता ने लोकतंत्र का चौथा स्तंभ बनने और देश के नवनिर्माण में सहभागी बनने का दायित्व संभाला। दैनिक हिंदुस्तान, नवभारत टाइम्स, दैनिक जागरण, अमर उजाला, नवभारत, नई दुनिया देशबंधु, जनसत्ता, दैनिक भास्कर जैसे कई अखबार प्रभावी रूप से उभरे। सरकारी नीतियों, योजनाओं और विकास कार्यों तक जनता तक पहुँचाने में पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही। साथ ही, सत्ता की आलोचना और लोकतंत्र की रक्षा का दायित्व भी अखबारों ने निभाया। इसी दौर में आपातकाल के दौरान हिंदी अखबारों की ताकत देखने को मिली। आपातकाल हिंदी पत्रकारिता के लिए एक कठिन परीक्षा थी। सेंसरशिप लागू कर दी गई थी और प्रेस की स्वतंत्रता पर अंकुश लगा दिया गया था। इस समय कुछ समाचार पत्रों ने सरकार के दबाव में झुकने का रास्ता चुना, जबकि कुछ ने विरोध का साहस दिखाया। यह दौर इस बात का प्रमाण है कि पत्रकारिता केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि लोकतंत्र का प्रहरी भी है। आपातकाल के बाद पत्रकारिता में आत्ममंथन हुआ और स्वतंत्रता तथा निष्पक्षता के मूल्यों को और अधिक मजबूती मिली। वहीं, तकनीकी का विस्तार भी हुआ और १९८०-९० में ऑफसेट प्रिंटिंग और कंप्यूटर कंपोजिंग आई। समाचार पत्रों ने क्षेत्रीय विस्तार किया। धर्मयुग, दिनमान, साप्ताहिक, इण्डिया टुडे और साप्ताहिक हिंदुस्तान जैसी पत्रिकाओं और अखबारों ने सम-सामयिक एवं साहित्यिक पत्रकारिता को लोकप्रिय बनाया। सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय' (दिनमान), धर्मवीर भारती (धर्मयुग) और मनोहर श्याम जोशी (साप्ताहिक हिंदुस्तान) जैसे दिग्गजों ने पत्रकारिता को बौद्धिक रूप से समृद्ध किया।

नई सदी का उफान (१९९१-२०२०):

देश में आर्थिक उदारीकरण की हवा बही तो मिशनरी अखबार, उद्योग में परिवर्तित हो गए। अखबार उद्योग को भी नए पंख लग गए। आर्थिक सुधारों ने मीडिया को पूर्ण रूप से एक 'उद्योग' बना दिया। उन्हें दुनिया भर से श्रेष्ठ संसाधन जुटाने और पाठकों तक सौंदर्यपरक और व्यवस्थित तरीके से पहुँचने का मौका मिला और यहीं से पत्रकारिता का स्वरूप मीडिया हो गया और वह यह नये किस्म का चोला पहनकर मिशन से बिजनेस हो गया। इसी दौर में ब्रेकिंग न्यूज की संस्कृति शुरू हुई और रिपोर्टिंग का भी तौर-तरीका बदल गया। उल्लेखनीय बात यह है कि इस दौर में न्यूज चैनलों की टीवी क्रांति के बावजूद हिंदी प्रेस मजबूत और मजबूत होती गयी। दैनिक भास्कर, अमर उजाला, दैनिक जागरण, पंजाब केसरी, नई दुनिया, राजस्थान पत्रिका जैसे तमाम अखबार समूहों ने बहु संस्करण का मॉडल अपनाया और साथ ही इंटरनेट पर भी उनके ऑनलाइन एडिशन और एप्स की धमक सुनाई देने लगी। बडे.मीडिया हाउस बने और कॉर्पोरेट प्रभाव बढऩे लगा। हालाँकि इससे संसाधनों और तकनीक में सुधार हुआ, लेकिन निष्पक्षता और गुणवत्ता पर प्रश्न भी उठने लगे।

सोशल मीडिया का क्रांतिकारी दौर २०१० के बाद सोशल मीडिया ने आँधी-तूफान की तरह इस क्षेत्र में घुसपैठ की और धीरे-धीरे यह पत्रकारिता का २.० संस्करण बन गया। मोबाइल के कंधे पर चढक़र इंटरनेट शहरों से गाँवों तक पहुँच गया और उसी तेजी से सोशल मीडिया की पैठ बढती गयी। इंटरनेट ने छोटे-छोटे इलाकों के वीडियो, न्यूज, लाइव अपडेट को देशव्यापी बना दिया और तब शुरुआत हुई पत्रकारिता की एक नयी विधा 'डेटा जर्नलिज्म' की जिसने भाषा को और सरल करते हुए इसे गली मोहल्लों की भाषा बना दिया। सोशल मीडिया ने इमोजी के जरिये भाषा को अलग ही रूप दे दिया। सरल शब्दों में कहें तो स्मार्टफोन और सस्ते डेटा ने पत्रकारिता का लोकतंत्रीकरण कर दिया। लगभग सभी बडे.समाचार पत्रों और चैनलों ने अपने डिजिटल प्लेटफॉर्म विकसित किए। वीडियो कंटेंट, लाइव अपडेट्स और इंटरैक्टिव फीचर्स ने समाचारों को अधिक आकर्षक बना दिया। अब केवल बडे.घराने ही प्रकाशक नहीं थे; हर व्यक्ति एक 'सिटीजन जर्नलिस्ट' बन गया। ट्विटर (अब एक्स), फेसबुक और यूट्यूब समाचारों के प्राथमिक स्रोत बन गए।

सोशल मीडिया के विस्तार ने 'फेक' न्यूज जैसी बीमारियों को भी जन्म दिया और कई मामलों में सही-गलत की पहचान खत्म हो गयी। स्थिति यहाँ तक आ गयी कि कई मीडिया संस्थानों सहित खुद सरकार को फेक्ट चैक इकाइयाँ बनानी पडी। लेकिन इन सभी बाधाओं के बाद भी हिंदी ने दुनिया का सबसे बडा भाषाई मीडिया बनने का परचम लहरा दिया और हिंदी अखबार विश्वसनीयता में सबसे आगे बने रहे। हालाँकि, इस दौर में डिजिटल पत्रकारिता ने गति और पहुँच तो बढाई, लेकिन फेकन्यूज और अपुष्ट सूचनाओं की समस्या से विश्वसनीयता एक बडा मुद्दा बनकर उभरी।

आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस (एआई) दौर (२०२० से आगे):

आज हिंदी पत्रकारिता अपने सबसे चुनौतीपूर्ण और रोमांचक मोड.पर है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस (एआई) की पदचाप से ही २०२५-२६ में हिंदी पत्रकारिता में खलबली मच गयी। किसी को आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस पत्रकारिता पर सबसे बडा खतरा नजर आया तो किसी को, यह काम को और आसान बनाने का जरिया। ठर्ीींशीी और खपवळर अख डीींाळीं २०२६ की एक रिपोर्ट के अनुसार ७० प्रतिशत से ज्यादा न्यूज संगठन अब एआई का उपयोग कर रहे हैं और इसके जरिये ऑटोमेटेड राइटिंग, डेटा एनालिसिस, पर्सनलाइजेशन, अनुवाद, फेकन्यूज डिटेक्शन जैसे विभिन्न काम करने लगे हैं। कई अखबारों के न्यूजरूम में अब आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस ट्रेंडिंग टॉपिक्स स्कैन करता है, हेडलाइंस सुझाता है, वॉइस ओवर जेनरेट करता है। अब पाठक खबर नहीं ढूंढता बल्कि खबर पाठक को ढूंढती है। गूगल और मेटा के एल्गोरिदम तय करते हैं कि आप क्या पढेंगे। हेडलाइन लिखना, डेटा का विश्लेषण करना और यहाँ तक कि लेखों का सारांश तैयार करना अब सेकंडों में एआई द्वारा किया जा रहा है। दुनिया के विकसित देशों को तो छोडो आज भारत में ही 'सना' (आज तक) और 'लीसा' जैसे एआई न्यूज एंकर्स अब खबरें पढ.रहे हैं। सही मायने में प्रिंट मीडिया और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का मिलन पत्रकारिता के इतिहास में एक दुधारी तलवार की तरह है। जहाँ एक ओर एआई ने काम की गति एवं सहजता बढाई है, वहीं दूसरी ओर इसने पत्रकारिता की साख और मौलिकता के सामने गंभीर चुनौतियाँ खडी कर दी हैं। एआई द्वारा जनरेट की गई गलत सूचनाएँ या मनगढंत तथ्य (क्रश्रश्रीलळपरीळेपी) प्रिंट मीडिया की सबसे बडी पूँजी विश्वसनीयता को नुकसान पहुँचा सकते हैं। एक बार छप जाने के बाद अखबारों में गलती सुधारना डिजिटल की तुलना में कठिन होता है। इसके साथ साथ, एआई मॉडल अक्सर मौजूदा पत्रकारिता के आधार पर तैयार होते हैं, जिससे बौद्धिक संपदा के उल्लंघन और मौलिक लेखकों के हक मारे जाने का खतरा बढ.गया है। इससे नौकरियाँ जाने एवं मानवीय मेधा के ह्रास का खतरा भी बढ.गया है।

चुनौतियाँ और भविष्य:

दो सदियों की पत्रकारिता की इस यात्रा में हिंदी पत्रकारिता के सामने अब सबसे बडा संकट साख का है क्योंकि फेक न्यूज और क्लिकबेट पत्रकारिता की सबसे बडी चुनौती बन गए हैं। इसी तरह हिंग्लिश के बढते प्रयोग से मूल हिंदी की शुद्धता प्रभावित हुई है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढते उपयोग से यह सवाल भी उठने लगे हैं कि क्या यह मानवीय संवेदनाओं और ग्राउंड रिपोटिंग की जगह ले पाएगा क्योंकि पत्रकारिता का मूल सहानुभूति और सत्य की खोज है। प्रिंट मीडिया के लिए एआई एक सहायक तो हो सकता है, लेकिन वह संपादक की जगह नहीं ले सकता। फिलहाल यह तो दावे से कहा जा सकता है कि भविष्य उसी संस्थान का उज्ज्वल है जो एआई की तकनीकी सटीकता और मनुष्य के नैतिक विवेक के बीच संतुलन बिठा पाएगा।

'उदन्त मार्त्तण्ड' से शुरू हुई हिंदी पत्रकारिता की यात्रा आज एआई और डिजिटल मीडिया के अत्याधुनिक युग तक जरूर पहुँच चुकी है। इन २०० वर्षों में उसने न केवल तकनीकी बदलावों को अपनाया, बल्कि समाज के हर परिवर्तन को अपने भीतर समाहित किया। 'उदन्त मार्त्तण्ड' के हाथ से लिखे जाने वाले दौर से लेकर आज चैट-जीपीटी जैसे एआई टूल द्वारा न्यूज बुलेटिन तैयार करने तक, हिंदी पत्रकारिता ने लंबा सफर तय किया है। स्वरूप बदला है, माध्यम बदले हैं और गति बदली है, लेकिन इसकी आत्मा आज भी वही है-जनता की आवाज बनना। यह यात्रा हमें यह सिखाती है कि पत्रकारिता केवल खबरों का संकलन नहीं, बल्कि समाज का दर्पण और दिशा-निर्देशक है। भविष्य में चाहे तकनीक कितनी भी उन्नत क्यों न हो जाए, पत्रकारिता का मूल उद्देश्य-सत्य, निष्पक्षता और जनहित- सदैव सर्वोपरि रहना चाहिए। हिंदी पत्रकारिता की यह विकास यात्रा एक जीवंत परंपरा है, जो निरंतर आगे बढ.रही है-नए प्रश्नों, नई चुनौतियों और नई संभावनाओं के साथ।

वयमिह परितुष्ट वल्कलैस्त्वं दुकूलैः

सम्माननीय मित्रों ! एक योगी और राजा में अंतर होता है ! महाराजा को कितना भी मिल जाये ! वो संतुष्ट नहीं होते ! उनकी पिपासा बढती ही जाती है ! बढती ही जाती है, अंतर इतना ही होता है कि या तो उनकी प्यास देशवासियों के खून से बुझती है अथवा उनकी प्यास देश हित में विकास के मार्ग प्रशस्त करते हुवे बुझती है ! और एक समय ऐसा आता है कि 'राजा-योगिराज' बन जाता है--'सम इह परितोषो निर्विशेषो विशेषः'

और आज भारत विश्व गुरु अर्थात विश्व का मार्गदर्शन करने को धीरे-धीरे तैयार होता जा रहा है ! और इसका श्रेय निःसंदेह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की उन धरातलीय नीति को जाता है जिसकी आधार शिला क्षत्रपति शिवाजी महाराज से लेकर महाराणा प्रताप ने रखी थी ! जिसकी आधार शिला आदरणीय गोलवलकर जी एवं पूज्य गुरूजी ने रखी थी।

मित्रों ! ये शाश्वत सत्य है कि-'हिन्दू संस्कृति' विश्व मानव समाज की मुख्य जड है ! तीन हजार एक सौ तेइस वर्ष पूर्व कोई भी यहूदी नही था ! ये सत्य है कि सन २०३३ के पूर्व कोई इसाई नहीं हुवा करता था ! सन ६२४ के पूर्व कोई मुस्लिम नहीं था ! समूचे विश्व में दो प्रकार के लोग थे-'प्राकृत और संस्कृत' कृपया ध्यान देना आप यहाँ संस्कृत से तात्पर्य भाषा से नहीं है।

और यह आर्यावर्त का बल था कि-

'ऐक्यं बलं समाजस्य तदभावे स दुर्बलः।

तस्मात ऐक्यं प्रशंसस्ति दृढं राष्टं हितैषिणाः ?'

प्राकृत वे लोग थे जो हम संस्कृत लोगों के अभिभावक थे ! वे हमारे पूर्वज हैं ! हमारे माता-पिता हैं वे! उन्होंने अशिक्षित होने के दंश को झेला था ! वे चाहते थे कि उनकी सन्तानें शिक्षित होकर देश,धर्म,समाज और अपने गांव को एक पहचान दें ! हमारे उन्हीं प्रकृति के आंचल में अर्थात सुदूर ग्रामीण अंचल में,वन में, असुविधाजनक परिस्थितियों में रहते हुए भी अपने बच्चों को शिक्षित होने हेतु धीरे-धीरे बुद्ध और प्रबुद्ध लोगों के पास भेजा ! और उनकी सन्तानों ने आश्रम में पलकर,शिक्षित होकर ! खेल खेल में-'सिंह के जबड़े' खोलकर दांतों को गीना था ! उनके नाम पर हमारे देश का नाम-'भारत' हुवा ।

मित्रों ! यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि उन्होंने सिंह से मित्रता की थी ! हमारे प्राचीन इतिहास को इस दृष्टि से देखने की गहरी आवश्यकता है कि हमारे यशस्वी पूर्वज सिंह का शिकार नहीं अपितु उनसे मित्रता करते थे ! ऋषियों के आश्रम में- 'गौ,हिरन, सिंह' एकसाथ रहते थे ! एक-दूसरे के प्रति मित्र भाव से रहते थे ! और इसका यही कारण था कि हमारे ऋषि-मुनी भी अपनी जडें जानते थे कि वे प्राकृत स्थानों से आये वही लोग हैं जो- 'नैसर्गिक प्रकृति' के बीच रहते हैं । एकता थी उनमें और सुदूर वनवासी लोगों में ! सुदामा और कृष्ण एकसाथ पढते थे ! महाराज सैन्धव के पुत्र उद्दालक और जंगलों में रहनेवाले एक वनवासी कृषक की सन्तान आरुणी एक ही गुरूकुल में रहते थे ! इतनी एकता हममें थी।

मित्रों ! कालान्तर में नगरीय भव्यता और विकास की दौड़ में अंधे होकर हमने अपने गांव से,वन और सुदूर चाय बागानों से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया ! मित्रों ! श्रुति कहती है कि-

'ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु।सह वीर्य करवावहै।

तेजस्वि ना मधीतमस्स्तु मा विद्विषावहै ?'

हमें एक साथ चलना होगा ! हममें कुछ शिक्षित,स्वस्थ,उच्च कुलीन,धनाढ्य होंगे ! कुछ व्यक्ति अशिक्षित,निम्न वर्गीय, अस्वस्थ,निर्धन होंगे ! हममें कुछ अच्छे लोग होंगे-कुछ ऐसे होंगे जिनसे हमारा-'मतभेद' होगा ! कोई बात नहीं -'मन भेद' नहीं होना चाहिये।मत भेद मिट सकता है और -मन भेद वह पत्त्थर की लकीर है जो हमेशा के लिये हमें एक-दूसरे से पृथक कर सकती है। राष्ट्रीय हित में हमें एकता पर बल देना होगा ! दरिद्रता धनाभाव से नहीं होती ! कोई व्यक्ति अपने से ऊंची पायदान पर बैठे व्यक्ति के समक्ष दरिद्र है ? अर्थात हर व्यक्ति अपने से ऊंची कक्षा में बैठे व्यक्ति के समक्ष दरिद्र है। अर्थात हर व्यक्ति दरिद्र है ! और सम्पन्न कौन है-'टुकड़े में टुकडा कर देना मेरे लाल'मित्रों ! हमारे पास आज जो कुछ है ! वो हमारे अपने श्रम के साथ-पूर्वजों,राष्ट,शिक्षा और समाज के सहयोग से है ! अर्थात इन सभी का हमारे विकास में योगदान है ! और यह समय की पुकार है कि हम उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुवे उनका अंश ब्याज के साथ वापस कर दें ! अभी भी समय है ! यदि आज हम नहीं जागे ! हमने एकता नहीं दिखायी ! तो समाप्त हो जायेगा अस्तित्व हमारा।

दो तरह के व्यक्ति हममें होते हैं पहला व्यक्ति हिमालय के शिखर को देखकर कहता है कि असम्भव ! मैं वहाँ नहीं चढ सकता ! और दूसरा कहता है कि-मित्र ! चलो ! एक कदम बढा कर देखो कल ! यह शिखर तुम्हारे कदमों के नीचे होगा बिलकुल यही सूत्र हमें हमारी संस्कृति, हिन्दी, असम,हिन्दू और हिन्दुस्थान को अपने लक्ष्य तक पहुँचा सकता है। मित्रों ! हममें से कुछ लोगों को-'पंच प्यारे' की तरह आगे आना होगा ! अपना सर्वस्व होम करने को तत्पर होना होगा ! जिस प्रकार संघ के प्रचारक एक चलते-फिरते ऐसे सन्यासी थे जो हमारी-आपकी चौखट पर आकर हिन्दुत्व का बिगुल फूंक कर हमारे बच्चों को जागृत कर गये ! हममें हिन्दुत्व भाव अनजाने में ही जागृत कर गये ! बिलकुल उसी प्रकार-'न दैन्यम् न पलायनम्' मेरे अपने जीवन का सिद्धांत रहा है कि-'सफलता सीता की खोज में नही अपितु रावण वध का उपाय ढूंढने में है।' हमें अपना तन मन और धन यह तीनों ही यथा संभव हिन्दी हिन्दू और हिन्दुस्थान के हितार्थ लगाना होगा ! और ऐसा करने पर ही हमारी-आपकी पीढियों को-'असम में अपनी-समकालीन' पहचान सुरक्षित रखने में सामर्थ्यवान बनायेगी--..आनंद शास्त्री सिलचर, सचल दूरभाष यंत्र सम्पर्कांक ६९०१३७५९७१'

● आचार्य आनंद शास्त्री

प्रथम पृष्ठ का शेषांश.....

असम में यूसीसी लागू होने की राह साफ,...

का केंद्र बन सकता है। समर्थक इसे कानून के समक्ष समानता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बता रहे हैं, जबकि विरोधी इसे व्यक्तिगत और सामुदायिक परंपराओं में हस्तक्षेप के रूप में देख रहे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार शुरुआती चरण में वकीलों, पारिवारिक अदालतों, पंजीकरण कार्यालयों और स्थानीय प्रशासनिक संस्थाओं पर कार्यभार बढ़ सकता है। हालांकि दीर्घकाल में नागरिक अभिलेखों के डिजिटलीकरण से प्रशासनिक दक्षता बढ़ने और पारिवारिक विवादों में कानूनी अस्पष्टता कम होने की संभावना है।मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने कहा है कि यह कानून सामाजिक न्याय, पारदर्शिता और समान अधिकार सुनिश्चित करने के उद्देश्य से लाया गया है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि राज्य के स्वदेशी और जनजातीय समुदायों को प्राप्त संवैधानिक संरक्षण यथावत बनाए रखा जाएगा।फिलहाल यह विधेयक राज्यपाल और राष्ट्रपति की स्वीकृति की प्रतीक्षा में है। मंजूरी मिलने के बाद राज्य सरकार इसके क्रियान्वयन के लिए विस्तृत नियमावली और प्रक्रियाओं को अधिसूचित कर सकती है।

हाइलाकांदी कांग्रेस में गुटीय कलह खुलकर...

कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी शुरू कर दी। सूत्रों के अनुसार, कुछ कार्यकर्ताओं ने उनसे कांग्रेस भवन छोड़ने की मांग भी की।इस घटना ने जिला कांग्रेस के भीतर लंबे समय से चल रहे गुटीय संघर्ष और मतभेदों को एक बार फिर सार्वजनिक कर दिया है। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि चुनावी पराजय के बाद संगठन को मजबूत करने के बजाय यदि आंतरिक विवाद और आरोप-प्रत्यारोप बढ़ते रहे, तो इससे पार्टी की संगठनात्मक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।अमीनुल हक लश्कर ने एकांश युवक कांग्रेस के पदाधिकारियों पर असम के मुख्यमंत्री डॉ हिमंत विश्वशर्मा और पीयूष हजारिका के साथ संपर्क का आरोप लगाते हुए कहा कि कांग्रेस कार्यालय को इन लोगों ने भाजपा का शाखा कार्यालय बना दिया है। उन्होंने बताया कि लोकसभा चुनाव के समय यही लोग कांग्रेस प्रत्याशी हाफिज राशिद चौधरी का विरोध कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इन लोगों के खिलाफ प्रदेश नेतृत्व से अनुशासनात्मक कार्रवाई की सिफारिश करेंगे।घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए जिला युवा कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि कांग्रेस से निर्वाचित एक विधायक का भाजपा कार्यालय जाकर विधानसभा अध्यक्ष से मुलाकात करना कार्यकर्ताओं के बीच कई सवाल खड़े करता है। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं की नाराजगी लंबे समय से बढ़ रही थी, जो शनिवार की बैठक में खुलकर सामने आ गई।उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि प्रदेश नेतृत्व जमीनी स्तर पर लंबे समय से कार्य कर रहे समर्पित कार्यकर्ताओं की उपेक्षा कर बाहरी लोगों को पार्टी में शामिल कर उन्हें चुनावी टिकट प्रदान कर रहा है। उनके अनुसार, चुनाव जीतने के बाद कई नेता संगठन और कार्यकर्ताओं की अपेक्षाओं को नजरअंदाज कर व्यक्तिगत हितों को प्राथमिकता देते हैं।समाचार लिखे जाने तक इस पूरे घटनाक्रम पर जिला कांग्रेस नेतृत्व अथवा एपीसीसी की ओर से कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया था। हालांकि घटना के बाद जिले के राजनीतिक गलियारों में चर्चाओं का दौर तेज हो गया है और कांग्रेस के संगठनात्मक भविष्य तथा नेतृत्व की कार्यशैली को लेकर नए सवाल खड़े होने लगे हैं।

निर्वाचन निधि घोटाले में पदोवनत सर्किल ...

आधार पर कामपुर थाना कांड संख्या ४६/२५ दर्ज किया गया। बाद में संगीता बरठाकुर को इस मामले में जमानत मिल गई थी।हालांकि, मुख्यमंत्री के विशेष सतर्कता प्रकोष्ठ ने अब इस मामले की फाइल को पुनः खोलते हुए जांच तेज कर दी है। जांच के सिलसिले में बरठाकुर को शनिवार को रूपनगर स्थित विजिलेंस कार्यालय में उपस्थित होने का निर्देश दिया गया था।विजिलेंस अधिकारियों ने उनसे कई घंटों तक पूछताछ की। पूछताछ के बाद उन्हें जाने की अनुमति दे दी गई, लेकिन मामले की जांच जारी है और आगे भी कार्रवाई की संभावना जताई जा रही है।उल्लेखनीय है कि इस कथित वित्तीय अनियमितता के कारण राज्य सरकार ने पहले ही संगीता बरठाकुर को पदोवनति कर निचले पद पर भेज दिया था। अब विजिलेंस की पुनः शुरू हुई जांच से मामले में नई जान आ गई है और जिम्मेदारियों के निर्धारण की दिशा में कार्रवाई आगे बढ़ रही है।

डिबूगढ़ में अफ्रीकन स्वाइन फीवर का पता चला;....

प्रोटोकॉल और जिले में सड़क किनारे बिना इजाजत सूअर के मांस की बिक्री पर रोक।प्रशासन ने सभी नगर निकायों, पंचायतों, रेवेन्यू अधिकारियों, जानवरों के डॉक्टरों, पुलिस स्टेशनों और दूसरे संबंधित विभागों को भी निर्देश दिया है कि वे रोकथाम के उपायों को सख्ती से लागू करें और अङ्गकी रोकथाम के बारे में लोगों में जागरूकता फैलाएं।सर्विलांस जोन में, क्लिनिकल, वायरोलॉजिकल और सीरोलॉजिकल सर्विलांस के जरिए सुअरों की आबादी पर कड़ी नजर रखी जाएगी। जंगल विभाग से सलाह करके जंगल के इलाकों के पास मौजूद सुअरों की आबादी पर खास ध्यान दिया जाएगा।ये गांव और इलाके एपिसेंटर के आस-पास १ ज्ञा के इन्फेक्टेड जोन में आते हैं: रोमाई गांव; रोमाई ढए २१९/२१७ छठ्ठ; रोमाई बोंगाली गांव; चेंगालिजान २६ नंबर ऋड. ग्रांट; रोंगपुरिया गांव; चेंगेलिजान गांव; भीमपारा गांव और फुटाहुला गांव१० किलोमीटर के दायरे में ७० से ज़्यादा गांवों और चाय बागानों को निगरानी में रखा गया है। इनमें बशबारी गांव, हराबारी कोंवर गांव, मिरिपोथर गांव, सानिपोटिया गांव, सरूपाथर गांव, मोहनबारी हिंदू गांव, निज लाहोवाल गांव, अग्निपाथर गांव, डांगोरपाथर नंबर १ और २, घागराजन गांव, हबीचुक गांव, हाटकुला गांव, जिलिगुडी गांव, जोकाई टी एस्टेट, तामुलबारी टी एस्टेट, राजगढ़ नंबर १ और २, खारिकटिया गांव, बसमतिया गांव, चिरिंगुला नंबर १ और २, नाहरसाकू गांव, तेलपानी ब्लॉक गांव और आस-पास के कई दूसरे गांव शामिल हैं।अधिकारियों ने सुअर पालने वाले किसानों, व्यापारियों और लोगों से कहा है कि वे जानवरों के डॉक्टर और जलिा अधिकारियों के साथ पूरा सहयोग करें और सुअरों में किसी भी तरह की अजीब बीमारी या मौत की जानकारी तुरंत दें।यह आदेश तुरंत लागू हो गया है और जलिा प्रशासन की अगली सूचना तक लागू रहेगा। अधिकारियों ने इस बात पर जोर दिया है कि इस बीमारी को फैलने से रोकने और इलाके में जानवरों की सुरक्षा के लिए बताए गए उपायों का सख्ती से पालन करना जरूरी है।

शिलचर प्रेस क्लब में पत्रकार राजू दास पर हुए ...

आरोप लगाया कि पुलिस ने अब तक केवल एक आरोपी को गिरफ्तार किया है, जबकि अन्य आरोपी अभी भी गिरफ्त से बाहर हैं। उन्होंने सभी दोषियों की तत्काल गिरफ्तारी और कड़ी सजा सुनिश्चित करने की मांग की। 'बराक वाणी' के संपादक निखिल दास ने घटना का संदर्भ देते हुए कहा कि राजू दास आईपीएल सट्टेबाजी, जुए तथा समाज में व्याप्त विभिन्न भ्रष्ट गतिविधियों के विरुद्ध लगातार समाचार प्रकाशित करते रहे हैं। संभवतः इसी कारण उन्हें निशाना बनाया गया। उन्होंने पुलिस प्रशासन से मामले की गहन जांच कर वास्तविक अपराधियों की पहचान करने और उन्हें कानून के अनुसार दंडित करने की मांग की।बैठक में उपस्थित सभी पत्रकारों ने एक स्वर में इस हमले की निंदा करते हुए प्रशासन से दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की मांग की। बैठक के अंत में शंकर दे ने बताया कि इस संबंध में शीघ्र ही कछार के पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) को एक ज्ञापन सौंपा जाएगा, जिसमें मामले की निष्पक्ष जांच, सभी आरोपियों की गिरफ्तारी तथा त्वरित न्याय की मांग की जाएगी।पत्रकारों ने स्पष्ट कहा कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ पर किसी भी प्रकार का हमला बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और पत्रकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करना प्रशासन की जिम्मेदारी है।

संस्कार केन्द्र संचालिकाओं का अभ्यास वर्ग ....

महत्वपूर्ण इकाई हैं, जहां बालक-बालिकाओं एवं युवाओं में भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों और राष्ट्रभक्ति के संस्कार विकसित किए जाते हैं। उन्होंने मातृशक्ति की भूमिका को समाज एवं राष्ट्र निर्माण का आधार बताते हुए कार्यकर्ताओं से अधिक सक्रियता और समर्पण के साथ कार्य करने का आह्वान किया।कार्यक्रम की अध्यक्षता वर्ग के प्रांत सभापति श्री सचिन कलई ने की। इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद त्रिपुरा प्रांत के प्रांत सम्पादक श्री शंकर राय, प्रांत संगठन मंत्री श्री शशिकांत पांडे, मातृशक्ति प्रांत संयोजिका श्रीमती रोमा सूत्रधार, सह-प्रांत संयोजिका श्रीमती मूनमून चौधरी तथा दुर्गावाहिनी प्रांत संयोजिका श्रीमती निर्मला नौवातिया सहित अनेक पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।अभ्यास वर्ग के दौरान विभिन्न विषयों पर बौद्धिक सत्र, संगठनात्मक चर्चा एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। प्रतिभागी बहनों को संस्कार केन्द्र संचालन, व्यक्तित्व विकास, सामाजिक जागरण तथा संगठन विस्तार से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई।अंत में आयोजकों ने विश्वास व्यक्त किया कि इस प्रशिक्षण से संस्कार केन्द्रों के कार्य को नई गति मिलेगी तथा मातृशक्ति एवं दुर्गावाहिनी की कार्यकर्ती समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी।

बराक घाटी में हाईकोर्ट की स्थायी पीठ की....

हालांकि आम लोगों में यह गलत धारणा फैल गई थी कि इससे केवल वकीलों को लाभ होगा, जिसके कारण आंदोलन को अपेक्षित जनसमर्थन नहीं मिल पाया। उन्होंने स्पष्ट किया कि स्थायी पीठ की स्थापना से सबसे अधिक लाभ आम जनता को होगा।साहा ने बताया कि वर्तमान संघर्ष समिति लगातार लोगों, छात्रों, शैक्षणिक संस्थानों तथा विभिन्न सामाजिक संगठनों के साथ संपर्क कर इस मांग के पक्ष में जनमत तैयार कर रही है। उन्होंने कहा कि डिमा हसाओ जिले के लोगों ने भी इस मांग का समर्थन किया है। अभियान के तहत एकत्रित जनहस्ताक्षरों को आगामी १६ जुलाई को हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश से मुलाकात के दौरान उन्हें सौंपा जाएगा।समिति के कार्यकारी सदस्य एवं वरिष्ठ अधिवक्ता धर्मानंद देव ने पावर पॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से गुवाहाटी हाईकोर्ट की स्थापना के इतिहास तथा स्थायी पीठ की आवश्यकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि विभिन्न राजनीतिक दलों ने भी अपने चुनावी घोषणापत्रों में इस मांग का उल्लेख किया है। स्थायी पीठ बनने से बराक घाटी के लोगों को न्यायिक, आर्थिक और प्रशासनिक स्तर पर व्यापक लाभ मिलेगा।उधारबंद के विधायक राजदीप गोवाला ने इस मांग के प्रति अपना पूर्ण समर्थन व्यक्त करते हुए कहा कि इसके क्रियान्वयन के लिए वे हरसंभव सहयोग करेंगे। उन्होंने संघर्ष समिति के साथ मिलकर आगे की आंदोलनात्मक रणनीति तैयार करने का भी आश्वासन दिया।सभा को राजश्री चक्रवर्ती और असीम दे ने भी संबोधित किया। मंच पर अधिवक्ता शांतनु नायक, प्रसेनजीत देव, समिति के सचिव कमल चक्रवर्ती, डॉ. विभास दे, शिक्षाविद सूर्य कुमार शर्मा, शिलचर बार एसोसिएशन की उपाध्यक्ष एवं समिति की कार्यकारी सदस्य तूहिना शर्मा, सुमिता घोष सहित कई विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे।कार्यक्रम में विभिन्न विद्यालयों और महाविद्यालयों के छात्र-छात्राएं, शिक्षक-शिक्षिकाएं, जीपी सभानेत्री काकली कर, अधिवक्ता तथा स्थानीय गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन अधिवक्ता देवमिता चक्रवर्ती ने किया।

शहीद नायक इंद्र बहादुर सुब्बा को श्रद्धांजलि,....

कर उनके अदम्य साहस, कर्तव्यनिष्ठा और राष्ट्रभक्ति को नमन किया।इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि शहीद इंद्र बहादुर सुब्बा का बलिदान आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत है। देश की एकता, अखंडता और सुरक्षा के लिए दिया गया उनका सर्वोच्च बलिदान सदैव स्मरणीय रहेगा। कार्यक्रम के दौरान शहीद के परिजनों को सम्मानित किया गया तथा उपस्थित लोगों ने दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।समारोह में स्थानीय नागरिकों ने भी बड़ी संख्या में भाग लेकर शहीद के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की और उनके बलिदान को सदैव याद रखने का संकल्प लिया।

खेती की योजनाओं को लागू करने को मजबूत करने के लिए जोरहाट में इंटर-डिपार्टमेंटल मीटिंग हुई

जोरहाट:(अर्णव शर्मा) ३० मई : एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट की तरफ से एक जरूरी इंटर-डिपार्टमेंटल रिव्यू मीटिंग शुक्रवार को जोरहाट डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर ऑफिस के कॉन्फ्रेंस हॉल में डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर जय शिवानी की अध्यक्षता में हुई।मीटिंग का मुख्य मकसद पूरे जिले में खेती से जुडी अलग-अलग सरकारी योजनाओं को असरदार तरीके से लागू करना पक्का करना था। मीटिंग के दौरान, डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर ने खेती के प्रोग्राम की एफिशिएंसी, पहुंच और समय पर पूरा करने के लिए संबंधित डिपार्टमेंट के बीच मजबूत तालमेल की जरूरत पर जोर दिया।चर्चा में सिंचाई, मिट्टी संरक्षण, पशुपालन और वेटनरी सर्विस, और पंचायत और ग्रामीण विकास जैसे डिपार्टमेंट के बीच करीबी सहयोग बनाए रखने की अहमियत पर फोकस किया गया। अधिकारियों ने कहा कि खेती की विकास योजनाओं के चाहे गए नतीजे पाने और किसानों को बेहतर मदद देने के लिए असरदार इंटर-डिपार्टमेंटल तालमेल जरूरी है।मीटिंग में चल रहे खेती के कामों की प्रोग्रेस का रिव्यू किया गया और जमीनी स्तर पर लागू करने की चुनौतियों से निपटने के तरीकों पर बात की गई। मौजूद लोगों में एडिशनल डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर (एग्रीकल्चर), असिस्टेंट डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर, डिस्ट्रिक्ट एग्रीकल्चर ऑफिसर, और जिले में एग्रीकल्चर से जुडी स्कीमों को लागू करने से जुडे अलग-अलग डिपार्टमेंट के हेड शामिल थे।

को-डिस्ट्रिक्ट डेवलपमेंट कमिटी की मीटिंग में महमोरा को-डिस्ट्रिक्ट में डेवलपमेंट प्रोग्रेस का रिव्यू किया गया

महमोरा: (अर्णव शर्मा) ३० मई : महमोरा को-डिस्ट्रिक्ट की मंथली को-डिस्ट्रिक्ट डेवलपमेंट कमिटी की मीटिंग को-डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर के ऑफिस के कॉन्फ्रेंस हॉल में हुई, जिसमें चल रही सरकारी स्कीमों, डेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स और पब्लिक वेलफेयर इनिशिएटिव्स का डिटेल्ड रिव्यू किया गया।मीटिंग में भारत सरकार की विदेश राज्य मंत्री, पबित्रा मार्गेरिटा; ९४-महमोरा लेजिस्लेटिव असेंबली सीट के चङअ सुरुज देहिंगिया; चराईदेउ की डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर नेहा यादव; और महमोरा के को-डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर डिनचेंगफा बोरूआ शामिल हुए। को-डिस्ट्रिक्ट के तहत आने वाले अलग-अलग लाइन डिपार्टमेंट्स के हेड्स ने भी मीटिंग में हिस्सा लिया।सेशन के दौरान, अधिकारियों ने महमोरा को-डिस्ट्रिक्ट में चल रहे अलग-अलग सरकारी प्रोग्राम्स और इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स के इम्प्लीमेंटेशन स्टेटस और प्रोग्रेस का डिटेल्ड रिव्यू किया। चर्चा डेवलपमेंट एक्टिविटीज में तेजी लाने, इंटर-डिपार्टमेंटल कोऑर्डिनेशन को बेहतर बनाने और लोगों को पब्लिक सर्विसेज की असरदार डिलीवरी पक्का करने पर फोकस रही।चल रहे प्रोजेक्ट्स को समय पर पूरा करने, सरकारी फ्लैगशिप स्कीमों की मॉनिटरिंग करने और फील्ड लेवल पर आने वाली चुनौतियों को सुलझाने पर खास जोर दिया गया। अधिकारियों से को-डिस्ट्रिक्ट के विकास के लक्ष्यों को पाने के लिए एफिशिएंसी, अकाउंटेबिलिटी और मिलकर कोशिशें करने को कहा गया।मीटिंग में बात करते हुए, को-डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर डिनचेंगफा बोरूआ ने वेलफेयर और डेवलपमेंट की कोशिशों को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए डिपार्टमेंट्स के बीच प्रोएक्टिव कोऑर्डिनेशन और असरदार मॉनिटरिंग सिस्टम की जरूरत पर जोर दिया।मीटिंग में महमोरा को-डिस्ट्रिक्ट के लोगों की पूरी वेलफेयर और जीवन की क्वालिटी को बेहतर बनाने पर फोकस के साथ, सबको साथ लेकर चलने वाले विकास, अच्छे शासन और बेहतर पब्लिक सर्विस डिलीवरी के लिए एडमिनिस्ट्रेशन के कमिटमेंट को फिर से पक्का किया गया।

गवर्नमेंट डेंटल कॉलेज डिबूगढ़ ने तीन दिन का वर्ल्ड नो टोबैको डे २०२६ कार्यक्रम खत्म किया

डिबूगढ: (अर्णव शर्मा) ३० मई : गवर्नमेंट डेंटल कॉलेज, डिबूगढ़ के पब्लिक हेल्थ डेंटिस्ट्री डिपार्टमेंट ने ङ्गअपील को सामने लाना - निकोटीन और टोबैको की लत का मुकाबला करनाङ्ख थीम के तहत वर्ल्ड नो टोबैको डे २०२६ का तीन दिन का कार्यक्रम सफलतापूर्वक खत्म किया। इस पहल में स्टूडेंट्स, फैकल्टी मेंबर्स, हेल्थकेयर प्रोफेशनल्स, मरीजों, कैंसर सर्वाइवर्स और आम लोगों ने एक्टिव हिस्सा लिया, सभी ने टोबैको छोड़ने और पब्लिक हेल्थ अवेयरनेस को बढ़ावा देने में एक साथ काम किया। इस कार्यक्रम की शुरुआत डिबूगढ़ के डॉन बॉस्को सीनियर सेकेंडरी स्कूल में ओरल हेल्थ और टोबैको अवेयरनेस कैंप से हुई, जहाँ स्टूडेंट्स को टोबैको खाने के नुकसानदायक असर और अच्छी ओरल हाइजीन बनाए रखने की अहमियत के बारे में बताया गया। दूसरे दिन, एक अवेयरनेस रैली निकाली गई, जिसके बाद असम मेडिकल कॉलेज के जझऊ कॉम्प्लेक्स में एक स्ट्रीट प्ले हुआ। शानदार परफॉर्मेंस के जरिए, स्टूडेंट्स ने टोबैको की लत के खतरों को बताया और लोगों को टोबैको-फ्री लाइफस्टाइल अपनाने के लिए बढ़ावा दिया। इस प्रोग्राम ने मरीजों, अटेंडेंट और विजिटर का काफी ध्यान खींचा, जिससे कम्युनिटी में सीधे एंटी-टोबैको मैसेज फैलाने में मदद मिली। आखिरी दिन गवर्नमेंट डेंटल कॉलेज ऑडिटोरियम में एक फॉर्मल प्रोग्राम हुआ। इस इवेंट में D.H.S.K कॉलेज, डिबूगढ़ के प्रिंसिपल डॉ. शशि कांता सैकिया चीफ गेस्ट के तौर पर शामिल हुए। गेस्ट ऑफ ऑनर में डञ्चज डॉ. स्मिता गोहेन और तिनसुकिया मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के सुपरिंटेंडेंट डॉ. मुकुल शर्मा शामिल थे। गवर्नमेंट डेंटल कॉलेज, डिबूगढ़ की प्रिंसिपल डॉ. चंदना कलिता ने खास मेहमानों के साथ मिलकर तंबाकू कंट्रोल के कड़े उपायों और लगातार पब्लिक अवेयरनेस कैंपेन की जरूरत पर जोर देते हुए भाषण दिए। प्रोग्राम की एक खास बात कैंसर सर्वाइवर का हिस्सा बनना था, जिनके पर्सनल एक्सपीरियंस ने तंबाकू के इस्तेमाल के गंभीर हेल्थ नतीजों को बताया। उनकी मौजूदगी ने अवेयरनेस कैंपेन को एक मजबूत और इमोशनल पहलू दिया, जिससे मौजूद लोगों को तंबाकू की लत के खिलाफ मजबूती से खड़े होने की प्रेरणा मिली।अलग-अलग बैच के स्टूडेंट्स ने स्लोगन राइटिंग, फोटोग्राफी, रील मेकिंग और शॉर्ट फिल्म प्रोडक्शन जैसे कॉम्पिटिशन में एक्टिवली हिस्सा लिया, और तंबाकू छोड़ने और पब्लिक हेल्थ पर फोकस करते हुए इनोवेटिव और सोचने पर मजबूर करने वाला कंटेंट बनाया। इवेंट के दौरान एंट्रीज दिखाई गई और उन्हें बहुत तारीफ मिली। विनर्स और पार्टिसिपेंट्स को इस काम में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया।प्रोग्राम में एक दिलचस्प डांस परफॉर्मेंस और तंबाकू की लत के फिजिकल, इमोशनल और सोशल असर को दिखाने वाला एक जबरदस्त स्किट भी था। इन परफॉर्मेंस ने कैंपेन के मैसेज को असरदार तरीके से मजबूत किया और ऑडियंस पर गहरी छाप छोड़ी।तीन दिन का यह प्रोग्राम स्टूडेंट्स, फैकल्टी मेंबर्स, हेल्थकेयर प्रोफेशनल्स, कैंसर सर्वाइवर्स और कम्युनिटी मेंबर्स के एक हेल्दी और तंबाकू-फ्री समाज बनाने के लिए मिलकर काम करने के वादे के साथ खत्म हुआ।

डिबूगढ़ स्कूल ने टोबैको-फ्री इंस्टीट्यूशन चैलेंज में नेशनल सम्मान जीता

डिबूगढ:(अर्णव शर्मा) ३० मई : असम और डिबूगढ़ जिले का नाम रोशन करते हुए, तेंगाखाट एजुकेशन ब्लॉक के तहत उत्तर जालोनी लोअर प्राइमरी स्कूल, दुलियाजान ने ToFEI (टोबैको-फ्री एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन) - स्कूल चैलेंज: टोबैको-फ्री जेनरेशन की ओर) में नेशनल लेवल पर दूसरा स्थान हासिल किया।यह प्रतिष्ठित नेशनल फेलिसिटेशन प्रोग्राम २९ मई, २०२६ को नई दिल्ली के डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में हुआ था और इसे शिक्षा मंत्रालय के तहत स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग ने आयोजित किया था। स्कूल को टोबैको-फ्री एजुकेशनल माहौल को बढ़ावा देने में उसकी शानदार कोशिशों के लिए एक ट्रॉफी और २५,००० रुपये का कैश प्राइज दिया गया। हेड टीचर नीरूमोनी दत्ता और असिस्टेंट टीचर बीना गोगोई ने समारोह में भाग लिया और इंस्टीट्यूशन की ओर से अवॉर्ड लिया।अधिकारियों ने नेशनल प्रोग्राम के लिए असम की टीम को लीड करने वाले खानिंद्र दास द्वारा दिए गए गाइडेंस और सपोर्ट की सराहना की। इस बीच, समग्र शिक्षा असम ने घोषणा की कि असम के कुल पांच स्कूलों को ToFEI स्कूल चैलेंज में नेशनल पहचान मिली है। उत्तर जालोनी ङझ स्कूल की शानदार कामयाबी के अलावा, गोलपारा, गुवाहाटी, नलबाडी और सिबसागर के स्कूलों को सांत्वना पुरस्कार दिए गए।यह कामयाबी असम के हेल्दी, सुरक्षित और तंबाकू-मुक्त एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन बनाने के लगातार कमिटमेंट को दिखाती है और एक हेल्दी आने वाली पीढ़ी को आगे बढ़ाने के लिए राज्य के डेडिकेशन को दिखाती है।

सॉल्ट बूक एकेडमी में एयर पॉल्यूशन और वेस्ट मैनेजमेंट पर अवेयरनेस प्रोग्राम हुआ

डिबूगढ़. (अर्णव शर्मा) ३० मई : : युवा स्टूडेंट्स में एनवायरनमेंट के बारे में अवेयरनेस बढ़ाने की दिशा में एक अहम कदम उठाते हुए, डिबूगढ़ म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन (ऊ्चउ) ने सृष्टि और लायंस क्लब ऑफ डिबूगढ़ एक्सीलेंस के साथ मिलकर वार्ड नंबर ३ में सॉल्ट बूक एकेडमी में एयर पॉल्यूशन और साइंटिफिक वेस्ट मैनेजमेंट पर एक अवेयरनेस प्रोग्राम किया।इस प्रोग्राम का मकसद स्टूडेंट्स को एनवायरनमेंट बचाने, सस्टेनेबल वेस्ट मैनेजमेंट के तरीकों और गलत तरीके से वेस्ट फेंकने से पब्लिक हेल्थ और एनवायरनमेंट पर पड़ने वाले बुरे असर के बारे में बताना था।

इंटरैक्टिव सेशन के दौरान, रिसोर्स पर्सन ने बताया कि कैसे खुले में वेस्ट जलाना एयर पॉल्यूशन का एक बड़ा कारण है, जिससे एटमॉस्फियर में नुकसानदायक पॉल्यूटेंट निकलते हैं। उन्होंने सोर्स पर ही वेस्ट को सही तरीके से अलग करने की अहमियत पर जोर दिया, ताकि डिस्पोजल या जलाने की जरूरत वाले वेस्ट की मात्रा को कम किया जा सके।स्टूडेंट्स को घर के वेस्ट को तीन कैटेगरी में अलग करने के तरीके के बारे में बताया गया्गीला वेस्ट, सूखा वेस्ट और सैनिटरी खतरनाक वेस्ट। स्पीकर्स ने बताया कि असरदार तरीके से अलग करने से न सिर्फ रीसाइक्लिंग और रिसोर्स रिकवरी में मदद मिलती है, बल्कि यह एक साफ और हेल्दी एनवायरनमेंट को भी सपोर्ट करता है। प्रोग्राम में बायोडिग्रेडेबल कचरे को मैनेज करने के लिए इको-फ्रेंडली सॉल्यूशन के तौर पर कम्पोस्टिंग के फायदों पर भी फोकस किया गया। पार्टिसिपेंट्स ने सीखा कि कैसे कम्पोस्टिंग से म्युनिसिपल वेस्ट कलेक्शन और डिस्पोजल सिस्टम पर बोझ काफी कम हो सकता है और साथ ही कीमती ऑर्गेनिक खाद भी बन सकती है। अधिकारियों ने स्टूडेंट्स को कलेक्शन के बाद म्युनिसिपल वेस्ट मैनेजमेंट में शामिल प्रोसेस के बारे में और जानकारी दी, और वेस्ट ट्रीटमेंट और डिस्पोजल के लिए अपनाए गए साइंटिफिक तरीकों के बारे में जानकारी दी।अवेयरनेस ड्राइव के हिस्से के तौर पर, स्टूडेंट्स के बीच जानकारी वाले पैम्फलेट बांटे गए। लगभग ३०० स्टूडेंट्स ने प्रोग्राम में हिस्सा लिया और एक्टिवली चर्चाओं में शामिल हुए, जिससे एनवायरनमेंट प्रोटेक्शन और सस्टेनेबल लिविंग प्रैक्टिस में उनकी गहरी दिलचस्पी दिखाई दी।ऑर्गनाइजर्स ने उम्मीद जताई कि इस तरह की पहल स्टूडेंट्स को जिम्मेदार एनवायरनमेंटल गार्ड बनने और एक साफ, ग्रीन और ज्यादा सस्टेनेबल भविष्य बनाने में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करेगी।

हिंगरीजन टी एस्टेट स्कूल में पीरियड्स हाइजीन डे और महिलाओं की खास मीटिंग हुई

सोनारी:(अर्णव शर्मा) ३० मई : पीरियड्स हाइजीन डे के मौके पर, डिस्ट्रिक्ट महिला और बाल विकास डिपार्टमेंट, चराइदेउ ने संकल्प: हब फॉर एम्पावरमेंट ऑफ वीमेन की पहल के तहत, हिंगरीजन टी एस्टेट आदर्श विद्यालय में एक खास अवेयरनेस प्रोग्राम और महिलाओं की मीटिंग रखी।प्रोग्राम की शुरुआत चीफ सुपरवाइजर अनिमा बोरगोहेन के वेलकम एड्रेस से हुई। इवेंट में मौजूद टीनएज लडकियों को एड्रेस करते हुए, कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर सृष्टि सिखा गोगोई ने पीरियड्स हेल्थ पर एक जानकारी देने वाला सेशन दिया, जिसमें पीरियड्स के दौरान हाइजीन, सही देखभाल और सावधानियों के महत्व पर जोर दिया गया। खुमताई गांव पंचायत प्रेसिडेंट सुस्मिता चाबरी ने भी लोगों को एड्रेस किया और महिलाओं की हेल्थ से जुडी समस्याओं के लिए ज़्यादा अवेयरनेस और सपोर्ट की जरूरत पर जोर दिया।इस मौके पर, प्रिंसिपल भीम्बोर पतिरी ने स्टूडेंट्स से पीरियड्स के दौरान सही हाइजीन बनाए रखने की अपील की और अच्छी हेल्थ और पूरी तरह से ठीक रहने के लिए बैलेंस्ड न्यूट्रिशन और रेगुलर फिजिकल एक्टिविटी की भूमिका पर जोर दिया।स्कूल कोऑर्डिनेटर दिलीप बोरा ने पीरियड्स को एक नेचुरल बायोलॉजिकल प्रोसेस बताया और समाज से इस विषय से जुडी पुरानी सोच और गलतफहमियों को दूर करने की अपील की। ??उन्होंने लडकियों को हेल्दी आदतें अपनाने और बिना किसी झिझक के पीरियड्स की हेल्थ पर खुलकर बात करने के लिए बढ़ावा दिया।डिस्ट्रिक्ट विमेन एंड चाइल्ड डेवलपमेंट डिपार्टमेंट की ऑफिसर लिपिका दत्ता ने पीरियड्स हाइजीन मैनेजमेंट पर बात की और बाल विवाह के बुरे नतीजों के बारे में भी अवेयरनेस बढ़ाई। अवेयरनेस प्रोग्राम को डिस्ट्रिक्ट प्रोग्राम असिस्टेंट जयंत कुमार गोगोई ने कोऑर्डिनेट किया, जबकि नीना ज्योति चांगमई ने इवेंट को एंकर किया।महिला पार्टिसिपेंट्स के साथ एक स्पेशल इंटरेक्शन सेशन भी रखा गया, जिसमें उन्हें प्रभावित करने वाले अलग-अलग सोशल और डेवलपमेंटल मुद्दों पर चर्चा की गई। उनकी चिंताओं और शिकायतों को जरूरी एक्शन के लिए खुमताई गांव पंचायत प्रेसिडेंट के ध्यान में लाया गया।प्रोग्राम में स्टूडेंट्स, टीचर्स, पेरेंट्स, आंगनवाडी वर्कर्स, जीविका सखियों, सेल्फ-हेल्प ग्रुप्स (ङक्रद्ब) के मेंबर्स और कम्युनिटी की लोकल महिलाओं ने हिस्सा लिया, जो पीरियड्स की हेल्थ अवेयरनेस, विमेन एम्पावरमेंट और सोशल वेल-बीइंग को बढ़ावा देने के लिए एक साथ कमिटमेंट को दिखाता है।

राष्ट्रीय रक्षा यूनिवर्सिटी में चौथी नेशनल आर्मरेसलिंग और पैरा आर्मरेसलिंग चैंपियनशिप शुरू हुई

अहमदाबाद:(अर्णव शर्मा) ३० मई : राष्ट्रीय रक्षा यूनिवर्सिटी (RRU) के गांधीनगर कैंपस में चौथी नेशनल आर्मरेसलिंग और पैरा आर्मरेसलिंग चैंपियनशिप २०२६ का उद्घाटन हुआ, जो देश में अब तक हुए सबसे बड़े आर्मरेसलिंग इवेंट्स में से एक की शुरुआत है।राष्ट्रीय रक्षा यूनिवर्सिटी, आर्मरेसलिंग फेडरेशन ऑफ गुजरात और पीपल्स आर्मरेसलिंग फेडरेशन इंडिया (PAFI) द्वारा मिलकर आयोजित यह चैंपियनशिप २९ मई से २ जून तक हो रही है और इसमें भारत के २७ राज्यों के २,००० से ज़्यादा एथलीट हिस्सा लेंगे।उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए, ठ्ठण के वाइस-चांसलर प्रो. (डॉ.) बिमल एन. पटेल ने ग्लोबल स्पोर्ट्स में भारत की बढ़ती अहमियत पर जोर दिया और देश के विकास, अनुशासन और युवाओं को मजबूत बनाने में स्पोर्ट्स की भूमिका पर जोर दिया। इस इवेंट में रजिस्ट्रार डॉ. धर्मेश के. प्रजापति, प्रो-वाइस चांसलर प्रो. (डॉ.) कल्पेश एच. वांद्रा, स्कूल ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स के डायरेक्टर यश शर्मा, स्पोर्ट्स ट्रेनिंग ऑफिसर कल्पेश शर्मा और यूनिवर्सिटी के दूसरे सीनियर अधिकारी शामिल हुए। एक्टर सुनील शेट्टी ने एक खास मैसेज में युवाओं को स्पोर्ट्स में एक्टिव रूप से हिस्सा लेने और फिटनेस, डिसिप्लिन और पक्के इरादे को बढ़ावा देने वाले नेशनल प्लेटफॉर्म का फायदा उठाने के लिए हिम्मत दी। उन्होंने एक मजबूत और हेल्दी देश बनाने में स्पोर्ट्स की अहमियत पर जोर दिया।इस चैंपियनशिप को आर्मरेसलिंग कम्युनिटी के जाने-माने लोगों का भी सपोर्ट मिला है, जिसमें PAFI प्रेसिडेंट प्रीति झंगियानी और प्रो पंजा लीग के को-फाउंडर प्रवीण डबास के साथ-साथ गुजरात के आर्मरेसलिंग एसोसिएशन के रिप्रेजेंटेटिव भी शामिल हैं।अधिकारियों ने बताया कि हिस्सा लेने का लेवल भारत में आर्मरेसलिंग की तेजी से हो रही ग्रोथ को दिखाता है। मौजूदा एडिशन केरल के त्रिशूर में हुई पिछली नेशनल चैंपियनशिप से भी आगे है, जिसमें २५ राज्यों के लगभग १,७०० एथलीटों ने हिस्सा लिया था। इस साल का इवेंट, जिसमें २७ राज्यों के २,००० से ज़्यादा कॉम्पिटिटर हिस्सा ले रहे हैं, पहुँच और कॉम्पिटिटिव जुड़ाव दोनों में एक बड़ा विस्तार दिखाता है। चैंपियनशिप को होस्ट करने से ठ्ठण की रेप्युटेशन और मजबूत होती है, जो बड़े स्पोर्टिंग इवेंट्स को ऑर्गनाइज करने में सक्षम वेन्यू के तौर पर है। यह इनिशिएटिव २०२९ में वर्ल्ड पुलिस और फायर गेम्स को होस्ट करने की यूनिवर्सिटी की तैयारियों से जुड़ा है और भारत के स्पोर्टिंग लैंडस्केप में गुजरात की बढ़ती भूमिका को सपोर्ट करता है, जिसमें अहमदाबाद का २०३६ ओलंपिक गेम्स को होस्ट करने का एम्बिशन भी शामिल है।इस चैंपियनशिप से देश भर के एथलीट्स के लिए एक बड़ा प्लेटफॉर्म मिलने की उम्मीद है, साथ ही यह भारत में स्पोर्टिंग इंफ्रास्ट्रक्चर, पार्टिसिपेशन और एक्सीलेंस को बढ़ाने के बड़े विजन में भी योगदान देगा।

समाजसेवी अबुल हुसैन से मिले जीपी अध्यक्ष बिमल नाथ

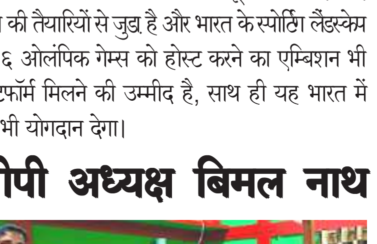

रामकृष्णनगर, ३० मई। दुल्लभछड़ा विकास खंड के अंतर्गत वेटारबंद जीपी के ९ नंबर वार्ड स्थित मनुष्यपुर गांव के प्रतिष्ठित समाजसेवी अबुल हुसैन से जीपी अध्यक्ष बिमल नाथ ने उनके आवास पर जाकर मुलाकात की तथा उनके स्वास्थ्य का हालचाल जाना।इस अवसर पर गोपाल वैष्णव, आइनुल हक, राजू नाथ, बबला दत्ता, राखाल बर्मन, अपु लाल दे, शुभजीत देव, दिलीप सिन्हा, निधु सूत्रधर सहित कई स्थानीय गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।बिमल नाथ ने कहा कि पंचायत क्षेत्र के सभी समुदायों को साथ लेकर विकास कार्यों को आगे बढ़ाना उनकी प्राथमिकता है। उन्होंने सामाजिक सौहार्द, भाईचारे और गरीब-वंचित लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिए निरंतर कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया।

युवक से मारपीट के आरोप में गुवाहाटी के पुलिस अधिकारी के खिलाफ जांच का आदेश

गुवाहाटी, ३० मई, (हि.स.)। गुवाहाटी के सतगांव थाना में तैनात पुलिस अधिकारी जयंत राजखोवा के खिलाफ एक युवक से कथित दुर्व्यवहार और मारपीट के मामले में जांच के आदेश दिए गए हैं। आरोप है कि अधिकारी ने बिना किसी उचित कारण के राजधानी की सडक़ पर एक युवक की सार्वजनिक रूप से पिटाई की।पीडित युवक के अनुसार, यह घटना चार दिन पहले हुई थी। आरोप है कि पुलिस अधिकारी ने युवक को रास्ते में रोककर अपमानजनक भाषा का प्रयोग किया, धमकाया और उसके साथ मारपीट की। युवक ने दावा किया कि अधिकारी ने उसे यह कहकर डराने की कोशिश की कि यदि उसने घटना के बारे में किसी को बताया तो उसका एनकाउंटर कर दिया जाएगा।मामले में यह भी आरोप लगाया गया है कि अधिकारी ने सडक़ पर युवक के साथ गाली-गलौज करते हुए उसकी बेरहमी से पिटाई की। घटना का कथित सीसीटीवी फुटेज और शिकायत सामने आने के बाद मामला चर्चा का विषय बन गया है।पीडित युवक ने घटना के संबंध में सतगांव थाना में प्राथमिकी (एफआईआर) दर्ज कराई थी। शिकायत के आधार पर संबंधित पुलिस अधिकारी के खिलाफ जांच शुरू करने के निर्देश दिए गए हैं।घटना को लेकर विभिन्न सामाजिक और नागरिक संगठनों में नाराजगी देखी जा रही है।

असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा के खिलाफ दर्ज होगी FIR? कोर्ट ने दिल्ली पुलिस से मांगा जवाब

गुवाहाटी (एर्जे) ३० मई: असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा पर कथित तौर पर हेट स्पीच के कई बार आरोप लग चुके हैं, लेकिन अब मामला गंभीर होता नजर आ रहा है. असम सीएम के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग की गई है. सामाजिक कार्यकर्ता हर्ष मंदार ने दिल्ली की साकेत कोर्ट में अर्जी दाखिल कर सीएम सरमा के खिलाफ कथित हेट स्पीच को लेकर ऋखठ दर्ज करने की मांग की है.साकेत कोर्ट ने असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा और दिल्ली पुलिस को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है. कोर्ट के एडिशनल सेशन जज ने हिमंत को नोटिस जारी करते हुए मामले की अगली सुनवाई १५ जुलाई तय की है. दरअसल हर्ष मदार ने पहले मजिस्ट्रेट कोर्ट में शिकायत दाखिल कर कहा था कि असम के डिब्रूगढ.जिले के डिगबोई में

२७ जनवरी को दिए गए एक भाषण में हिमंत ने मुस्लिम वोटरों को लेकर विवादित बयान दिए थे.

क्या है पूरा मामला -आरोप है कि हिमंत बिस्वा सरमा ने कहा था कि चार से पांच लाख मियां वोटरों के नाम मतदाता सूची से हटाए जाएंगे. साथ ही लोगों से मुस्लिमों को परेशान करने की बात भी कही गई थी, जिससे वे असम छोड.दें. याचिका में दावा किया गया कि मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि हम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि वे असम में वोट न डाल सकें. याचिकाकर्ता ने इन बयानों को धार्मिक और सामुदायिक वैमनस्य फैलाने वाला बताते हुए FIR दर्ज करने की मांग की.याचिकाकर्ता भारतीय न्याय संहिता की कई धाराओं के तहत मामला दर्ज करने की मांग की, जिनमें अलग-अलग समुदायों के बीच दुश्मनी फैलाना, धार्मिक भावनाएं भडक़ाना और राष्ट्रीय एकता को नुकसान पहुंचाने जैसे आरोप शामिल हैं. हालांकि इससे पहले ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट भानु प्रताप सिंह ने याचिकाकर्ता की याचिका खारिज कर दी थी.कोर्ट ने कहा था कि कथित बयान दिल्ली की अदालत के अधिकार क्षेत्र में नहीं दिए गए थे और ऐसा कोई ठोस सबूत भी पेश नहीं किया गया जिससे यह साबित हो कि दिल्ली में इन बयानों से तनाव या हिंसा की स्थिति बनी. इसके बाद याचिकाकर्ता ने सेशन कोर्ट का रुख किया. उनके वकील ने दलील दी कि भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता के तहत किसी भी संज्ञेय अपराध की जानकारी देश के किसी भी पुलिस स्टेशन में दी जा सकती है. इसे जीरो FIR की व्यवस्था बताया गया जिसमें अपराध कहीं भी हुआ हो शिकायत दर्ज की जा सकती है. याचिका में गृह मंत्रालय की जीरो एफआईआर और ई FIR से जुडी एसओपी का भी हवाला दिया गया. हालांकि साकेत कोर्ट मामले पर १५ जुलाई को आगे सुनवाई करेगी.

फूड, पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन और कंज्यूमर अफेयर्स डिपार्टमेंट ने सिबसागर में एनफोर्समेंट ड्राइव तेज की

सिबसागर:(अर्णव शर्मा) ३० मई : असम सरकार के निर्देशों पर काम करते हुए, सिबसागर में फूड, पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन और कंज्यूमर अफेयर्स डिपार्टमेंट के अधिकारियों ने जरूरी चीजों की उपलब्धता पक्का करने और गलत ट्रेड प्रैक्टिस को रोकने के लिए पूरे जिले में खुले मार्केट की इंटेंसिव इंस्पेक्शन जारी रखी है।डिपार्टमेंट जरूरी चीजों की बनावटी कमी को रोकने और यह पक्का करने के लिए रेगुलर मॉनिटरिंग कर रहा है कि न तो होलसेल और न ही रिटेल ट्रेडर कंज्यूमर्स से बहुत ज्यादा या गलत कीमतें वसूलें। चल रहे एनफोर्समेंट ड्राइव के हिस्से के तौर पर, अधिकारी सरकारी नियमों का पालन वेरिफाई करने के लिए मोटर स्पिरिट और हाई-स्पीड डीजल रिटेल आउटलेट्स के साथ-साथ ड्डत्रऋ डिस्ट्रीब्यूशन सेंटर्स की भी इंस्पेक्शन कर रहे हैं।हाल ही में एक ऑपरेशन में, डिपार्टमेंट के अधिकारियों ने गौरीसागर में एक चाय की दुकान से १८० लीटर डीजल और ८० लीटर पेट्रोल जब्त किया। कहा जा रहा है कि फ्यूल को गैर-कानूनी तरीके से स्टोर और बेचा जा रहा था, जिसके बाद अधिकारियों ने तुरंत एक्शन लिया।डिपार्टमेंट ने लोगों से अपील की है कि वे सतर्क रहें और गैर-कानूनी कामों, जमाखोरी, ब्लैक मार्केटिंग या जरूरी चीजों के ज्यादा दाम लेने की किसी भी घटना की रिपोर्ट करें। लोगों से अपील की गई है कि वे तुरंत शिवसागर में फूड, पब्लिक डिस्ट्रब्यूशन और कंज्यूमर अफेयर्स ब्रांच को बताएं ताकि सही कानूनी कार्रवाई की जा सके।अधिकारियों ने दोहराया कि कंज्यूमर के हितों की रक्षा करने और पूरे जिले में जरूरी चीजों की सप्लाई और डिस्ट्रीब्यूशन में ट्रांसपेरेंसी बनाए रखने के लिए कडी निगरानी और लागू करने के उपाय जारी रहेंगे।

दुमदुमा के ऐतिहासिक राममंदिर में भव्य प्रतिमाओं का स्वागत, जल्द होगी प्राण प्रतिष्ठा।

दुमदुमा प्रेरणा भारती २९ मई : दुमदुमा के सबसे प्राचीन एवं पौराणिक मंदिरों मे एक कुमारी पट्टी स्थित श्री श्री नरसिंह ठाकुर बाडी में इन दिनों भक्तिमय वातावरण बना हुआ है। मंदिर के नवनिर्मित भव्य स्वरूप में भगवान श्रीराम दरबार, शिव परिवार एवं भगवान गणेश का विग्रह गाजे-बाजे और श्रद्धालुओं की भारी उपस्थिति के बीच बडहापजान स्थित काली मंदिर से मुर्तियों का आगवानी करते हुए शहर होते हुए फुलों से सुसज्जित वाहन में नव निर्मित मंदिर तक लाया गया। मंदिर परिसर में उत्साहित भक्तों की भीड.उमड.पडी तथा पूरे क्षेत्र में उत्साह का माहौल देखा गया।जानकारी के अनुसार, इस ऐतिहासिक मंदिर का तीसरी बार जीर्णोद्धार किया गया है। मंदिर निर्माण का कार्य अंतिम चरण में पहुंच चुका है और काशी के विद्वान ब्राह्मणों द्वारा शुभ मुहूर्त निर्धारण के बाद यहां विधिवत प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन किया जाएगा।मंदिर के इतिहास को लेकर स्थानीय लोगों ने बताया कि वर्ष १८८९ में नगा साधुओं द्वारा इस मंदिर की स्थापना की गई थी। कहा जाता है कि नगा साधु अष्टधातु की मूर्तियों को बैलगाडी से लेकर दुमदुमा

पहुंचे थे और यहां उनकी स्थापना की थी। वर्ष १९५० के प्रलयकारी भूकंप में मंदिर क्षतिग्रस्त हो गया था, जिसके बाद दुमदुमा के धर्म परायण लोगों द्वारा मंदिर का पुनर्निर्माण कराया गया था।समय के साथ मंदिर पुनः जर्जर होने लगा, जिसके बाद दुमदुमा के धर्मप्रेमी युवाओं एवं स्थानीय श्रद्धालुओं के सहयोग से मंदिर का दुबारा नये आधुनिक रूप से भव्य निर्माण कराया गया। अब मंदिर का नया स्वरूप श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। राजस्थान के जयपुर के प्रतिष्ठान से मंगल दाता श्री गणेश की प्रतिमा ,राम दरबार एवं भगवान विष्णु की पीतल की प्रतिमा मुरादाबाद तथा शिव परिवार की विग्रह बलिया से आगमन पर प्रतिमाओं को वैदिक मंत्रोच्चारण से स्वागत किया गया। गौरतलब हो जो नव निर्मित मंदिर में नरमेदश्वर नदी से प्रयुक्त शिवलिंग स्थापित किया जाएगा । धार्मिक मान्यता है कि नर्मदा नदी से निकली हुई पत्थर में भगवान शिव का स्वरूप मौजूद रहता है। यह नरमेदश्वर शिवलिंग सार्वजनिक तौर पर इस अंचल में प्रथम है।

प्रतिमाओं के आगमन के दौरान मंगल भक्ति गीत, ढोल-नगाडों और जय श्रीराम के उद्घोष से पूरा वातावरण भक्तिमय हो उठा। श्रद्धालुओं का कहना है कि इस ऐतिहासिक मंदिर के पुनर्निर्माण से दुमदुमा की धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहचान को नई मजबूती मिली है। भक्तों की इन्तजार की बेला समाप्त होने की कगार पर है बहुत जल्द इस एतिहासिक मंदिर में प्रभु के दर्शनाभिलाषी भक्तों को पूजा अर्चना करने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

शब्दाक्षर लखीमपुर-खीरी,उ.प्र. का साहित्यिक अनुष्ठान सम्पन्न

कोलकाता ३० मई : विगत दिवस गोला गोकर्णनाथ में माँ मंगलादेवी के नवीन भवन में शब्दाक्षर संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष रविप्रताप सिंह की प्रधानता में तथा वरिष्ठ कवि बेनीराम अंजान संरक्षक शब्दाक्षर लखीमपुर-खीरी की अध्यक्षता में एक विशाल कवि सम्मेलन हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि सन्तोष 'हिन्दवी' विशिष्ट अतिथि माता प्रसाद तिवारी, गौरव सिंह 'विकास' व द्वारिका प्रसाद रस्तोगी एवं शशिकान्त मिश्र 'शशि' रहे। संचालन जिला सचिव आलोक तिवारी ने किया। सर्वप्रथम अतिथियों ने सरस्वती पूजन व गोलोकवासी संत कुमार बाजपेयी को श्रद्धासुमन अर्पित किया। आयोजक जिलाध्यक्ष डॉ.वीरेश बाजपेयी ने कार्यक्रम के आरम्भ में राष्ट्रीय अध्यक्ष रवि प्रताप सिंह को शाल ओढ़ा कर, व सम्मान पत्र भेंट कर समादृत किया। पंडित बृजेश तिवारी ने मंत्रों से पूजन सम्पन्न कराया तथा सरस्वती वंदना की। उक्त अवसर पर नगर अध्यक्ष न. पा. परिषद विजय शुक्ल 'रिंकू' ने पधार कर कार्यक्रम को भव्यता प्रदान की। इस कार्यक्रम में श्याम मोहन मिश्र की 'पुस्तक 'दादा जी की मूंछ' का लोकार्पण राष्ट्रीय अध्यक्ष के करकमलों से सम्पन्न हुआ। वरिष्ठ कवि सुरेश संदेश एवं वेदप्रकाश अग्निहोत्री ने अपनी-अपनी पुस्तकें राष्ट्रीय अध्यक्ष शब्दाक्षर रवि प्रताप सिंह को भेंट कीं। इस अवसर पर प्रमोद गुप्ता भोले, भगवती प्रसाद बेधडक़, श्रीकान्त तिवारी, रामकुमार गुप्ता, गेंदनलाल कनोजिया, मुनेंद्र मंजुल, श्याम किशोर, रविसुत शुक्ल, सुधीर अवस्थी, यतीश शुक्ल, आदि अनेक कवियों ने अपनी रचनाओं से सभी का मन मोह लिया। शाम से शुरू होकर देर रात्रि तक चले इस सारश्वत आयोजन में कार्यक्रम अध्यक्ष बेनीराम अंजान जी के उदबोधन पश्चात जिला अध्यक्ष वीरेश बाजपेयी ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त करते हुए अगले आयोजन तक के लिए सभा विसर्जित की। इस अवसर पर नगर के अनेक गणमान्य श्रोता उपस्थित रहे।

खोंसा में APSTS गोल्डन जुबली सेलिब्रेशन शुरू, अरुणाचल ने पहली रेस्टोरेंट बस और नई लग्जरी बसें लॉन्च कीं

खोंसा (अरुणाचल प्रदेश)(अर्णव शर्मा) ३० मई : : अरुणाचल प्रदेश स्टेट ट्रांसपोर्ट सर्विसेज.(APSTS) के ५० साल पूरे होने पर गोल्डन जुबली सेलिब्रेशन शनिवार को खोंसा में धूमधाम से शुरू हुआ, जिसमें राज्य भर में सर्विस और कनेक्टिविटी के पांच दशकों का जश्न मनाया गया।

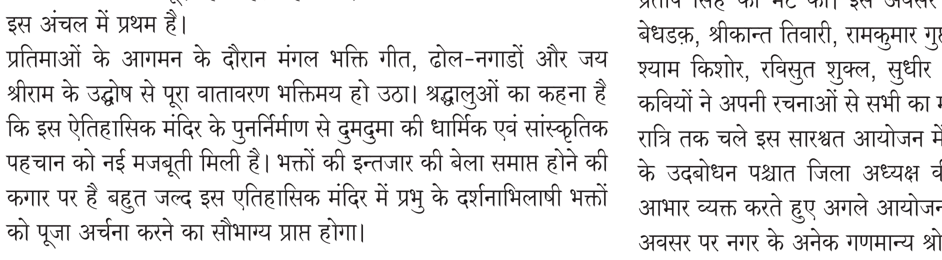

यह तीन दिन का इवेंट APSTS के ऐतिहासिक सफर की याद में है, जिसने १९७५ में खोंसा से सिर्फ.दो बसों के साथ ऑपरेशन शुरू किया था और तब से यह अरुणाचल प्रदेश और आस-पास के इलाकों में दूर-दराज के इलाकों को जोडऩे वाला एक जरूरी पब्लिक ट्रांसपोर्ट नेटवर्क बन गया है।सेलिब्रेशन के हिस्से के तौर पर, डिप्टी चीफ.मिनिस्टर चोवना मीन ने राज्य की पहली रेस्टोरेंट बस, एक रोड सेफ्टी अवेयरनेस बस और लग्जरी बसों के एक नए फ्लीट को हरी झंडी दिखाई। इस पहल का मकसद पब्लिक ट्रांसपोर्ट को मॉडर्न बनाना, रोड सेफ्टी अवेयरनेस को बढावा देना और पूरे राज्य में पैसेंजर के आराम और ट्रैवल एक्सपीरियंस को बेहतर बनाना है।उद्घाटन कार्यक्रम नेहरू स्टेडियम में हुआ, जिसमें शिक्षा, पर्यटन और संसदीय मामलों के मंत्री पासंग दोरजी सोना, ट्रांसपोर्ट मंत्री ओजिंग तासिंग, पर्यावरण और वन मंत्री वांगकी लोवांग, विधायक, वरिष्ठ सरकारी अधिकारी, APSTS के पूर्व कर्मचारी और आम लोग मौजूद थे।कार्यक्रम की शुरुआत दीप जलाने के साथ हुई, जिसके बाद APSTS का राष्ट्रगान गाया गया और ट्रांसपोर्ट कमिश्नर श्री सवगत बिस्वास ने स्वागत भाषण दिया। पिछले पांच दशकों में APSTS के विकास, उपलब्धियों और बदलाव को दिखाने वाली एक डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई, जबकि ओलो, तुत्सा और नोक्टे लोक नृत्यों सहित पारंपरिक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने इस मौके को और भी खास बना दिया। लोगों को संबोधित करते हुए, ट्रांसपोर्ट मंत्री ओजिंग तासिंग ने APSTS के एक मामूली ट्रांसपोर्ट सर्विस से राज्य के सबसे महत्वपूर्ण पब्लिक सर्विस संस्थानों में से एक बनने के बदलाव पर प्रकाश डाला। उन्होंने पूर्व और मौजूदा कर्मचारियों को श्रद्धांजलि दी जिनके समर्पण ने विभाग की सफलता को आकार देने में मदद की और कहा कि APSTS के जन्मस्थान के सम्मान में खोंसा को जानबूझकर जगह के रूप में चुना गया था। उन्होंने खोंसा में ट्रांसपोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार का भी भरोसा दिलाया।अपने मुख्य भाषण में, डिप्टी चीफ मिनिस्टर चोवना मीन ने पिछले ५० सालों में उनके योगदान के लिए पुराने और मौजूदा अधिकारियों, कर्मचारियों और स्टेकहोल्डर्स को बधाई दी। अझडढड बसों में सफर करने के अपने निजी अनुभवों को याद करते हुए, उन्होंने दूर-दराज के इलाकों को जोडऩे और लोगों की जिंदगी बदलने में डिपार्टमेंट की भूमिका पर जोर दिया। APSTS को एक ऐसा संगठन बताते हुए जो ङ्गएक छोटे बीज से एक बडा पेड.बना है,ङ्घ मीन ने डिपार्टमेंट द्वारा GPS ट्रैकिंग सिस्टम, CCTV कैमरे, पैनिक बटन, AC कोच और इलेक्ट्रिक बसों जैसी मॉडर्न टेक्नोलॉजी अपनाने की तारीफ.की। उन्होंने लोगों को यह भी भरोसा दिलाया कि खोंसा टाउनशिप में सडक़ों को बेहतर बनाने और चौडा करने की कोशिश की जाएगी ताकि ट्रांसपोर्टेशन ज्यादा सुरक्षित और बेहतर हो सके। गेस्ट ऑफ.ऑनर पासंग दोरजी सोना ने आर्थिक विकास को आगे बढाने में ट्रांसपोर्ट सेक्टर के महत्व पर जोर दिया और APSTS को गोल्डन जुबली माइलस्टोन तक पहुँचने पर बधाई दी। उन्होंने इस मौके को हमेशा याद रखने के लिए खोंसा में एक ङ्गगोल्डन जुबली बस स्टेशनङ्घ बनाने का प्रस्ताव रखा। लोकल लेजिस्लेटर की उठाई गई मांगों पर, सोना ने ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर ओजिंग तासिंग से सलाह करके, गोल्डन जुबली सेलिब्रेशन मनाने के लिए खोंसा में एक नया बस स्टेशन बनाने का अनाउंसमेंट किया। वांगलिन लोवांगडोंग और वांगलाम साविन समेत लोकल लेजिस्लेटर ने खोंसा में सेलिब्रेशन होस्ट करने के फैसले का वेलकम किया और इलाके में डेवलपमेंट और कनेक्टिविटी को तेज.करने के लिए बेहतर ट्रांसपोर्ट और रोड इंफ्रास्ट्रक्चर की जरूरत पर जोर दिया।इवेंट के दौरान एक यादगार गोल्डन जुबली कैलेंडर रिलीज.किया गया, जबकि कई पुराने APSTS ऑफिसर और एम्प्लॉई को उनकी डेडिकेटेड सर्विस के लिए सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वालों में पुराने जनरल मैनेजर तापी बागरा (रिटायर्ड), APSTS के पहले कंडक्टर के.सी. चौधरी, नाइट चौकीदार त्सेरिंग नोरबू, ड्राइवर गोबोम सिरम, और स्टोर इंस्पेक्टर शशि कुमार जी शामिल थे। APSTS के जनरल मैनेजर मिटो दिरची ने थैंक्स कहा, जिन्होंने डिपार्टमेंट के फ्यूचर विजन पर रोशनी डाली और इनॉगरल प्रोग्राम की सक्सेस में कंट्रीब्यूट करने के लिए सभी डिग्निटरीज, गेस्ट और नागरिकों का थैंक्स कहा। शाम के कल्चरल प्रोग्राम में लोकल कलाकारों, रिहैबिलिटेशन सेंटर के लोगों, तांगसा कल्चरल ग्रुप और मशहूर सिंगर डेविड अरंगहम और बेबी मोसांग ने परफॉर्मेंस दी, जिसमें लोगों ने पूरे जोश के साथ हिस्सा लिया।गोल्डन जुबली सेलिब्रेशन ३१ मई तक चलेगा, जिसमें वर्कशॉप, एग्जीबिशन, कल्चरल प्रोग्राम और पब्लिक एंगेजमेंट एक्टिविटीज.होंगी, जिनका मकसद अझडढड की विरासत का सम्मान करना और इसके भविष्य के विकास और तरक्की के लिए एक प्रोग्रेसिव रोडमैप बनाना है।

भारत का रुपया गिर रहा है लेकिन दूसरे कई एशियाई देशों की मुद्रा मजबूत कैसे हो रही है?

नई दिल्ली (एर्जे) ३१ मई : नरेंद्र मोदी जब २६ मई, २०१४ को पहली बार भारत के प्रधानमंत्री बने तो अमेरिका का एक डॉलर भारत के ५८.९४ रुपए के बराबर था.मोदी जब दूसरी बार चुनाव जीतकर आए तो रुपए में १७ प्रतिशत से ज़्यादा की गिरावट हो चुकी थी और ३० मई, २०१९ को रुपया एक डॉलर की तुलना में ६९.३७ पर पहुँच गया था.नरेंद्र मोदी ने जून २०२४ में तीसरा

कार्यकाल संभाला और रुपया ८३.३८ के स्तर पर पहुँच गया था. यानी २०१९ से २०२४ के बीच रुपए में २० फीसदी से ज़्यादा की गिरावट आई.अब जब तीसरे कार्यकाल के दो साल पूरे हो गए हैं तो रुपया एक डॉलर की तुलना में करीब ९६ पर है और इन दो वर्षों में १४.७५ प्रतिशत की गिरावट आई है. कुल मिलाकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के १२ वर्षों के कार्यकाल में रुपए में ६२.३३ प्रतिशत की गिरावट आई है.लेकिन ऐसा नहीं है कि पहले की सरकारों में रुपया नहीं गिरता था. रुपए के कमजोर होने का सिलसिला हर सरकारों में रहा है. मनमोहन सिंह के १० सालों के (२००४-२०१४) शासनकाल में भी रुपया ३१.६५ प्रतिशत गिरा था.मई २०१४ में जब मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री बने थे तब एक डॉलर के लिए ४५.३१ रुपए देने पडते थे और जब मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री से हटे तब रुपया ६० के करीब पहुँच गया था.अभी भारतीय मुद्रा रुपए में आई कमजोरी को लेकर कई तरह के गंभीर सवाल उठ रहे हैं. आमतौर पर किसी देश की अर्थव्यवस्था अगर अपने प्रतिस्पर्धी देशों की तुलना में तेजी से बढ.रही हो तो उसकी मुद्रा मजबूत होती है.

लेकिन भारत के साथ ऐसा नहीं है. एक समय में मोदी की आर्थिक नीतियों के प्रशंसक रहे सुरजीत भल्ला भी यही सवाल पूछ रहे हैं कि अगर अर्थव्यवस्था में तेजी है तो रुपया क्यों गिर रहा है?आंकडे.बताते हैं कि पिछले कुछ सालों में भारत की आर्थिक वृद्धि दर चीन से भी ज़्यादा रही है, लेकिन इसके बावजूद हाल के वर्षों में रुपया साल दर साल कमजोर होता गया है.पिछले वर्ष यह गिरावट और तेज.हो गई, जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत से आने वाले सामानों पर भारी आयात शुल्क लगा दिए.इसके बाद ईरान युद्ध से पैदा हुए ऊर्जा संकट ने रुपये को लगातार नए रिकॉर्ड निचले स्तरों तक पहुँचा दिया. मार्च के अंत और अप्रैल की शुरुआत में भारतीय रिजर्व बैंक ने रुपये को संभालने के लिए आक्रामक कदम उठाए. लेकिन इन उपायों से केवल थोडी राहत मिली और देश से डॉलर का बाहर जाना थमा नहीं.मोदी सरकार के पूर्व मुख्य आर्थिक सलाहकार अरविंद सुब्रमण्यम भी मानते हैं कि रुपए में कमजोरी केवल ईरान युद्ध के कारण नहीं है.अरविंद सुब्रमण्यम ने २६ मई इंडियन एक्सप्रेस में एक आर्टिकल में लिखा था, ''युद्ध से पहले के दो-तीन वर्षों में तुर्की को छोडक़र शायद ही किसी देश की मुद्रा में इतनी बडी गिरावट आई जितनी भारतीय रुपये में. भारतीय रिजर्व बैंक ने उसे बचाने के लिए असाधारण स्तर पर हस्तक्षेप किया तब भी इसका कोई असर नहीं हुआ. २०२२ से फरवरी २०२६ के बीच रुपया २० प्रतिशत से ज़्यादा गिर गया जबकि आरबीआई की हर कोशिश नाकाम रही.''

भारत का रुपया कमजोर हुआ है तो एशिया के ही कई देशों की मुद्राओं में मजबूती आई है.

मलेशिया की मुद्रा रिंगिट पिछले साल ९.२५% मजबूत हुई जबकि इसी साल भारत का रुपया ४.४० प्रतिशत कमजोर हुआ.मलेशिया की मुद्रा रिंगिट पिछले सात वर्षों के सबसे मजबूत स्तर पर पहुंच चुकी है. जनवरी २०२५ में यह लगभग ४.५० तक टूटी थी, लेकिन उसके बाद इसमें तेज.वापसी देखने को मिली. इस उछाल ने रिंगिट को दक्षिण-पूर्वी एशिया की सबसे तेजी से मजबूत होने वाली मुद्रा बना दिया है.इसके पीछे कई वैश्विक कारण बताए जा रहे हैं. जैसे मलेशिया को लेकर विदेशी निवेशकों का भरोसा बढ.रहा है.मलेशिया की मुद्रा रिंगिट की मजबूती का कारण बताते हुए निक्केई एशिया ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है, ''इसके पीछे देश का करंट अकाउंट सरप्लस, मजबूत घरेलू अर्थव्यवस्था और २०२५ में ४.९ प्रतिशत जीडीपी वृद्धि दर जैसी बुनियादी आर्थिक वजहें भी हैं. एफडीआई में भी तेज.बढोतरी हुई है, जिससे स्थानीय मुद्रा की मांग मजबूत हुई. जुलाई से अक्तूबर २०२५ के दौरान तीसरी तिमाही में शुद्ध विदेशी निवेश प्रवाह बढक़र ८.५ अरब रिंगिट पहुंच गया जबकि दूसरी तिमाही में यह सिर्फ.१.६ अरब रिंगिट था.''निक्केई एशिया से बातचीत में दक्षिण-पूर्व एशिया की अर्थशास्त्री डोरिस लियू ने कहा, 'रिंगिट की मजबूती मलेशिया के कारोबारी माहौल को लेकर बढते आशावाद पर आधारित है. यह बदलाव महत्वाकांक्षी औद्योगिक योजनाओं, विशेष आर्थिक क्षेत्रों के विस्तार, चीन, यूरोपीय संघ और मध्य-पूर्व के साथ मुक्त व्यापार समझौतों और अमेरिका के साथ चल रहे व्यापार तनावों के बीच मलेशिया की काफी कुशल कूटनीतिक स्थिति का परिणाम है.''

थाईलैंडथाईलैंड की मुद्रा बाट भी अमेरिकी डॉलर के मुकाबले मजबूत प्रदर्शन करने वाली प्रमुख एशियाई मुद्राओं में शामिल रही.जनवरी में बाट मजबूत होकर प्रति डॉलर ३१ से नीचे पहुंच गया, जो जून २०२१ के बाद उसका सबसे मजबूत स्तर था.यह एक वर्ष पहले की तुलना में १० प्रतिशत से अधिक की बढत थी.

जनवरी में स्विट्जरलैंड के दावोस में आयोजित वर्ल्ड इकनॉमिक फोरम में थाई उपप्रधानमंत्री और वित्त मंत्री एकनिति नितिथानप्रपास ने कहा था, 'थाईलैंड एक छोटी और खुली अर्थव्यवस्था है और हम एक निर्यात-प्रधान देश हैं, इसलिए बाट की मजबूती हमारी अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है.'एकनिति ने मुद्रा की मजबूती के पीछे थाईलैंड के करंट अकाउंट सरप्लस को प्रमुख कारण बताया था. २०२५ में अमेरिका के साथ थाईलैंड का व्यापार सरप्लस बढक़र ५१.३ अरब डॉलर पहुंच गया जबकि एक वर्ष पहले यह ३५.६ अरब डॉलर था.इसमें इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात की मजबूत भूमिका रही. दिलचस्प बात यह है कि थाईलैंड की मौद्रिक नीति अपेक्षाकृत उदार रही है. सामान्य परिस्थितियों में ऐसी नीति ब्याज.दर अंतर घटाकर स्थानीय मुद्रा को कमजोर करती है, इसके बावजूद बाट लगातार मजबूत होता रहा.

चीन चीन की मुद्रा रेनमिन्बी (युआन) अमेरिकी डॉलर के मुकाबले तीन वर्षों के सबसे मजबूत स्तर पर पहुंच गई.

११ मई को पीपल्स बैंक ऑफ.चाइना ने डॉलर के मुकाबले रेनमिन्बी की डेली फिक्सिंग ६.८४६७ प्रति डॉलर तय की थी जो मार्च २०२३ के बाद सबसे मजबूत स्तर है.अमेरिका और यूरोप आरोप लगाते रहे हैं कि चीन का बढता व्यापार सरप्लस इसलिए है क्योंकि वह अपनी मुद्रा को कृत्रिम रूप से कमजोर रखता है.पिछले साल रेनमिन्बी यूरो के मुकाबले लगभग आठ प्रतिशत कमजोर हुआ था. इससे यूरोपीय यूनियन में चीन का निर्यात रिकॉर्ड स्तर तक पहुँच गया.गोल्डमैन सैक्स का अनुमान है कि रेनमिन्बी अब भी लगभग २० प्रतिशत अवमूल्यित है और आने वाले समय में डॉलर के मुकाबले और मजबूत हो सकता है. चीन में वर्षों से जारी डिफ्लेशन ने भी इस चिंता को बढाया है कि युआन वास्तविक मूल्य से कमजोर बना हुआ है.सिंगापुरसिंगापुर की करेंसी को सिंगापुर डॉलर कहते हैं. अमेरिकी डॉलर की तुलना में सिंगापुर के डॉलर में भी मजबूती आई है. पिछले पांच महीनों में करीब एक प्रतिशत की मजबूती आई है. अभी एक अमेरिकी डॉलर की तुलना में १.२८ सिंगापुर डॉलर देने होते हैं.दरअसल, वैश्विक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में उछाल से सिंगापुर की अर्थव्यवस्था और मजबूत हुई है.इसी हफ्ते सोमवार को सिंगापुर ने बताया कि पहली तिमाही में उसकी जीडीपी वृद्धि दर साल-दर-साल आधार पर छह प्रतिशत रही जबकि अप्रैल में इसका अनुमान ४.६ प्रतिशत लगाया गया था.पिछले वर्ष सिंगापुर की अर्थव्यवस्था पाँच प्रतिशत बढी थी जो पहले के ४.८ प्रतिशत अनुमान से अधिक थी.सिंगापुर ने अप्रैल में बेहद मजबूत व्यापार आंकडे.दर्ज किए.देश के प्रमुख गैर-तेल घरेलू निर्यात अप्रैल में २४.५ प्रतिशत बढे.जो फरवरी २०१२ के बाद सबसे तेज.वृद्धि दर है.

इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात में तो ६६.७ प्रतिशत की तेज.छलांग दर्ज की गई, जो पूरे एशिया में दिखाई दे रहे व्यापक एआई-प्रेरित औद्योगिक उछाल का हिस्सा माना जा रहा है.पाकिस्तान -यहाँ तक कि पाकिस्तान का रुपया भी स्थिर है. पिछले छह महीने में पाकिस्तानी रुपया अमेरिकी डॉलर की तुलना में १.३१ फीसदी मजबूत हुआ है जबकि इस साल भारतीय रुपए में छह फीसदी से ज़्यादा की गिरावट आई है. अभी एक डॉलर के लिए २७८ पाकिस्तानी रुपए देने होते हैं.

दुबई की न्यूज.वेबसाइट खलीज टाइम्स से सेंचुरी फाइनैंशियल के मुख्य निवेश अधिकारी विजय वलेचा के अनुसार, क्षेत्रीय तनावों के बावजूद हाल के महीनों में पाकिस्तानी रुपया स्थिर बना हुआ है. इसकी एक बडी वजह मार्च तिमाही में दर्ज करंट अकाउंट सरप्लस रहा, जिसने ऊंची तेल कीमतों और जियोपॉलिटिकल खतरों के दौर में विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव कम किया.साथ ही सऊदी अरब से मिले समर्थन और चार वर्षों से अधिक समय बाद पाकिस्तान की यूरोबॉन्ड बाजार में वापसी ने निवेशकों का भरोसा मजबूत किया और अल्पकालिक फंडिंग चिंताओं को कम किया.

विजय वलेचा ने कहा,'रुपये की स्थिरता मजबूत घरेलू आर्थिक सुधार की तुलना में बेहतर बाहरी परिस्थितियों का योगदान अधिक है. रुपए की यह मजबूती कुछ और आगे बढ.सकती है, लेकिन अच्छी खबरों का बडा हिस्सा पहले ही बाजार कीमतों में शामिल हो चुका है. अगर तेल कीमतें नरम रहती हैं, विदेशी मुद्रा भंडार बेहतर होता है, रेमिटेंस मजबूत बने रहते हैं और बाहरी फंडिंग जारी रहती है, तो रुपया और मजबूत हो सकता है.''रुपए में गिरावट का असर क्या होता है?कमजोर होती मुद्रा का सबसे सीधा असर आयात पर पडता है. जब रुपया गिरता है, तो तेल, रसोई गैस, उर्वरक और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसी जरूरी वस्तुओं का आयात महंगा हो जाता है. भारत इनमें से ज़्यादातर चीजें.विदेशों से खरीदता है.कमजोर रुपया वैश्विक निवेशकों को नए बाजार देखने पर मजबूर करता है क्योंकि उनके रिटर्न पर असर पडता है.मई के अंत तक विदेशी निवेशकों ने रिकॉर्ड २३ अरब डॉलर के शेयर भारतीय बाजारों में बेच डाले.स्थानीय शेयर बाजार से विदेशी पूंजी के बाहर जाने से भारत के लिए चालू खाता घाटे को संतुलित रखना चुनौतीपूर्ण हो गया है.हालांकि इसका दूसरा पक्ष भी है. कमजोर रुपया भारतीय निर्यात को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाता है, क्योंकि विदेशों में भारतीय वस्तुएं और सेवाएं सस्ती हो जाती हैं.यह अमेरिका के टैरिफ.दबाव के कुछ असर को कम करने में मदद कर सकता है, खासकर ऐसे समय में जब भारत ब्रिटेन जैसे देशों के साथ व्यापारिक संबंध बढाने की कोशिश कर रहा है.कमजोर रुपया उन परिवारों के लिए भी फायदेमंद होता है, जो विदेशों में काम कर रहे भारतीयों के भेजे गए पैसों पर निर्भर हैं, क्योंकि हर डॉलर के बदले ज़्यादा रुपये मिलते हैं. मार्च २०२५ तक के एक वर्ष में भारत को १३५ अरब डॉलर से ज़्यादा रेमिटेंस मिले थे.

जंगली हाथियों के हमले में महिला समेत दो की मौत

नगांव/ग्वालपाडा (असम), ३० मई (हि.स.)। असम के नगांव जिले के कचुवा क्षेत्र में जंगली हाथियों के हमले में एक महिला समेत दो लोगों की मौत हो गई, जबकि तीन अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। वहीं, ग्वालपाडा जिले के मरनै इलाके में करंट लगने से एक जंगली हाथी की मौत हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार, नगांव जिले के कचुवा क्षेत्र में बीती रात जंगली हाथियों के एक झुंड ने लोगों पर हमला कर दिया। इस घटना में दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को उपचार के लिए नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां कुछ की हालत चिंताजनक बताई जा रही है।घटना की सूचना मिलते ही वन विभाग और पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। अधिकारियों ने हाथियों को आबादी वाले क्षेत्र से दूर जंगल की ओर खदेडऩे के लिए अभियान चलाया। घटना के बाद पूरे इलाके में दहशत का माहौल है। समाचार लिखे जाने तक मृतकों और घायलों की पहचान सार्वजनिक नहीं की गई थी।इधर, ग्वालपाडा जिले के मरनै क्षेत्र में एक जंगली हाथी की करंट लगने से मौत हो गई।

देश-विदेश की यात्राएं करना आज के दौर में मुश्किल भरा काम नहीं है। चाहे बिजनेस के लिए यात्राएं करनी हों या एडवेंचर के लिए या फिर छुट्टियां बिताने के लिए। उन्नत ट्रांसपोर्ट और संचार साधनों से सब कुछ आसान हो गया है। टूरिज्म सेक्टर देश की जीडीपी में भी बड़ा योगदान दे रहा है क्योंकि पर्यटकों के जरिए विदेशी मुद्रा अर्जित करने का यह बड़ा स्रोत है। इतना ही नहीं, लाखों लोगों को टूरिज्म विभाग, ट्रैवल एजेंसी, होटल, एयरलाइंस, ट्रांसपोर्ट एजेंसी या फिर कार्गो कंपनियों में रोजगार भी मिला हुआ है।

टूरिज्म में इन 8 क्षेत्रों में मिलेंगे बेहतरीन मौके

वर्ल्ड ट्रैवल एंड टूरिज्म काउंसिल की रिपोर्ट के अनुसार, नए वीसा सुधार, अतुल्य भारत अभियान और सरकार द्वारा इंफ्रास्ट्रक्चर पर ज्यादा जोर दिए जाने से भारतीय ट्रैवल एंड टूरिज्म उद्योग में आने वाले वर्षों में और तेजी आने की उम्मीद है। एक अनुमान के मुताबिक, बीते कुछ वर्षों में करीब 9 प्रतिशत (3.74 करोड़) लोगों को टूरिज्म सेक्टर में रोजगार मिला। देश की भौगोलिक और सांस्कृतिक-ऐतिहासिक विरासत ऐसी है कि दक्षिण एशिया घूमने आने वाले करीब 50 प्रतिशत पर्यटक हर साल भारत आना पसंद करते हैं। यही वजह है कि टूरिज्म सेक्टर में युवाओं के लिए रोजगार की संभावनाएं लगातार बढ़ रही हैं।

करियर के अवसर

चूंकि टूरिज्म उद्योग में कार्य का दायरा काफी विस्तृत है, इसलिए यहां युवाओं के लिए सरकारी और निजी दोनों ही क्षेत्रों में अनेक प्रकार की संभावनाएं मौजूद हैं। टूरिज्म से संबंधित कोर्स करने के बाद आप विभिन्न विमानन कंपनियों, होटल आदि में मैनेजर, टूर मैनेजर, कस्टमर सेल्स एग्जीक्यूटिव, ट्रैवल प्रोडक्ट डिजाइनर, सेल्स एंड मार्केटिंग स्टाफ, ट्रैवल एजुकेटर, गाइड, दुभाषिया आदि के तौर पर जॉब पा सकते हैं। इसी तरह ट्रैवल एजेंसीज में भी ढेर सारे अवसर हैं, जहां आप मैनेजर, रिजर्वेशन एंड काउंटर स्टाफ, सेल्स एंड मार्केटिंग स्टाफ, टूर एस्कॉर्ट, टूर ऑपरेटर आदि के रूप में सेवा दे सकते हैं। कहने का मतलब यह है कि टूरिज्म सेक्टर में आपके लिए करियर ग्रोथ और पैसा दोनों हैं। अगर चाहें, तो कुछ वर्षों के अनुभव के बाद खुद का ट्रैवल बिजनेस भी शुरू कर सकते हैं। धीरे-धीरे पासपोर्ट एंड वीसा हैंडलिंग, डेस्टिनेशन मैनेजर, ट्रैवल कंसल्टेंट, फ्रंट ऑफिस मैनेजमेंट, एचआर, बिजनेस डेवलपमेंट, पीआर, इवेंट मैनेजमेंट जैसे दूसरे गैर-परंपरागत क्षेत्रों में भी युवाओं के लिए जॉब की संभावनाएं तेजी से बढ़ रही हैं। मेडिकल टूरिज्म भी ऐसा ही एक उभरता हुआ नया क्षेत्र है, जहां हेल्थ प्रोफेशनल्स के लिए काफी स्कोप है।

कहां हैं मौके ?

पर्यटन विभाग – इससे संबंधित कोर्स करने के बाद आप पर्यटन विभाग में रिजर्वेशन एंड काउंटर स्टाफ, सेल्स एंड मार्केटिंग स्टाफ, टूर प्लानर्स, टूर गाइड जैसे पदों पर सरकारी नौकरी में जा सकते हैं। यूपीएससी या पीएससी परीक्षा पास कर केंद्र व राज्यों के पर्यटन विभागों में अफसर भी बना जा सकता है।

एयरलाइंस – पर्यटन उद्योग का यह सबसे आकर्षक क्षेत्र माना जाता है। आप एयर होस्टेस, ग्राउंड सपोर्ट एंड एयरपोर्ट मैनेजमेंट, एयरलाइन ग्राउंड ऑपरेशन, एयरलाइन टिकिटिंग, होटल मैनेजमेंट या टूरिज्म जैसे कोर्स करके यहां ग्राउंड स्टाफ या इन-फ्लाइट एसोसिएट, ट्रैफिक असिस्टेंट, रिजर्वेशन एंड काउंटर स्टाफ, क्लाइंट सर्विसिंग स्टाफ के रूप में करियर बना सकते हैं।

होटल – किसी भी देश की ट्रैवल एंड टूरिज्म इंडस्ट्री का अहम हिस्सा हैं होटल्स। यही कारण है कि यह क्षेत्र देश में तेजी से आगे बढ़ रहा है। तमाम तरह के जॉब के अवसर भी लोगों को विभिन्न स्तरों के होटलों में मिल रहे हैं।

ट्रांसपोर्ट – हवाई, सड़क, रेल और समुद्री मार्गों से परिवहन के क्षेत्र में को-ऑर्डिनेटर, सुपरवाइजर, ड्राइवर आदि के रूप में बड़ी संख्या में जॉब के अवसर हैं।

टूर ऑपरेटर्स – ऐसे प्रोफेशनल्स अपने क्लाइंट के लिए टूर की व्यवस्था करते हैं, उन्हें विभिन्न पर्यटन स्थलों पर घुमाने के लिए ले जाते हैं, रिवर राफ्टिंग, रॉक क्लाइंबिंग आदि जैसे साहसिक खेलों में टूरिस्ट की मदद करते हैं। क्लाइंट की यात्रा और ठहरने का प्रबंध भी यही प्रोफेशनल्स करते हैं। अगर आपका व्यक्तित्व अच्छा है, आप पर्यटन स्थलों की अच्छी जानकारी रखते हैं और आपकी लैंग्वेज स्किल अच्छी है, तो आप इस फील्ड में अपना करियर बना सकते हैं।

टाइम शेयर कंपनीज – ऐसी कंपनियां हॉलीडे रिसॉर्ट को मैनेज करने का काम करती हैं। विदेशी कंपनियों के रिसॉर्ट के साथ भी इनका बिजनेस टाई-अप होता है। आप ऐसी कंपनियों में काम करने का मौका पा सकते हैं।

हॉलीडे कंसल्टेंसी – ट्रैवल एंड टूरिज्म उद्योग में अभी यह नया क्षेत्र है। हॉलीडे कंसल्टेंट टूर से जुड़ी हर तरह की जानकारी अपने क्लाइंट को उपलब्ध कराते हैं, जैसे क्लाइंट के लिए ट्रैवल प्लान करना, टिकट बुकिंग करना आदि।

बैंक – बैंकों में भी विदेशी मुद्रा के लिए आने वाले टूरिस्ट की मदद हेतु प्रोफेशनल्स की सेवाएं ली जाती हैं। तमाम बैंक आजकल पर्यटकों के लिए होटल और टिकट बुकिंग की सुविधाएं भी उपलब्ध करा रहे हैं। बैंकों में ऐसे जॉब के लिए आम तौर पर एमबीए स्टूडेंट्स को हायरिंग में खास तवज्जो दी जाती है।

पर्सनल स्किल्स

ट्रैवल एंड टूरिज्म उद्योग में कम्युनिकेशन स्किल सबसे जरूरी है क्योंकि यहां लोगों को अक्सर पर्यटकों से बातचीत करके उनकी जिज्ञासाओं को शांत करना होता है। आपका व्यवहार कुशल होना भी जरूरी है। अच्छी पर्सनैलिटी से फायदा होगा। क्षेत्र विशेष की भौगोलिक जानकारी भी होनी चाहिए। अगर आप मैनेजेरियल या एडमिनिस्ट्रेटिव पद पर हैं, तो लीडरशिप क्वॉलिटी के साथ-साथ त्वरित समस्या समाधान की क्षमता और टीमवर्क की भावना भी आपमें होना जरूरी है।

कोर्स व क्वॉलिफिकेशन

टूरिज्म इंडस्ट्री में करियर बनाने के लिए डिग्री, पीजी डिग्री, डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्स के रूप में कई प्रकार के कोर्स उपलब्ध हैं। डिग्री कोर्स की अवधि 3 वर्ष होती है। इसमें किसी भी स्ट्रीम के युवा 12वीं के बाद प्रवेश ले सकते हैं। अगर आप ग्रेजुएट हैं, तो टूरिज्म में पीजी या डिप्लोमा कोर्स कर सकते हैं। कुछ संस्थान सर्टिफिकेट कोर्स भी कराते हैं, जिसे 12वीं के बाद करके आप टूर एजेंसीज या टूर प्रमोशन एंड सेल्स कंपनियों में जॉब पा सकते हैं।

सैलरी कितनी ?

टूरिज्म उद्योग में सैलरी काफी आकर्षक है। एयरलाइंस, ट्रैवल एजेंसीज आदि में ऐसे प्रोफेशनल्स और उनके परिवारों को कई मुफ्त सुविधाएं भी मिलती हैं। प्रोफेशनल्स को शुरूआत में 15 से 20 हजार रुपए प्रति माह की सैलरी आसानी से मिल जाती है। अनुभव बढ़ने पर ऐसे प्रोफेशनल्स 40 हजार से लेकर 1 लाख रुपए महीना तक कमा सकते हैं।

प्रमुख संस्थान

- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टूरिज्म एंड ट्रैवल मैनेजमेंट, नई दिल्ली
- दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
- कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, हरियाणा
- डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
- बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

कौन-से कोर्स?

- बैचलर ऑफ टूरिज्म एडमिनिस्ट्रेशन
- बैचलर ऑफ टूरिज्म स्टडीज
- मास्टर ऑफ ट्रैवल एंड टूरिज्म मैनेजमेंट
- डिप्लोमा इन ट्रैवल एंड टूरिज्म मैनेजमेंट
- फाउंडेशन कोर्स इन ट्रैवल एंड टूरिज्म
- ट्रैवल एंड टूरिज्म मैनेजमेंट कोर्स
- इंटीग्रेटेड डिप्लोमा इन ट्रैवल एंड टूरिज्म मैनेजमेंट।

ग्रुप डिस्कशन में पीछे न रह जाएं, अपनाएं ये टिप्स

कुछ एग्जाम में ग्रुप डिस्कशन का बहुत बड़ा रोल होता है। कई बार आप लिखित परीक्षा में तो अच्छे अंक से पास हो जाते हैं लेकिन जब ग्रुप डिस्कशन का समय आता है तो वहां विफल हो जाते हैं। आखिर ऐसी कौन-कौन सी बातें है जिनका ध्यान रखा जाए तो आप ग्रुप डिस्कशन में भी बाजी मार सकते हैं। सबसे पहली बात इसके लिए आपको अपडेट होने के साथ-साथ आपकी बॉडी लैंग्वेज भी अच्छी होनी चाहिए।

- जीडी के दौरान किसी एक मेंबर की ओर फोकस न करें। सभी पर नजर आई-कॉन्टैक्ट बनाए रखें।
- जीडी में आप अपनी बात तभी रख पाएंगे जब आपको जीडी वाले टॉपिक का नॉलेज हो। अगर नॉलेज नहीं है तो आप अच्छे से डिस्कशन नहीं कर पाएंगे।
- इस बात का जरूर ध्यान रखें कि जब दूसरा बोल रहा हो तो उसे बीच में टोकें नहीं, चाहे आप उसकी बात से सहमत न भी हों। जब आपको मौका मिले तो अपनी बात को विनम्रता के साथ कहें।
- जो भी बोलें बिलकुल साफ बोलें, वरना सामने बाकी लोगों को या तो समझ नहीं आएगा या वो आपकी बात का कोई और मतलब निकाल सकते हैं।
- ध्यान रखें कि जिस टॉपिक पर डिस्कशन हो रहा है, उससे भटके नहीं। टॉपिक की थीम को ध्यान में रखकर उसी पर अपना व्यूज रखें।
- पॉजिटिव एटीट्यूड रखें और कॉन्फिडेंस बनाए रखें। लेकिन ध्यान रखें कि न तो किसी को नीचा दिखाना है और ही खुद को बहुत नॉलेजेबल शो करना है।
- आपको बस अपनी बात शेयर करनी है न कि किसी को मानने के लिए फोर्स करना है।
- जो भी बोलें उसमें दम होना चाहिए। आपकी बात में अगर प्वॉइंट नहीं होगा तो आप इंम्पैक्ट डालने से चूक जाएंगे।
- दूसरे जो बोल रहे हैं, उसे ध्यान से सुनें। सिर्फ खुद ही न बोलते चले जाएं। इससे आपका नॉलेज बढ़ेगा और आप एक अच्छा डिस्कशन कर पाएंगे।

इन 5 तरीकों से एल्यूमिनी नेटवर्किंग के जरिए ढूंढे जॉब

जॉब सर्च में एल्यूमिनी सबसे मूल्यवान नेटवर्किंग कॉन्टेक्ट्स हो सकते हैं, बशर्ते आप इसका प्रभावी तरीके से उपयोग करें। आज के समय में प्रभावकारी एल्यूमिनी नेटवर्किंग टेक्निक्स ज्यादा फोकस्ड होती है जिसके विशेष टारगेट, गोल और एक्शंस होते हैं। अगर आप यह सीख लें कि इनका सही तरीके से फायदा किस तरह उठा सकते हैं तो एल्यूमिनी नेटवर्किंग कॉन्टेक्ट्स बेहतरी नौकरी दिलवाने में मददगार साबित हो सकता है। आप एल्यूमिनी की नेटवर्किंग का उपयोग कर इन तरीकों से जॉब सर्च कर सकते हैं –

- एल्यूमिनी नेटवर्क का जानकारी लेने में आप अच्छा यूज कर सकते हैं। आपको टारगेट कंपनियों के एचआर मैनेजर्स को लेकर जानकारी मिलेगी और आपकी पहुंच भी बनेगी। हो सकता है कि नेटवर्किंग के जरिए आप आपने टारगेट तक पहुंच जाए। इसके लिए आपको सही एल्यूमिनी के पहचाने की जरूरत है।
- आप उस एल्यूमिनी से संपर्क कर सकते हैं जो कि कंपनी, उसके डिपार्टमेंट या मैनेजर की जानकारी दे। आप यह पता कर सकते हैं वाकई कंपनी में वैकेंसी है या नहीं। कई बार कंपनी अपनी वेबसाइट पर करंट ओपनिंग में वैकेंसी मेंशन नहीं करती लेकिन उन्हे हायरिंग की जरूरत होती है। आप बेहतर तरीके से एल्यूमिनी से यह पूछ सकते हैं।
- सही बात तो यह है कि सही एल्यूमिनी से आप आसानी से संपर्क नहीं साध सकते क्योंकि वे व्यस्त इंसान होते हैं। हालांकि अगर आपका वह साथ दें तो वे कंपनी और आपके बीच में ब्रिज का काम करेगा।
- कई बार हायरिंग मैनेजर अपने स्टाफ से किसी पोस्ट के लिए कैंडीडेट की सिफारिश चाहता है। ऐसे में यह आपके लिए अच्छी बात होती है। अगर आप एल्यूमिनी से टच में रहेंगे तो ऐसे मौके पर सबसे पहले आपका नाम ही उसके दिमाग में आएगा। साथ ही आपको यह अपना इरादा उसे बताकर रखना होगा कि अगर उसकी कंपनी में कोई वैकेंसी निकलेगी तो आप इच्छुक होंगे।
- इसके अलावा एल्यूमिनी से टच में रहने पर उसे संपर्क सूत्रों के हवाले से भी आपको जॉब सर्च में आसानी होगी। इसका सीधा मतलब यह है कि उसके कॉन्टेक्ट्स भी कहीं न कहीं सोशल मीडिया पर आपसे जुड़े होंगे।

बचपन

अजब-गजब जीव-जंतु

दुनिया में बहुत सारे ऐसे जीव-जन्तु हैं, जो अलग हैं। किसी में सूंघने की गजब की क्षमता होती है तो कुछ काफी समय तक बर्फ के अन्दर जीवित रह सकते हैं। इन्हीं खूबसूरत और आकर्षक प्राणियों की दुनिया में चलते हैं...

स्नोई आउल

बर्फ जैसे सफेद रंग में रंगे इस आउल को इसी रंग की वजह से स्नोई आउल कहा जाता है। यह हमेशा बर्फीले इलाके और टुंड्रा प्रदेश में पाया जाता है। खासतौर से आर्कटिक, कनाडा, उत्तरी अमेरिका, यूरोप और एशिया में यह मिलता है।

स्नोई आउल है खास

- सामान्य रूप से इसका आकार 52 से 71 सेमी का होता है।
- मादा स्नोई आउल की अपेक्षा नर अधिक सफेद और सुंदर दिखता है।
- सामान्य तौर पर उल्लु दिन में सोता है और रात को जागता है, लेकिन स्नोई आउल को दिन में भी आसानी से दिखाई देता है और यह पूरे दिन आसानी से अपना सभी काम करता है।
- यह अपनी एक्सलेंट आईसाइट (देखने की क्षमता) की वजह से एक अलग पहचान रखता है।

अंगोरा रैबिट

अंगोरा रैबिट सबसे पुराने पालतू खरगोशों में से एक है। इसके शरीर पर सफेद रंग के काफी बड़े-बड़े घने मुलायम और सिल्की रोएं होते हैं। रोएं इतने बड़े और घने होते हैं, जिनकी वजह से इसका पूरा शरीर उन्हीं से ढंका रहता है।

अंगोरा है सबसे प्यारा

- इसकी कई प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें से जिआंट, सैटिया, इंग्लिश और फ्रेंच अंगोरा रैबिट सबसे अधिक पाए जाते हैं।
- अंगोरा रैबिट का वजन 2 से 5.5 कि.ग्रा. तक होता है।
- इसके रोएं से सिल्की कपड़े और शॉल बनाए जाते हैं।
- घने और बड़े रोएं की वजह से अंगोरा रैबिट टैडी बियर के जैसा दिखता है।
- अंकारा में ये सबसे पहले मिले। अंकारा को पहले अंगोरा नाम से जाना जाता था, इसी वजह से इसे अंगोरा कहा जाता है।

मैंडरिन फिश

मछलियों की खूबसूरत और आकर्षक प्रजातियों में से एक है मैंडरिन फिश। दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया में इसकी उत्पत्ति का स्थान है। नीले और हरे रंग की मछली के ऊपर नारंगी रंग की धारी से सजी खूबसूरती और चमकीले लाल रंग की पूंछ को देखकर कोई भी इसकी खूबसूरती का कायल बन जाता है।

क्यों है मैंडरिन अलग

- मैंडरिन फिश में नर फिश मादा से बड़ी होती है।
- यह जोड़े या समूह में पाई जाती है।
- इसका आकार काफी छोटा होता है। सामान्य रूप से 6 से.मी. के आकार की मछली पाई जाती है।
- इस खूबसूरत मछली को कम ही देखा जाता है। पानी की गहराइयों में रहने की वजह से यह कम ही दिखाई पड़ती है।
- अपनी खूबसूरती और अलग रंग की वजह से यह समुद्र में अन्य मछलियों के साथ होते हुए भी आसानी से पहचान में आ जाती है।

स्नो लेपर्ड

यह लेपर्ड बर्फीले इलाके में पाया जाता है। वैसे तो यह बर्फीले इलाके में रहना पसंद करता है, लेकिन ठंड के दिनों में बर्फीले इलाके से सटे जंगलों की ओर भी रुख कर लेता है। वैसे तो यह मांसाहारी प्राणी है और अपने शिकार के रूप में जीव-जंतुओं को खाता है, लेकिन कभी-कभी जरूरत पड़ने पर यह घास को भी अपना भोजन बनाता है।

यह इसलिए है खास

- सामान्य तौर पर इसका वजन 27 से 55 किग्रा तक होता है। कुछ गिने-चुने स्नो लेपर्ड का वजन 75 किग्रा तक होता है। इसकी पूंछ 75 से 130 सेमी लंबी होती है।
- सामान्य तेंदुआ या बाघ दहाड़ के लिए जाने जाते हैं, लेकिन स्नो लेपर्ड दहाड़ नहीं सकता है।

लिलेक-ब्रेस्टेड रोलर

दुनिया की सबसे खूबसूरत चिड़ियों में से एक है लिलेक-ब्रेस्टेड रोलर। यह रोलर फैमिली ऑफ बर्ड्स की सदस्य है। अफ्रीका, पूर्वी और दक्षिणी अरब, इथोपिया, उत्तर पश्चिमी सोमालिया में यह काफी संख्या में पाई जाती है। रोल-रोल डांस करने की वजह से ही इसे लिलेक-ब्रेस्टेड रोलर बर्ड कहा जाता है। सूखे पेड़ों की ऊंचाई पर रहना इसे पसंद है। हरे और पीले रंगों में रंगे इस पक्षी के स्कल्पचर और पीठ का रंग भूरा और बैंगनी होता है।

लिलेक की खूबियां

- सामान्य आकार में यह 14.5 इंच की पाई जाती है। इसका सिर बड़ा, गर्दन और पैर छोटे होते हैं।
- यह उड़ते हुए बेहद खास तरीके से घूम-घूमकर (रोल-रोल) बेले डांस करती है।
- बोत्सवाना और केन्या की राष्ट्रीय पक्षी है यह। यह अपना घोंसला खुद नहीं बनाती। या तो सूखे पेड़ की कोटरों में रहती है या किंगफिशर और कठफोड़वे द्वारा बनाए हुए घोंसले में रहती है।

भोजन साफ करने के बाद ही खाता है रैकून

पनामा तथा दक्षिण कनाडा में पानी के समीप जंगलों, झीलों व झरनों के किनारों पर पाए जाने वाले जानवर 'रैकून' में कई ऐसी विशेषताएं देखने को मिलती हैं, जो इसे दूसरे जानवरों से अलग श्रेणी में रखती हैं। विश्वभर में इस अनोखे जानवर पर अब तक अनेक शोध हो चुके हैं और वैज्ञानिक आज भी इस पर लगातार शोध कर रहे हैं किन्तु अभी तक वैज्ञानिक रैकून के बारे में ज्यादा कुछ पता लगाने में सक्षम नहीं हो पाए हैं। रैकून नामक इस जानवर की एक खासियत तो यह है कि यह रात के समय जागता है और दिन में सोता है लेकिन इसकी सबसे बड़ी विशेषता इसका भोजन करने का सभ्य तरीका है। यह अपने भोजन को पटक-पटक कर साफ करने के बाद ही खाता है। रैकून के आगे के पैर इंसानों के पैरों की भांति ही होते हैं और अपने इन्हीं पैरों का प्रयोग रैकून भोजन को साफ करने के लिए करते हैं। रैकून का पसंदीदा भोजन मछली तथा मेंढक हैं किन्तु पसंदीदा भोजन उपलब्ध न होने पर यह छोटे स्तनधारी पक्षी, उनके अंडों तथा जंगल में पाए जाने वाले फल-फूलों को भी अपना आहार बना लेता है।

इसकी एक और खासियत यह है कि आप इस जानवर को पालतू बना सकते हैं। आप कहेंगे कि इसमें भला विशेषता कैसी क्योंकि इंसान ने तो शेर-चीते जैसे खूंखार जानवरों तक को पालतू बना डाला लेकिन रैकून की खासियत है कि पालतू बनाने के बाद इसकी देखभाल बिल्कुल एक छोटे बच्चे की तरह करनी पड़ती है क्योंकि अगर आपका व्यवहार इसके प्रति ठीक न हो तो समझ लीजिए कि आपकी खैर नहीं! दरअसल रैकून जितना शांत दिखता है, यह उतना ही गुस्सैल भी है। रैकून की नाक तीखी तथा कान छोटे होते हैं। ज्यादातर स्थानों पर प्रायः भूरे रंग के रैकून ही मिलते हैं, पर कहीं-कहीं काले रंग के रैकून भी पाए जाते हैं किन्तु यह प्रजाति दुर्लभ है। रैकून की पूंछ करीब 25 सेंटीमीटर लम्बी होती है जिस पर एक बहुत ही सुंदर निशान होता है। पूंछ सहित रैकून की लंबाई करीब 1 मीटर होती है और इसका वजन करीब 15 किलोग्राम होता है। इतनी विचित्र खूबियों वाले इस अनोखे जानवर का जीवनकाल ज्यादा लम्बा नहीं है। रैकून की औसत आयु 5 से 8 साल के बीच ही होती है।

सीधा ऊपर क्यों जाता है रॉकेट

रॉकेट में पंख नहीं होते और इसलिए उन्हें ऊपर उठने के लिए जरूरी धक्का उनके इंजन से ही मिलता है। प्लेन ज्यादा भारी होता है और उसे ऊपर उठने के लिए हवा को बहुत तेज गति से पीछे छोड़ना पड़ता है। इसलिए वह पहले रनवे पर कुछ दूर चलकर पंखों से हवा को ठेलने जितना बल प्राप्त करता है। रॉकेट को जमीन पर दौड़ने और फिर आसमान में धक्का देने के बजाय उसे सीधे हवा में उड़ा देने का काम इंजन आसानी से कर पाता है। रॉकेट और एरोप्लेन दोनों एक ही सिद्धांत पर काम करते है। दोनों गैसें पीछे छोड़ते है और उससे उन्हें आगे जाने का धक्का मिलता है।

किसी भी विमान को ऊपर उठने के लिए धक्के की जरूरत पड़ती है। एरोप्लेन, पक्षी और उड़ने वाले कीट के पंखों से जब हवा टकराती है तो इस हवा को पंखों से पीछे ठेलकर वे ऊपर उठते हैं।

दूर का दिखाने वालीदूरबीन

चिड़िया देखना हो या फिर तारे। एक दूरबीन से दो काम बहुत अच्छे से हो सकते हैं। अपनी पॉकेट मनी बचाकर अगर ऐसी कोई चीज खरीदते हो तो वह जिंदगीभर काम आएगी। दूरबीन दूर की दुनिया को तुम्हारे पास ले आएगी। जाड़े के दिनों में तो प्रकृति को, पंछियों और तारों को दूरबीन से घंटों देखा जा सकता है। जन्मदिन पर तुम पापा-मम्मी से कोई बड़ी चीज मांगने के बजाय दूरबीन की जिद भी कर सकते हो। उन्हें भी दूरबीन दिलाने में कोई परेशानी नहीं होगी। दूरबीन से देखने पर नई दुनिया खुल जाती है। दूर की कौड़ी को पास लाने वाली दूरबीन अगर तुम्हारी दोस्त बन जाए तो क्या बात है। तो ले आओ दूर की चीजों को पास, एक दूरबीन के साथ।

विराट प्रकृति — सुदर्शनजी महराज

पतंजलि ने अपने योग सूत्र में लिखा है कि कान को अगर सूक्ष्म बना लिया जाए तो वह आकाश को भी सुन सकती है। मनुष्य का शरीर जब कभी सूक्ष्म बन जाता है या मनुष्य का सूक्ष्म शरीर जब सक्रिय हो जाता है तो वह सूर्यमंडल निहारिका अथवा आकाशगंगा से आसानी से जुड़ पाता है। ज्योंही वह अंतरिक्ष से जुड़ता है, उसे अनहदनाद सुनाई पड़ता है। कबीरदास जी इसी अनहद की चर्चा करते हैं। प्रश्न है कि हम अपने शरीर को कितनी सावधानी से नक्षत्रों से जोड़ सकते हैं। जीव परमात्मा से जुड़ा है लेकिन पंचभूतों के कारण अलग महसूस करता है। ज्योंही वह पंचभूत से बाहर निकलता है, वह परमात्मा से जुड़ जाता है। यह परमात्मा कुछ और नहीं परमतत्व है, महाशून्य है। इस विद्या का ज्ञान हमारे संतों को बहुत पहले ही हो चुका है इसीलिए हमारे संत ''अहं ब्रह्मास्मि' मैं ब्रह्म हूं की घोषणा करते हैं। यह सारा ब्रह्मांड उसी महाशून्य की अभिव्यक्ति है। वहीं से प्राण ऊर्जा का प्रवाह होता है। जिससे पंचभूतों वाले जीव स्वरूप ग्रहण करते हैं। यह जो संसार दिख रहा है वह सब उसी महाशून्य की अभिव्यक्ति है, जिसका कोई रूप नहीं है। शायद इसीलिए ''मूलडॉल' नामक वैज्ञानिक ने ''द प्रोजेक्शन ऑफ एस्ट्रल बॉडी' नाम की पुस्तक लिखी। यह जो हमारा शरीर है वह दिव्य शक्तियों का प्रोजेक्शन है। इसी पृवी को अभी बहुत लोग क्रिएशन कहते हैं। लेकिन यह क्रिएशन नहीं है, पृवी भी प्रोजेक्शन है। क्योंकि इस प्राण शक्ति से सम्पूर्ण ब्रह्मांड जुड़ा है। एक बहुत बड़े वैज्ञानिक एक्सेल पारसे ने यहां तक कहा है कि क्वांटम किरण प्रकाश की गति से चलती है। उसकी फ्रीक्वेंसी एक अरब हट्र्ज की होती है। उसी गति के कारण जीव अंतरिक्ष से जुड़ा है। इसलिए अब इस बात को विज्ञान भी मानने लगा है कि अंतरिक्ष और जीव अलग नहीं है। फ्रांसीसी थाम्पसन ने तो यहां तक कह दिया कि अगर पृवी पर तुम एक फूल तोड़ते हो तो उससे अंतरिक्ष प्रभावित होता है। यह बात ठीक लगती है कि अगर हम ग्रहों से प्रभावित होते हैं, शनि ग्रह से हम प्रभावित होते हैं तो हमसे भी शनि प्रभावित होते हैं। क्योंकि यह विज्ञान का नियम है कि किसी क्रिया की प्रतिक्रिया भी होती है। न्यूटन का गति सिद्धांत अंतरिक्ष पर भी तो लागू हो सकता है। सूक्ष्मता के कारण सबकुछ जुड़ा हुआ है। जिस दिन हम अपनी स्थूलता को छोड़ देंगे, उस दिन परमात्मा में मिल जाएंगे।

खबरें जरा हटके

जागी भूखी शेरनी की ममत, बख्श दी हिरण के बच्चे की जान

नई दिल्ली। इंसानों में ही नहीं जानवरों में भी ममता का भाव होता है। कमसे कम इस किस्से को सुनने के बाद तो आप यही कहेंगे। इन दिनों एक वीडियो वायरल हो रहा है। यह वीडियो साउथ अफ्रीका के क्रूजर नेशनल पार्क का है। एक भूखी शेरनी के हाथ आया एक नन्हा सा हिरण का बच्चा, लेकिन इस शेरनी ने जो किया वह काबिले तारीफ था।

नेशनल पार्क में हिरण का छोटा सा बच्चा रास्ता भटक कर शेरनी के पास पहुंच गया था। हिरण का बच्चा शेरनी के मुंह के पास जैसे ही पहुंचा पहले तो शेरनी ने उसे खाने की कोशिश, लेकिन फिर अचानक उसे छोड़ दिया। हिरण के बच्चे की हरकतें देखकर शेरनी का भी दिल पिघल गया और वह हिरण के बच्चे के साथ खेलने लगी।

जो शेरनी उसे खाने वाली थी, अब वही उसकी रक्षक बन गई। हिरण जैसे ही शेरनी से दूर जाने की कोशिश करता, शेरनी उसे पकड़कर चाटने लगती। इसके बाद शेरनी उसके साथ खेलने लगी, लेकिन तभी किसी दूसरे शेर ने उस बच्चे को देख उसका शिकार करने की कोशिश की, लेकिन रखवाला बनी शेरनी ने उसे बचा लिया।

शेरनी ने दूसरे शेर पर हमला बोल कर हिरण के बच्चे को बचा लिया। शेरनी को हिरण के बच्चे की रखवाली करते देख दूसरा शेर वहां से चला गया। वहां मौजूदा लोगों ने इस घटना का वीडियो बना लिया और इसे सोशलम मीडिया पर डाल दिया।

हनीमून मनाने गया था यह कपल, एक गलती ने पहुंचा दिया जेल

नई दिल्ली। शादी के बाद हनीमून पीरियड हर कपल के लिए स्पेशल होता है। इस नई जिंदगी की शुरुआत के लिए वो बहुत से सपने सजाते हैं, लेकिन जरा सोचिए कि एक गलती से अगर हनीमून की जगह कपल पुलिस स्टेशन पहुंच जाए तो। दरअसल दिली के रहने वाले नीरज ठाकुर के साथ कुछ ऐसा ही हुआ। वे पत्नी के साथ हनीमून पर निकले थे, लेकिन उनकी एक गलती ने उन्हें सलाखों के पीछे पहुंचा दिया।

दरअसल यह दंपत्ति ट्रेन पकड़ने के लिए रेलवे स्टेशन पहुंचे ही थे। कि गलती से उन?होंने दूसरे का बैग उठा लिया और ट्रेन में चढ़ने लगे, तभी दूसरे यात्री की नजर अपने सामान पर पड़ी और उसने पुलिस बुला ली। नव दंपत्ति को तुरंत ट्रेन से उतारकर जीआरपी थाने ले जाया गया। पुलिस पूछताछ में नीरज ने बताया कि उसकी एक महीने पहले ही शादी हुई थी। और वह हनीमून मनाने ऊटी जा रहा था। और उसने गलती से दूसरा बैग उठा लिया। हालांकि सीसीटीवी में नीरज को बैग उठाते देखा गया है। इसके बाद जब जीआरपी ने ये मामला कैमरे में देखा को दंपत्ति को स्टेशन पर ही गिरफ्तार कर सारा सामान बरामद किया। इसके बाद उनको मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया जहां से दोनों को जेल भेज दिया गया।

सेहत

गर्मी में ज्यादा पनपते हैं फूड पॉइजनिंग के बैक्टीरिया

फूड पॉइजनिंग क्या है?
यह बैक्टीरिया जनित रोग है जो पुराने, खराब या दूषित भोजन से होता है। बैक्टीरिया या उसके विषैले तत्व जब हमारे पेट में जाकर आंतों में संक्रमण फैलाते हैं तो फूड पॉइजनिंग की समस्या होती है।

इसका कारण क्या है?
दूषित भोजन, गंदे हाथों से सब्जियां काटना और पकाना इसकी मुख्य वजह है। बिना ढका खाना खाने से भी फूड पॉइजनिंग हो सकती है।

प्रमुख लक्षण क्या हैं?
जी घबराना, पेटदर्द, उल्टी, दस्त और डिहाइड्रेशन। लेकिन जब सामान्य लक्षणों के अलावा बेहोशी, सुस्ती, ब्लड प्रेशर और डिहाइड्रेशन की वजह से पेशाब कम आने लगे तो फौरन डॉक्टर से संपर्क करें।

ये बैक्टीरिया कब सक्रिय होते हैं?
गर्मी के मौसम में ये बैक्टीरिया और वायरस सबसे ज्यादा सक्रिय होते हैं। इसकी वजह वातावरण में मौजूद मक्खी व मच्छर हैं।

इसका इलाज क्या है?
ज्यादातर मामलों में फूड पॉइजनिंग की समस्या थोड़े समय बाद अपने आप ठीक हो जाती है। लेकिन कई बार स्थिति गंभीर भी हो सकती है। जिसके लिए डॉक्टर तुरंत राहत के लिए ओआरएस (ओरल रीहाइड्रेशन सोल्यूशन) का घोल और जरूरत पड़ने पर एंटीबायोटिक दवाएं देते हैं।

बचाव के लिए किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
हमेशा ताजा और गर्म खाना खाएं। जहां तक संभव हो घर का बना भोजन करें। खाना बनाने और खाने से पहले व बाद में हाथों को अच्छी तरह साबुन से धोएं। बाजार की चाट, जूस या कटे हुए फलों से परहेज करें। फ्रिज में रखे खाने को गर्म करने के बाद ही प्रयोग में लेना चाहिए।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): निकटस्थ व्यक्ति का सहयोग काम को गति दिला देगा। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। शुभांक-1-3-5

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): अपने हित के काम सुबह-सबेरे निपटा लें। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम पर पैनी नजर रखिए। विरोधी नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। शुभांक-2-4-6

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): अपने काम को प्राथमिकता से करें। बुरी संगति से बचें। आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। निर्मूल शंकाओं के कारण मनस्ताप भी पैदा हो सकते है। भय तथा शत्रुहानि की आशंका रहेगी। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। हाथ-पैरों में पीड़ा हो सकती है। शुभांक-4-7-9

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): दूसरों के कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करें। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सबेरे ही निपटा लें। रुपए पैसों की सुविधा मिल पाएगी। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। शुभांक-2-4-5

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): मान-सम्मान में वृद्धि होगी। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। यात्रा शुभ रहेगी। सुविधाओं में बाधा आएगी। चिंतनीय वातावरण से मुक्ति मिलेगी। शुभांक-4-5-6

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): संतोषजनक सफलता मिलेगी। निष्ठा से किया गया कार्य पराक्रम व आत्मविश्वास बढ़ाने वाला होगा। मेहमानों का आगमन होगा। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। नैतिक दायरे में रहें। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। वाहन चालन में सावधानी बरतें। आय के अच्छे योग बनेंगे। शुभांक-2-4-7

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। बुरी संगति से बचें। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। शुभांक-5-6-9

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। शुभांक-3-6-8

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। व्यवसाय में प्रतिद्वंद्वी परेशान कर सकते हैं। समय व्ययकारी सिद्ध होगा। वैचारिक उत्तेजना पर नियंत्रण रखें। कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। अपनी परिसंपत्ति को संभालकर रखें। शुभांक-3-5-7

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी): व्यापार में वृद्धि व उत्तम लाभ मिलेगा। मित्रों की उपेक्षा करना ठीक नहीं रहेगा। नौकरी क्षेत्र में कुछ उलझनें रहेंगी। यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि व शिक्षा में परेशानी आ सकती है। व्यापार में वृद्धि होगी। नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। मेहमानों का आगमन होगा। शुभांक-4-6-8

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): महत्वपूर्ण निर्णय के लिए दूरदर्शिता से काम लें। कोष में कमी व व्यय की अधिकता से परेशान होंगे। किसी से वाद-विवाद अथवा कहासुनी होने का भय रहेगा। जल्दबाजी में कोई भूल संभव है। कार्य भार बढ़ेगा। जरा-सी लापरवाही आपको परेशानी में डाल सकती है। सलाह उपयोगी सिद्ध होगी। शुभांक-2-6-9

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच अप्रत्याशित विघ्न पैदा होंगे। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। शुभांक-5-6-8

लॉफिंग ज़ोन

संता: 'बचपन में मैं एक बार दूसरी मंजिल से नीचे गिर गया था।'
बंता: 'फिर क्या हुआ ? तुम मर गए या जिंदा बचे ?'
संता: 'बहुत पुरानी बात है यार ... अब याद नहीं।'

□ □ □

संता - बंता एक कार में बम लगा रहे थे।
संता: 'अगर बम लगाते समय यह फट गया तो ?'
बंता: 'अरे तो क्या हुआ मेरा पास एक और बम है।'

□ □ □

पत्नी- घर में सिर्फ1 चम्मच चीनी पडी है और तुम दोस्त के लिए चाय बनाने को कह रहे है।
पति- कोई बात नही, तुम मेरी चाय में चीनी मत डालना।
बस 1 किस दे देना, चाय मीठी हो जाएगी।
पत्नी- आइडिया अच्छा है। मै दोनों ही कंपो में चीनी नही डालूगी।

□ □ □

शादी पर शहनाई बज रही थी। संतो ने संता से पूछा, ये कौन सी धून बज रही है।
संता बोला, वही जो तूफान के आने से पहले बजाई जाती है।

काकुरो पहेली - 4069

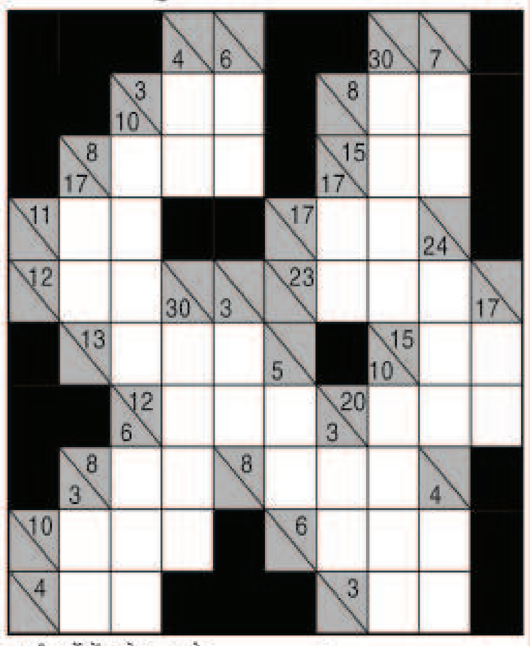

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

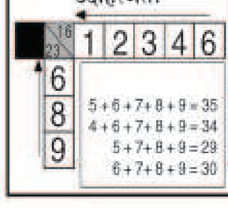

5+6+7+8+9=35
4+6+7+8+9=34
5+7+8+9=29
6+7+8+9=30

काकुरो -4068 का हल

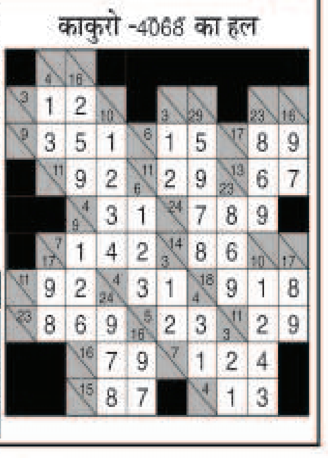

फिल्म वर्ग पहेली- 4069

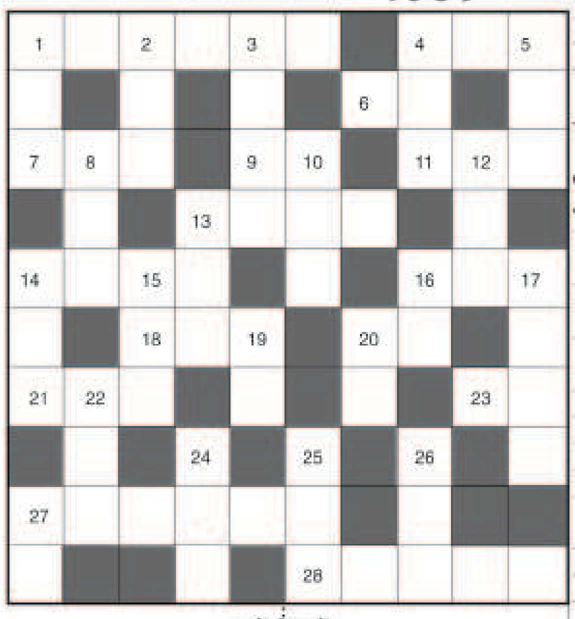

बायें से दायें:-

१. अभिषेक, सुनील, ऐश, शबाना की 'बहका दिया' गीत वाली फिल्म-४,२
४. 'दोस्ती हो गई रे' गीत वाली सुनील शेट्टी, सुष्मिता, नम्रता की फिल्म-३
६. 'छोड़ो मुझे' गीत वाली फिल्म 'जानू' में जैकी के साथ नायिका कौन थी-२
७. 'दिल खुश है आज उनसे' गीत वाली सुनीलदत्त, मीना कुमारी की फिल्म-३
९. फिल्म 'प्यार का साया' में राहुलराय के साथ नायिका कौन थी-२
११. एम. एफ. हुसैन की फिल्म 'गजगामिनी' में मुंशी प्रेमचंद की 'निर्मला' की भूमिका किसने की है-३
१३. राजेंद्रकुमार, बबीता की 'रिमझिम के गीत सावन गाए' गीतवाली फिल्म-४
१४. 'रामजी की निकली सवारी' गीतवाली ऋषिकपूर, जयाप्रदा की फिल्म-४
१६. कमल हासन, श्रीदेवी की 'ऐ जिंदगी गले लगा ले' गीत वाली फिल्म-३
१८. 'चोरी चोरी तेरे संग' गीत वाली मिथुन, आयशा जुल्का की फिल्म-३
२०. लकी अली, गौरी कार्णिक की 'कभी शाम ढले तू मेरे' गीत वाली फिल्म-२
२१. 'हमीं से मोहब्बत हमीं से' गीत वाली दिलीपकुमार, वैजयंती की फिल्म-३
२३. अनिलकपूर, माधुरी की 'एक बात मान लो तुम' गीत वाली फिल्म-२
२७. 'फूल सा चेहरा चाँद सी' गीत वाली प्रदीपकुमार, नर्गिस की फिल्म-२,२,२
२८. देव आनंद, गिरीश, टीना मुनीम की 'आवाज सुरीली का' गीत वाली फिल्म-५

ऊपर से नीचे:-

१. सतीश, सुभाष घई, अर्चना की फिल्म-३
२. 'चलती है पुरवाई' गीत वाली फिल्म-३
३. 'तेरी चाहत में दीवाना हूँ' गीत वाली फरदीन खान, सेलिना की फिल्म-४
४. संजयदत्त, अतुल, रवीना, करिश्मा की 'काश तुम मुझसे एक' गीत वाली फिल्म-३
५. राजेश खन्ना, ऋषिकपूर, पूनम की फिल्म-३
८. 'तुम भी चलो हम' गीत वाली फिल्म-३
१०. फारूख शेख, नसीरुद्दीनशाह, स्मिता पाटिल की फिल्म-३
१२. अक्षयकुमार, रवीना टण्डन की 'एक लड़की एक लड़का' गीत वाली फिल्म-३
१३. फिल्म 'पुष्पक' में कमल हासन के साथ नायिका कौन थी-३
१४. प्रदीपकुमार, कल्पना की फिल्म-३
१५. 'उड़ जा काले कावां' गीतवाली फिल्म-३
१६. नसीर, अतुल अग्निहोत्री की फिल्म-२
१७. शशि कपूर, शर्मिला टैगोर की फिल्म-२,२
१९. अनिलकपूर, जैकी, अजय, मनीषा, माधुरी, सोनाली, रेखा की फिल्म-२
२०. 'मेरा सेहरा तू है' गीत वाली फिल्म-२
२२. सनी देओल, मीनाक्षी की फिल्म-३
२४. 'चढ़ती जवानी मेरी चाल' गीत वाली फिल्म-३
२५. फिल्म 'अजूबा' में 'शहजादी हिना' की भूमिका किसने की थी-३
२६. 'तू लाली है सवेरे वाली' गीत वाली फिल्म-३
२७. फिल्म 'शर्मीली' में शशिकपूर के साथ नायिका कौन थी-२

फिल्म वर्ग पहेली-4068

सूडोकु -4069

6	3	7		1	5	4		9
	8						2	
		1		4	8			6
	6			9	7	1		
7	2						5	3
		5	6	3			9	
5			8	2		3		
	4						7	
1		3	7	5		2	6	8

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -4068 हल

5	9	4	1	7	2	6	3	8
6	8	1	4	3	5	2	7	9
2	3	7	8	9	6	1	4	5
9	2	3	7	5	1	4	8	6
4	7	6	9	2	8	5	1	3
1	5	8	3	6	4	9	2	7
8	6	2	5	4	3	7	9	1
7	1	5	2	8	9	3	6	4
3	4	9	6	1	7	8	5	2

शब्द पहेली - 4069

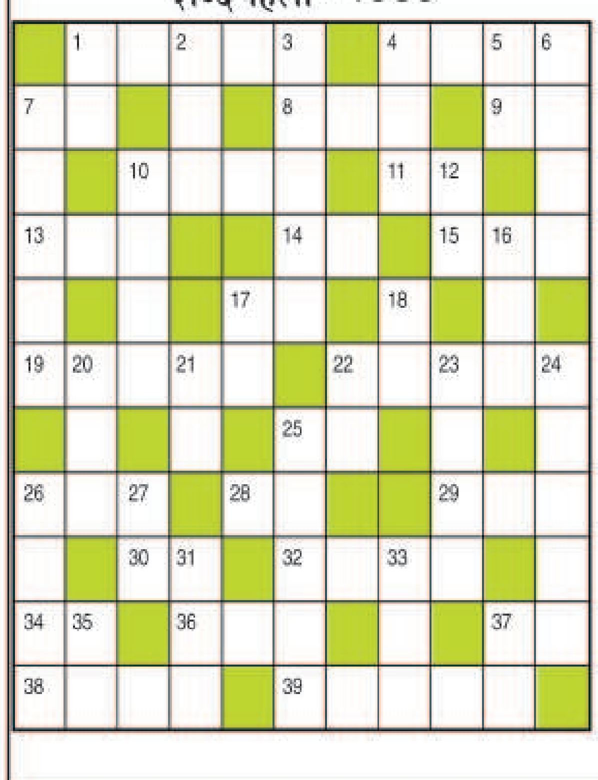

बाएँ से दाएँ

1.राजा का पुत्र-5
4.मन को हरने वाला-4
7.काल,समय,पीरियड-2
8.खोदना-3
9.मोटा आटा-2
10.पशु,मवेशी-4
11.जलापूर्ति का साधन-2
13.पुत्र,बेटा-3
14.क्षार,खारा-2
15.दर,मूल्य-3
17.नौका-2
19.नारायण-नारायण रटनेवाले देवर्षि-5
22.लालन-पालन-5
25.अच्छा,भला-2
26.पूर्ण करना-3
28.गोष्ठी,सम्मेलन-2
29.हुनरमंद-3
30.पिता का भाई -2
32.कुरुपता-4
34.इसाई साध्वी -2
36.टेंशन,परेशानी-3
37.खुजली -2
38.अशक्त,निर्बल-4
39.नगर में रहनेवाला-5

ऊपर से नीचे

1.झगड़ा, बैर,द्वेष-2
2.सद्पुरुष,अच्छे कुल का-3
3.सार-संभाल-2,3
4.विचार करना-3
5.प्रत्येक-2
6.परंपरा,धर्मविधी-4
7.आवास, गरीबखाना-5
10.संपत्ति-4
12.भाग्यशाली (अंग्रेजी-2)
16.भालू-बंदर नचाने वाला-3
17.मां की मां-2
18.भय,खौफ-2
20.वेग,गति-3
21.मुंह,चेहरा-2
22.पैर,ओहदा-2
23.वर्धनशील,बढ़नेवाला-4
24.शकरगंजी,कंद-5
25.सभागार,सभाकक्ष-5
26.भयंकर,खतरनाक-4
27.मोड़-2
31.कायर,डरपोक-3
33.तीन घंटे का समय,प्रहर-3
35.भीगा हुआ-2
37.नौकरानी-2

शब्द पहेली -4068 का हल

क्या बॉलीवुड सचमुच बदल रहा है? रणवीर सिंह, धुरंधर २ और 'सिस्टम' की बहस

रणवीर सिंह की फिल्म धुरंधर २ रिलीज होने के बाद सोशल मीडिया पर एक नई वैचारिक बहस छिड.गई है। फिल्म के कंटेंट, उसमें दिखाई गई राष्ट्रवादी सोच और रणवीर सिंह की निजी सार्वजनिक गतिविधियों को जोडक़र कई लोग यह दावा कर रहे हैं कि बॉलीवुड का एक प्रभावशाली वर्ग उनसे नाराज.है। इस पूरे विवाद ने एक बार फिर यह सवाल खडा कर दिया है कि क्या हिंदी फिल्म उद्योग वास्तव में वैचारिक संघर्ष के दौर से गुजर रहा है।धुरंधर २ को लेकर चर्चा केवल एक फिल्म तक सीमित नहीं रही। सोशल मीडिया पर यह धारणा तेजी से फैली कि फिल्म में अंडरवर्ल्ड, राष्ट्रवाद और भारत समर्थक भावनाओं को जिस तरह प्रस्तुत किया गया, उसने बॉलीवुड के पुराने शक्ति-संतुलन को चुनौती दी है। कुछ लोगों का मानना है कि फिल्म में देशभक्ति के नारों और भारतीय सांस्कृतिक प्रतीकों को प्रमुखता से दिखाना एक बडे.वैचारिक बदलाव का संकेत है। इसी दौरान रणवीर सिंह की कुछ गतिविधियाँ भी चर्चा के केंद्र में आ गई। नागपुर स्थित ठढड मुख्यालय की उनकी यात्रा, डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार को श्रद्धांजलि, काशी में पूजा-अर्चना, त्रिपुंड और रुद्राक्ष धारण कर सार्वजनिक रूप से दिखाई देना इन सभी घटनाओं को सोशल मीडिया पर एक वैचारिक संदेश के रूप में देखा गया। समर्थकों का कहना है कि रणवीर सिंह केवल अपनी सांस्कृतिक पहचान व्यक्त कर रहे हैं, जबकि विरोधियों का आरोप है कि यह एक सुनियोजित छवि निर्माण का हिस्सा है।इसी बीच डॉन ३ से जुडे.विवाद ने भी आग में घी डालने का काम किया। खबरें सामने आई कि फिल्म छोडऩे को लेकर मामला FWICE (Federation of Western India Cine Employees) तक पहुँच गया। सोशल मीडिया पर यह तक कहा गया कि रणवीर सिंह को इंडस्ट्री में ङ्कबॉयकॉटङ्ख करने की कोशिश की जा रही है। हालांकि इन दावों पर कोई स्पष्ट आधिकारिक पुष्टि सामने नहीं आई है, लेकिन इस विवाद ने बॉलीवुड की आंतरिक राजनीति पर बहस को और तेज कर दिया।दरअसल, पिछले कुछ वर्षों में हिंदी सिनेमा में दर्शकों की पसंद तेजी से बदली है। अब दर्शक ऐसी फिल्मों को भी बडे.स्तर पर स्वीकार कर रहे हैं जिनमें भारतीय संस्कृति, सनातन परंपरा, सेना, इतिहास और राष्ट्रवाद को केंद्र में रखा जाता है। यही कारण है कि बॉलीवुड के पारंपरिक ढांचे और नए उभरते नैरेटिव के बीच टकराव की चर्चा लगातार बढ.रही है।एक वर्ग का मानना है कि हिंदी फिल्म उद्योग लंबे समय तक एक सीमित वैचारिक दायरे में संचालित होता रहा, जहाँ भारतीय परंपराओं और धार्मिक प्रतीकों को अक्सर सतही या रूढ.छवि में प्रस्तुत किया जाता था। अब जब कुछ कलाकार खुलकर अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान दिखा रहे हैं, तो इंडस्ट्री के भीतर असहजता दिखाई दे रही है।हालांकि दूसरी ओर यह भी जरूरी है कि किसी भी विवाद को केवल सोशल मीडिया नैरेटिव के आधार पर अंतिम सत्य न मान लिया जाए। फिल्म उद्योग में व्यावसायिक मतभेद, अनुबंध विवाद और प्रचार रणनीतियाँ भी अक्सर विवादों को जन्म देती हैं। इसलिए हर घटना को केवल वैचारिक संघर्ष के चश्मे से देखना भी उचित नहीं होगा।फिर भी इतना स्पष्ट है कि बॉलीवुड अब एक परिवर्तनशील दौर में है। दर्शकों की सोच बदल रही है, विषय बदल रहे हैं और सितारों की सार्वजनिक छवि भी पहले जैसी नहीं रही। यही वजह है कि आज किसी अभिनेता की धार्मिक, सांस्कृतिक या राजनीतिक पहचान भी चर्चा का बडा विषय बन जाती है।सरकारें बदल सकती हैं, सत्ता बदल सकती है, लेकिन किसी भी उद्योग का वास्तविक परिवर्तन उसकी मानसिकता और सांस्कृतिक दिशा में बदलाव से आता है। बॉलीवुड आज शायद उसी मोड.पर खडा दिखाई देता है, जहाँ पुरानी सोच और नए भारत की अपेक्षाओं के बीच संघर्ष खुलकर सामने आने लगा है।

नेशनल इम्यूनाइजेशन डे २०२६ के लिए जोरहाट में पहली डिस्ट्रिक्ट टास्क फोर्स मीटिंग हुई

जोरहाट:(अर्णव शर्मा) ३० मई: आने वाले नेशनल इम्यूनाइजेशन डे (NID) २०२६ की तैयारियों ने जोर पकड.लिया है। यह मीटिंग डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर ऑफिस के कॉन्फ्रेंस हॉल में पहली डिस्ट्रिक्ट टास्क फोर्स मीटिंग के सफल आयोजन के साथ हुई। मीटिंग की अध्यक्षता एडिशनल डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर और मरियानी को-डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर अभिजीत गोगोई ने की। उन्होंने हेल्थ डिपार्टमेंट और सभी संबंधित डिपार्टमेंट से मिलकर काम करने को कहा ताकि २८ जून, २०२६ को होने वाले देश भर में पल्स पोलियो कैंपेन को सफलतापूर्वक लागू किया जा सके।

मीटिंग के दौरान, एडिशनल चीफ.मेडिकल और हेल्थ ऑफिसर (फैमिली वेलफेयर) डॉ. दीपांकर हजारिका ने कैंपेन के लिए डिस्ट्रिक्ट हेल्थ एडमिनिस्ट्रेशन द्वारा की गई तैयारियों का डिटेल में ओवरव्यू दिया। उन्होंने बताया कि इस स्पेशल इम्यूनाइजेशन ड्राइव का मकसद जोरहाट जलि में जन्म से लेकर पाँच साल तक के हर बच्चे को ओरल पोलियो वैक्सीन देना है।यह पहल भारत सरकार की लगातार कोशिशों का हिस्सा है, ताकि देश को पोलियो-फ्री बनाए रखा जा सके और यह पक्का किया जा सके कि कोई भी योग्य बच्चा इम्यूनाइजेशन कवरेज से छूट न जाए। २८ जून से ३० जून तक चलने वाले इस कैंपेन के तहत, हेल्थ वर्कर घरों में जाएंगे और आंगनवाडी सेंटर, स्कूल और दूसरी पब्लिक जगहों पर पोलियो ड्रॉप्स भी पिलाएंगे।जिले के हेल्थ अधिकारियों ने माता-पिता और गार्जियन से अपील की कि वे गलतफहमियों या अंधविश्वासों में न पडें.और यह पक्का करें कि कैंपेन के दौरान उनके बच्चों को जान बचाने वाली पोलियो वैक्सीन मिले।मीटिंग में इंटर-डिपार्टमेंटल कोऑपरेशन के महत्व पर भी जोर दिया गया, जिसमें एजुकेशन, लेबर, ट्रांसपोर्ट और सोशल वेलफेयर जैसे डिपार्टमेंट से प्रोग्राम को सफलतापूर्वक चलाने के लिए पूरा सपोर्ट देने की अपील की गई। इन डिपार्टमेंट की मदद से जिले के सभी हेल्थ ब्लॉक में पोलियो इम्यूनाइजेशन एक्टिविटीज.की जाएंगी।मीटिंग में जोरहाट जलि परिषद के प्रेसिडेंट सुरजीत सैकिया, हेल्थ सर्विसेज.के जॉइंट डायरेक्टर डॉ. दिलीप देव शर्मा, एडिशनल चीफ.मेडिकल एंड हेल्थ ऑफिसर (पब्लिक हेल्थ) डॉ. भक्तिमय भट्टाचार्य, जोरहाट मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के पीडियाट्रिक्स डिपार्टमेंट के हेड डॉ. मनब नारायण बरुआ, सभी ब्लॉक प्राइमरी हेल्थ सेंटर के सब-डिवीजनल मेडिकल एंड हेल्थ ऑफिसर, अर्बन प्राइमरी हेल्थ सेंटर के मेडिकल ऑफिसर, अलग-अलग सरकारी डिपार्टमेंट के अधिकारी, नेशनल हेल्थ मिशन के डिस्ट्रिक्ट प्रोग्राम मैनेजर, डिस्ट्रिक्ट मीडिया एक्सपर्ट और ब्लॉक प्रोग्राम मैनेजर मौजूद थे।जलि एडमिनिस्ट्रेशन ने भरोसा जताया कि मिलकर की गई कोशिशों और लोगों की एक्टिव हिस्सेदारी से, नेशनल इम्यूनाइजेशन डे कैंपेन में सभी एलिजिबल बच्चों को पूरी तरह से कवर किया जाएगा और बच्चों की हेल्थ और बीमारियों की रोकथाम के लिए जलि का कमिटमेंट और मजबूत होगा।

विश्व हिन्दू परिषद धर्म प्रसार विभाग के दो दिवसीय अभ्यास वर्ग का शुभारंभ

प्रे.सं. शिलचर, ३० मई। विश्व हिन्दू परिषद (धर्म प्रसार विभाग) द्वारा आयोजित दो दिवसीय प्रांतीय अभ्यास वर्ग का शुभारंभ शनिवार को भारत सेवाश्रम संघ परिसर में श्रद्धा एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ। यह प्रशिक्षण वर्ग ३० एवं ३१ मई २०२६ तक आयोजित किया जा रहा है।
कार्यक्रम का उद्घाटन भारत सेवाश्रम संघ के पूजनीय संत स्वामी अचलानंद जी के करकमलों द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. दिनेश तिवारी उपस्थित रहे। उन्होंने धर्म प्रसार कार्य की वर्तमान चुनौतियों, संगठन की भूमिका तथा समाज के विभिन्न वर्गों तक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक जागरण के संदेश को पहुंचाने की आवश्यकता पर विस्तार से प्रकाश डाला।वर्ग के प्रांत सभापति सचिन कलई सहित त्रिपुरा राज्य के अनेक संत-महात्माओं एवं वरिष्ठ पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष महत्व प्रदान किया। आयोजकों के अनुसार यह अभ्यास वर्ग चयनित जिलों एवं प्रखंडों के प्रमुख कार्यकर्ताओं के लिए विशेष रूप से आयोजित किया गया है। वर्ग में भाग लेने वाले कार्यकर्ताओं को धर्म प्रसार, संगठन विस्तार, सेवा कार्य, सामाजिक समरसता तथा हिंदू समाज के जागरण से संबंधित विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।दो दिवसीय इस प्रशिक्षण वर्ग का उद्देश्य कार्यकर्ताओं के वैचारिक, संगठनात्मक एवं कार्यकुशलता संबंधी विकास के माध्यम से समाज जीवन में सकारात्मक एवं रचनात्मक भूमिका को सुदृढ.करना है। उद्घाटन सत्र में बडी संख्या में कार्यकर्ताओं, संतों एवं गणमान्य नागरिकों ने सहभागिता की।

डिब्रूगढ.जिले में पीरियड्स की साफ.-सफाई पर जागरूकता प्रोग्राम चलाया गया

डिब्रूगढ: (अर्णव शर्मा) ३० मई: बेटी बचाओ बेटी पढाओ (BBBP) स्कीम के तहत पीरियड्स की साफ.-सफाई मैनेजमेंट डे २०२६ मनाने के हिस्से के तौर पर, २९ और ३० मई को डिब्रूगढ.जलि में किशोरियों और महिलाओं में पीरियड्स की हेल्थ और साफ.-सफाई को बढावा देने के लिए जागरूकता प्रोग्राम की एक सीरीज.चलाई गई।यह पहल डिब्रूगढ.के महिला और बाल विकास विभाग के तहत डिस्ट्रिक्ट हब फॉर एम्पावरमेंट ऑफ.विमेन (DHEW) ने हेल्थ डिपार्टमेंट, एजुकेशन डिपार्टमेंट, पंचायत और रूरल डेवलपमेंट डिपार्टमेंट (असम स्टेट रूरल लाइवलीहुड मिशन) और डिब्रूगढ.जलि एडमिनिस्ट्रेशन के साथ मिलकर की थी। ग्लोबल थीम, ङ्कएक साथ पीरियड्स के लिए अनुकूल दुनियाङ्ख को मनाने के लिए, जलि भर के अलग-अलग स्कूलों में सुबह की असेंबली प्रोग्राम के दौरान जागरूकता सेशन रखे गए। इसका मकसद किशोरियों को पीरियड्स की साफ.-सफाई के बारे में बताना, पीरियड्स से जुडी गलतफहमियों और मिथकों को दूर करना और हेल्दी पीरियड्स की आदतों को बढावा देना था।इसके साथ ही, गांव की महिलाओं में पीरियड्स से जुडी हेल्थ के बारे में ज़्यादा समझ बढाने के लिए कई गांव पंचायतों में महिला जागरूकता मीटिंग की गई। हेल्थ डिपार्टमेंट के रिसोर्स पर्सन ने पीरियड्स, पीरियड्स से जुडी गलतफहमियां और गलतफहमियां, पर्सनल हाइजीन, न्यूट्रिशन की जरूरतें और पीरियड्स के दौरान रेगुलर फिजिकल एक्सरसाइज की अहमियत जैसे टॉपिक पर जानकारी देने वाले सेशन दिए।ऑफिशियल सोर्स के मुताबिक, १४ स्कूलों की लगभग १,४५७ टीनएज लडकियों और ६७ टीचरों ने जागरूकता प्रोग्राम में हिस्सा लिया। इसके अलावा, पांच ग्राम पंचायतों की लगभग ३८७ महिलाओं ने कम्युनिटी लेवल की मीटिंग में हिस्सा लिया। इस प्रोग्राम का मकसद पीरियड्स से गुजर रही लडकियों और महिलाओं के लिए एक जानकारी भरा और सपोर्टिव माहौल बनाना था, साथ ही जिले में हेल्थ, सम्मान और जेंडर एम्पावरमेंट के बडे.लक्ष्यों को आगे बढाना था।

५५ नाबालिग लड़कियां हो गई गर्भवती, जांच अधिकारियों के भी छूटे पसीने, सामने आया काला सच

महाराष्ट्र (एजें) ३० मई : महाराष्ट्र के अहिल्यानगर जिले से शर्मनाक खबर सामने आई है. एक सर्वेक्षण में पाया गया कि एक तालुका में ५५ नाबालिग लडकियां गर्भवती हैं. इनमें से कुछ लडकियों ने तो बच्चों को जन्म भी दे दिया था. यह सनसनीखेज आंकडा आंगनवाडी सेविकाओं के सर्वे और केंद्र सरकार की 'मातृत्व वंदना योजना' के आवेदनों से सामने आया है, जिसके बाद पूरे राज्य में हडक़ंप मच गया है. आज के आधुनिक दौर में जहां हम लगातार महिला सशक्तिकरण की बात करते हैं, वहीं महाराष्ट्र के अहिल्यानगर (पूर्व में अहमदनगर) जिले से एक ऐसी खबर आई है जो पूरे सिस्टम पर एक करारा तमाचा है. जिले के अकोले तालुका में बाल अधिकारों की सरेआम धज्जियां उडती दिखी हैं. यहां के महिला एवं बाल विकास विभाग के सर्वे ने एक ऐसा खौफनाक सच उगला है, जिससे स्थानीय प्रशासन की रातों की नींद उड.गई है. ताजा जानकारी के अनुसार, अकोले तालुका में कुल ५५ नाबालिग विवाहित लडकियां और एक अविवाहित नाबालिग लडक़ी गर्भवती पाई गई है. यह कोई अफवाह नहीं बल्कि सरकारी सर्वेक्षण का डराने वाला जमीनी आंकडा है. सबसे ज्यादा चौंकाने वाली बात यह है कि इनमें से कुछ नाबालिग लडकियों की तो डिलीवरी भी हो चुकी है. इस बडे.खुलासे के बाद पूरे जिले और राज्य स्तर पर भारी खलबली मच गई है.कैसे हुआ इस खौफनाक सच का खुलासा?
अकोले और राजूर प्रोजेक्ट के तहत काम करने वाली आंगनवाडी सेविकाओं द्वारा हर महीने गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं का नियमित सर्वे किया जाता है. इसी घर-घर जाकर किए गए सर्वे के दौरान यह भयानक हकीकत सामने आई. अधिकारियों के होश तब और फाख्ता हो गए जब केंद्र सरकार की 'मातृत्व वंदना योजना' का आर्थिक लाभ लेने के लिए आए आवेदनों में भी इन गर्भवती नाबालिग लडकियों के नाम दर्ज पाए गए. इसी से प्रशासन की आंखें खुलीं.स्थानीय सामाजिक स्थिति के जानकारों के अनुसार, भारी सामाजिक दबाव, बदनामी के डर और पुलिस कार्रवाई के खौफ से कई बाल विवाहों की कहीं कोई रिपोर्ट दर्ज ही नहीं होती है. कई माता-पिता महज इस निराधार डर से अपनी बेटियों की कम उम्र में शादी कर रहे हैं कि कहीं वे आगे चलकर भाग कर शादी न कर लें. जो ५५ गर्भवती युवतियों का आंकडा सामने आया है, वह तो सिर्फ कागजों पर है; असल में गर्भवतियों की संख्या इससे कहीं अधिक होने की संभावना है.अकोले बाल संरक्षण समिति के गैर-सरकारी सदस्य श्रीनिवास रेणुकादास ने महाराष्ट्र राज्य बाल अधिकार आयोग से इस मामले की तत्काल उच्च स्तरीय जांच की मांग की है. उन्होंने प्रशासन से कडी मांग की है कि ग्राम स्तरीय बाल संरक्षण समितियों को तुरंत सक्रिय किया जाए, शादियों में दूल्हा-दुल्हन का जन्म प्रमाण पत्र अनिवार्य किया जाए और नाबालिग लडकियों से शादी करने वालों पर सीधे आपराधिक मामले (ऋखठ) दर्ज किए जाएं.
इस अवसर पर उधारबंद क्रीडा संस्था के पूर्व अध्यक्ष सुधांशु शेखर दास, राष्ट्रीय स्तर के रेफरी अब्दुल माजिद सहित अनेक खेलप्रेमी एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

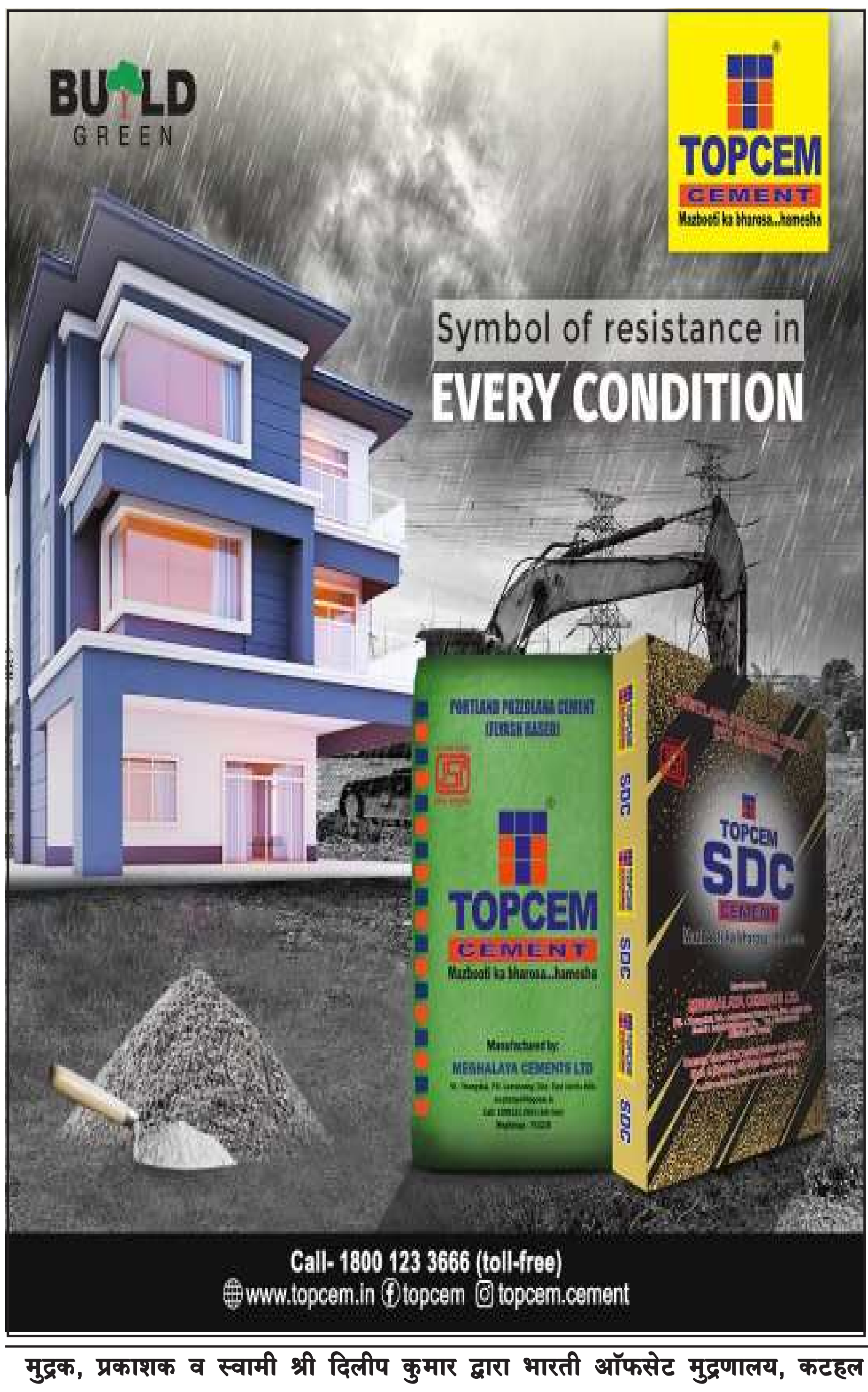

शिलचर वन बंधु परिषद महिला समिति की एकल वन यात्रा सफलतापूर्वक संपन्न

प्रे.सं. शिलचर, ३० मई: शिलचर वन बंधु परिषद महिला समिति द्वारा २८ मई २०२६ को संच धोलाई के अठारहटिला ग्राम स्थित एकल विद्यालय में एकल वन यात्रा का आयोजन किया गया। इस यात्रा में समिति की सात सदस्याओं सहित दो अतिथियों ने भाग लिया।यात्रा के दौरान सर्वप्रथम सभी प्रतिभागियों ने आरोग्य अभ्यास वर्ग का अवलोकन किया। यहां उन्हें विभिन्न औषधीय पेड.-पौधों एवं पत्तियों के गुणों तथा उनके माध्यम से सामान्य बीमारियों के उपचार की जानकारी दी गई। सदस्यों ने बताया कि अनेक औषधीय पौधे हमारे घरों और आसपास उपलब्ध हैं, किंतु उनके औषधीय महत्व की जानकारी बहुत कम लोगों को होती है। आरोग्य वर्ग में यह भी बताया गया कि छोटी-मोटी बीमारियों का घरेलू स्तर पर किस प्रकार उपचार किया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में सेविकाओं द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता और उपचार संबंधी जानकारी पहुंचाने का कार्य अत्यंत सराहनीय है। ग्रामवासियों का सेविकाओं को पूर्ण सहयोग मिलना भी सभी के लिए प्रेरणादायक रहा।इसके पश्चात समिति की सदस्याएं एकल विद्यालय पहुंचीं, जहां बच्चों ने अपने हाथों से बनाए गए पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया। विद्यालय में वर्तमान में २० छात्र-छात्राएं शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। समिति के सदस्यों ने विद्यालय के उपस्थिति रजिस्टर का निरीक्षण कर बच्चों के नामों का सत्यापन किया, जो सही पाया गया।बच्चों के शैक्षणिक स्तर का आकलन करने के लिए उनसे बंगला वर्णमाला लिखवाई गई। अधिकांश बच्चों ने संतोषजनक एवं उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। बेहतर प्रदर्शन करने वाले प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया गया।इस अवसर पर महिला समिति की अध्यक्ष श्रीमती नीरू शर्मा ने अपने जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सभी विद्यार्थियों, ग्राम प्रमुख तथा आचार्यों के बीच रस्क-बिस्कुट एवं छतरियों का वितरण किया।समिति की ओर से बताया गया कि ग्रामीण शिक्षा, स्वास्थ्य जागरूकता और सामाजिक सहभागिता को सुदृढ.बनाने के उद्देश्य से आयोजित यह एकल वन यात्रा सभी के सहयोग से सफलतापूर्वक संपन्न हुई। कार्यक्रम ने शिक्षा एवं सेवा के क्षेत्र में एकल अभियान के सकारात्मक प्रयासों को निकट से समझने का अवसर प्रदान किया।

गवर्नमेंट आदर्श कॉलेज बडख़ोला में सप्ताहव्यापी 'कंजर्वेशन' कार्यक्रम का शुभारंभ

सनी रॉय, शिलचर:२९ मई :: गवर्नमेंट आदर्श कॉलेज, बडख़ोला के समाजशास्त्र विभाग की पहल तथा कॉलेज के इंटरनल क्वालिटी एक्सीलेंस सेल के सहयोग से हर वर्ष आयोजित होने वाला सप्ताहव्यापी कार्यक्रम ङ्ककंजर्वेशनङ्ख इस वर्ष भी उत्साहपूर्ण वातावरण में शुरू हो गया। कार्यक्रम का उद्देश्य नई पीढी को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना और समाज में पर्यावरणीय जिम्मेदारी का संदेश फैलाना है।उद्घाटन समारोह में समाजशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. जॉयदीप गोस्वामी ने कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए इसके विभिन्न चरणों की जानकारी दी। मुख्य अतिथि कॉलेज के प्राचार्य सहाबुद्दीन अहमद ने पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता, वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता तथा समाज की भूमिका पर सारगर्भित वक्तव्य रखा।कार्यक्रम का नामकरण समाजशास्त्र विभाग की प्राध्यापिका प्रोफेसर चंदा मेधी द्वारा किया गया। समारोह में इक्वल राइट्स सेल की समन्वयक डॉ. मौसना नाथ, शिक्षा विभाग की प्राध्यापिका डॉ. रूपश्री पाल तथा दीक्षा डे ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन समाजशास्त्र विभाग की प्राध्यापिका डॉ. आयशा अफसाना ने किया।एक सप्ताह तक चलने वाले इस अभियान के अंतर्गत चंद्रनाथपुर स्कूल तथा जरैलतला हायर सेकेंडरी स्कूल में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इसके अलावा जरैलतला बाजार और बाबुरबाजार क्षेत्रों में नुक्कड.नाटक के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया जाएगा। कार्यक्रम के दौरान पौधों का वितरण और विभिन्न विद्यालयों में वृक्षारोपण भी किया जाएगा। यह अभियान आगामी ५ जून को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संपन्न होगा।समाजशास्त्र विभाग ने इस पर्यावरण जागरूकता अभियान को सफल बनाने के लिए सभी लोगों से सहयोग की अपील की है।

मुद्रक, प्रकाशक व स्वामी श्री दिलीप कुमार द्वारा भारती ऑफसेट मुद्रणालय, कटहल रोड, शिलचर-05 (असम) से मुद्रित व प्रकाशित, सम्पादक-श्रीमती सीमा कुमार, Ph & Fax (03842) 242633, (M) 9435213512